।।ॐ नमः श्रीचण्डिकायै।।

अथ श्रीदुर्गासप्तशतीहोमविधिः



संकलनकर्ता

श्री स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

क्र.सं.	प्रकाशित पुस्तकों की सूची	मूल्य
1.	शिवपूजापद्धतिप्रकाशः	मुफ्त
2.	योगपंचदशी	100
3.	सर्वदर्शनसारः	175
4.	श्रीचक्रपूजापद्धतिप्रकाशः	250
5.	वास्तुपूजापद्धतिप्रकाशः	120
6.	शक्तिमहिम्नःस्तोत्रम्	120
7.	श्रीदुर्गापूजापद्धतिप्रकाशः	250
8.	श्रीदुर्गासप्तशतीहोमविधिः	250

क्र.सं.	प्रकाशित पुस्तकों की सूची	मूल्य
9.	उणादिकोशः	30
10.	शक्तिमहिम्नःस्तोत्रम् (मूलमात्रम्)	मुफ्त
11.	शिव-शक्तिमहिम्नःस्तोत्रम् (मूलमात्रम्)	मुफ्त
12.	Holistic Yoga	220
13.	An Advatik View of Kantian Thoughts	560
14.	Wisdom of Yoga	Free

।।ॐ नमः श्रीचण्डिकायै।।

अथ श्रीदुर्गासप्तशतीहोमविधिः

संकलनकर्ता

श्री स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

सत्यं साधना कुटीर,

कैलासगेट, पो० कैलास गेट, मुनि की रेती, तहः ऋषीकेश,

जिला: टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड. 249137

चलदूरभाष् : 9557130251, ई पत्र : swdsr@gmail.com, बेवासाइड : www.satyamsadhana.org

।।ॐ नमः श्रीचण्डिकायै।।

अथ श्रीदुर्गासप्तशतीहोमविधिः

संकलनकर्ता

श्री स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

सत्यं साधना कुटीर,

कैलासगेट, पो० कैलास गेट, मुनि की रेती, तहः ऋषीकेश,

जिलाः टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड. 249137

चलदूरभाष् : 9557130251, ई पत्र : swdsr@gmail.com, बेवासाइड : www.satyamsadhana.org

ग्रन्थनाम:-अथ श्रीदुर्गासप्तशतीहोमविधि:।

प्रथम संस्करण : शनिवार, 1 अक्टूबर 2016, आश्विन् शुक्ल प्रतिपदा संवत् 2073.

प्रतियां : 500 (पांचसौ)

प्रधान सम्पादक : स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती, पं. ज्योतिप्रसाद उनियाल।

अक्षर संयोजन : स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती.

पुस्तक प्राप्ति स्थान - सत्यं साधना कुटीर,
कैलासगेट, पो0 कैलास गेट, मुनि की रेती, तह: ऋषीकेश,
जिला: टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड. 249137
चलदूरभाष : 9557130251, ई पत्र : swdsr@gmail.com
www.satyamsadhana.org

सहयोग राशि : 250/- रुपये

मुद्रक : सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, ऋषिकेश.

प्रस्तावना

श्रीमद्भगवद्गीता के तीसरे अध्याय के दसवें श्लोक में भगवान् ने कहा है –

'सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः। अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्।।'

अर्थात् परमपिता परमात्मा प्रजापति ब्रह्मा ने सृष्टि के आदिकाल में प्रजाओं को यज्ञों के साथ उत्पन्न कर कहा था कि यज्ञ के द्वारा ही सृष्टि का विस्तार करो क्योंकि यज्ञ ही आप सब की सकल कामनाओं को देनेवाला है। अतः शरीर की उत्पत्ति केलिये स्त्री पुरुष सम्बन्ध, इसका संपूर्ण जीवनकाल, अन्त्येष्टि कर्म आदि को उपनिषदों में अग्निहोत्र कर्म कहा गया है। हमारा श्वास जो चल रहा है, एतदर्थ जो हम भोजन करते हैं, थकान दूर करने अथवा विश्रान्ति हेतु जो हम सोते हैं इत्यादि सकल क्रिया–कलाप यज्ञ ही है। अतः किसी भी अनुष्ठान को यज्ञ द्वारा ही पूर्णता प्रदान किया जाता है। नवरात्र भी एक अनुष्ठान है, इसलिये इसकी भी पूर्णता केलिये अन्त में यज्ञ यानि याग और होम किया जाता है। मीमांसा दर्शन में कहा गया है कि –

'देवतोद्देशेन द्रव्यस्य त्यागो यागः, त्यक्तद्रव्यस्य अग्नौ प्रक्षेपो होमः।'

अर्थात् देवता को उद्देश्य कर अथवा लक्षित कर द्रव्य के त्यागने को याग कहते हैं और उस त्यक्त द्रव्य को उसी देवता केलिये अग्नि में प्रक्षेप करने को होम कहते हैं। अतः होम पर्यन्त कर्म का विधि को इस ग्रन्थ में दर्शाया गया है।

मानवमात्र के इहलोक व परलोक में सुखप्राप्ति और जीवन के मुख्य लक्ष्य मोक्षप्राप्ति हेतु ऋषिमुनियों ने निष्काम कर्मयोग, निष्काम भक्तियोग और ज्ञानयोग को ही साधना के रूप में विधान किया है। उक्त त्रिविध साधना की निर्विघ्नता पूर्वक सफलता केलिये वैदिक सनातन धर्म में पंचमहाभूतों (पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) के अधिष्ठातृदेवचताओं को पंचदेव कहा है –

गणेश, विष्णु, सूर्य, शक्ति और शिव । प्रस्तुत ग्रन्थ शक्ति को प्रधान देवता, शेष चार को अधिदेवता और अन्यों को प्रत्यधिदेवता मानकर पूजा पाठ व उपासना करनेवाले शाक्त संप्रदाय के अनुसार है। पूर्व में मुद्रित शिवपूजापद्धतिप्रकाश:, पूर्णिका सहित श्रीयन्त्रपूजापद्धतिप्रकाश: और वास्तुपूजापद्धतिप्रकाश: को पढ़कर पाठकों, जिज्ञासुओं, कर्मकाण्डी ब्राह्मणों एवं उपासकों ने श्रीदुर्गापूजापद्धतिप्रकाश:, सप्तशतीपाठविधि: और श्रीदुर्गासप्तशतीहोमविधि: को भी प्रकाशित करने केलिये बार-बार निवेदन किया। लेकिन गीता प्रेस, गोरखपुर, उत्तरप्रदेश द्वारा मुद्रित 'श्रीदुर्गासप्तशती' में संकलित पाठविधि: निर्दोष व पर्याप्त है। इसलिये हमने 'सप्तशतीपाठविधि:' को मुद्रित न करने का निर्णय लिया है। शेष दोनों ग्रन्थों को यानि '**श्रीदुर्गापूजापद्धतिप्रकाश:**' और '**श्रीदुर्गासप्तशतीहोमविधि:**' को क्रमश: मुद्रित करने का निश्चय किया है। अत: पूर्वोक्त उन सब की प्रेरणा से सर्वप्रथम '**श्रीदुर्गापूजापद्धतिप्रकाश:**' का संकलन कर मुद्रित किया गया है। साथ ही साथ '**श्रीदुर्गासप्तशतीहोमविधि:**' का भी संकलन किया हैं, जिसमें पूर्ववत् दक्षिण व उत्तर भारत के अनेकों पण्डितों एवं विद्वानों ने सहयोग दिया है, विशेषत: पं. ज्योतिप्रसाद उनियालजी ने तो संशोधन कार्य में भी पूर्ण सहयोग दिया है जो कि अविस्मरणीय ही नहीं अपितु अत्यन्त प्रशंसनीय भी है। इस ग्रन्थ रचना की सफलता में अनेक प्रकार से सहयोग देनेवाले सभी सज्जनों का मैं हृदय से अत्यन्त आभार व्यक्त करता हूँ। पूर्ववत् इस ग्रन्थ से सभी को मार्गदर्शन मिले और सभी लाभान्वित हो ऐसी माँ भगवती से प्रार्थना करते हुये माँ के चरणों में इसे सादर समर्पित करता हूँ।

सभी की आत्मा

स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

विषयसूची

2.15 क्षेत्रपालहोमः, 2.16-1 सर्वतोभद्रमण्डलहोमः, 2.16-2 एकलिंगतोभद्रहोमः,
2.17-1 फलीकरणहोमः, 2.17-2 स्थापितदेवतानां पूजनम्,
2.18-1 सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञक (स्विष्टकृत्)होमः, 2.18-2 व्याहृतिहोमः, 2.18-3 प्रायश्चित्तसंज्ञकहोमः
2.19 बलिदानम्, 2.20 पूर्णाहुतिहोमः वसोर्धाराहोमः, पूर्णपात्रदानञ्च,
2.21 भस्मधारणं, संस्रवप्राशनं, प्रणीताविमोकः,
2.22 प्रदक्षिणा, गोदानं, 2.23 श्रेयःसम्पादनम्, अभिषेकः, 2.24 अवभृतस्नानम्, 2.25-ब्राह्मणभोजनम्।

3. स्तुतिप्रकरणम्

3.1 गणेशजी की आरती, 3.2 देवीजी की आरती, 3.3 अम्बेजी की आरती, 3.4 लक्ष्मीजी की आरती,
3.5 गंगाजी की आरती, 3.6 शिवजी की आरती, 3.7-1 देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम् -1,
3.7-2 देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम् -2, 3.8 शिवताण्डवस्तोत्रम्।

।।ॐ नमः श्रीचण्डिकायै।।

अथ श्रीदुर्गासप्तशती होमविधिः

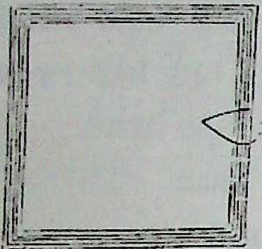
1. अथ अग्निस्थापनप्रकरणम् :-

1. अथ कुण्ड विचारः -

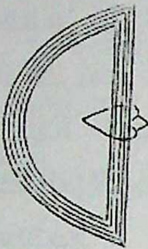
'योनिकुण्डे भगाकारे वर्तुले वा अर्द्धचन्द्रके। नवत्रिकोणकुण्डे वा चतुरस्रेष्टपत्रके।।
योनिकुण्डे भवेद्वाग्मी भगे चाकृष्टिरुत्तमा। वर्तुले तु भवेल्लक्ष्मीरर्धचन्द्रे त्रयम्भवेत्।।
नवत्रिकोणकुण्डे तु खेचरत्त्वम्प्रजायते। चतुरस्रे भवेच्छान्तिर्लक्ष्मीः पुष्टिररोगता।।
पद्माभे सर्वसंपत्तिरचिरादेव जायते। अष्टकोणे तु सुभगे समीहितफलम्भवेत्।।'

अर्थात् योनि, भग, गोल, अर्धचन्द्र, नौ त्रिकोण, चतुर्भुज (चतुरस्र), कमल अथवा अष्टकोण के आकार में कुण्ड बनाकर हवन करें। प्रत्येक का फल अलग-अलग है-योनि कुण्ड में हवन करने से वाक्सिद्धि फल कहा गया है तथा भगाकार कुण्ड-श्रेष्ठ आकर्षण, गोल कुण्ड-लक्ष्मी, अर्धचन्द्रकुण्ड-पूर्वोक्त तीनों यानि वाक्सिद्धि सहित श्रेष्ठ आकर्षण और लक्ष्मी, नौ त्रिकोण कुण्ड-आकाशगामित्व, चतुर्भुज (चतुरस्र) कुण्ड-शान्ति सहित पुष्टि व लक्ष्मी और नीरोगता, कमलाकार कुण्ड-शीघ्र सर्व सम्पत्ति प्राप्ति और अष्टकोण कुण्ड में वांछित सम्यक्फल प्राप्त होता है।

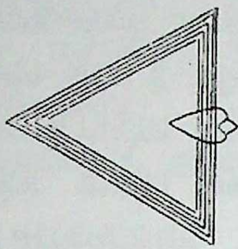
1. चतुष्कोणास्रकुण्डम्



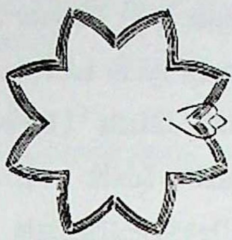
2. अर्धचन्द्रकुण्डम्



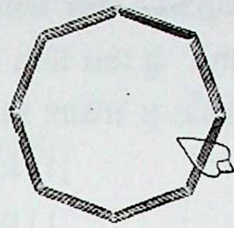
3. त्रिकोणकुण्डम्

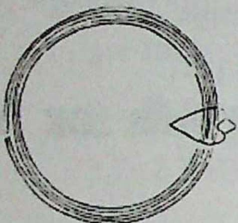


7. पद्मकुण्डम्

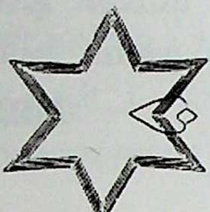


8. समाष्टास्रकुण्डम्

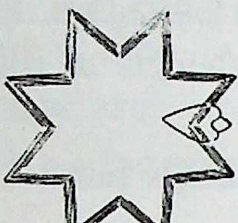




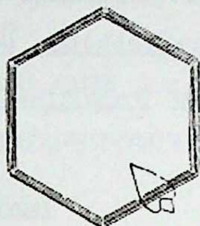
4. वृत्तकुण्डम्



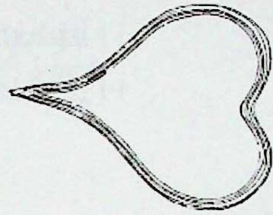
5. विषम षडस्र कुण्डम्



6. विषमाष्टास्र कुण्डम्



9. समषडस्र कुण्डम्



10. योनिकुण्डम्

1.1 अय कुण्डपूजनम् :- निर्मित कुण्ड में अष्टदल के अन्दर अग्नि की सप्तजिह्वा को बनाकर हवनकर्ता आसन की कुशाओं के अग्रभाग को पूर्व या उत्तर की ओर करके बिछाकर उस पर बैठें और आचमन प्रणायाम आदि सामान्य कर्म करके संकल्प करें–

'ॐ विष्णु.........दुर्गापूजनकर्माङ्गभूतहोमकर्मांगभूतकुण्डपूजनादिपूर्वकभूशोधनपूर्वकपंचभूसंस्कारादिसहितः कुण्डे अग्निस्थापनं करिष्ये'।

भूशोधन इस प्रकार है – **'भूरसीति भूमिशोधनम्'** अर्थात् भूरसि इत्यादि मन्त्र से हवनकुण्ड अथवा स्थण्डिल का पंचगव्य से प्रोक्षण कर भूमि शुद्धि की भावना करे –

'ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।
पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳह पृथिवीम्मा हिꣳसीः।1।'

हस्तप्रक्षालन करके **'अश्मा चेति मृत्तिका स्थापनम्'** अर्थात् अश्मा च इत्यादि मन्त्र से हवनकुण्ड अथवा स्थण्डिल में पवित्र नदी की थोड़ी मृत्तिका ड़ाले – **'ॐ अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यञ्च मे यश्च मे श्यामञ्च मे लोहञ्च मे सीसञ्च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।'**, **'एष स्तोमेति दर्भं गृह्णाति'** अर्थात् एष स्तोम इत्यादि मन्त्र से दर्भ को ग्रहण कर सम्मार्जन करें –

'ॐ एष स्तोमो मरुतऽइयङ्गोर्मान्दार्यस्य माम्नस्य कारोः। एषामासीद्दृतन्त्वेवयां विद्याभेषं वृजनशीर दानुम्।'

कुशोदक से प्रोक्षण करें –

'ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः। ॐ यो वः शिवतमो रसः। ॐ तस्माऽरङ्गमाम वः।'

कुण्डाभिमानी देवता का आवाहन करें –

'ॐ आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्मविनिर्मितम्। शरीरं यच्च ते दिव्यमग्न्यधिष्ठानमद्भुतम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः कुण्डाय नमः। कुण्डमावाहयामि स्थापयामि। भो कुण्ड इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

प्रार्थना करें –

'ये च कुण्डे स्थिता देवाः कुण्डाङ्गे याश्च देवताः। ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञसिद्धिं ददन्तु नः।।'

अब गन्धाक्षतपुष्प से कुण्ड में देवताओं का आवाहन करें, सर्वप्रथम कुण्ड के मध्य में विश्वकर्मा का आवाहन करें–

'ॐ विश्वकर्मन्हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्।।

उपयाम गृहीतोसीन्द्राय त्वा विश्वकर्मणऽएषते योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे।।'

ॐ भूर्भुवःस्वः विश्वकर्मणे नमः। विश्वकर्माणमावाहयामि स्थापयामि। भो विश्वकर्मन् इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

प्रार्थना करें –

'ब्रह्म वक्त्रं भुजौ क्षत्रमूरू वैश्यः प्रकीर्तितः। पादौ यस्य तु शूद्रो हि विश्वकर्मात्मने नमः।।1।।

अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि दोषाः स्युः खननोद्भवाः। नाशयत्वखिलाँस्ताँस्तु विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते।।2।।'

प्रथम सत्त्वात्मक श्वेत मेखला में –

'ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि। भो ब्रह्मन् इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

प्रार्थना करें – 'हंसपृष्ठसमारूढ आदिदेव जगत्पते। रक्षार्थं मम यज्ञस्य मेखलायां स्थिरो भव।।'

द्वितीय रजोआत्मक रक्त मेखला में –

'ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा।।'

ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णवे नमः। विष्णुमावाहयामि स्थापयामि। भो विष्णो इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

प्रार्थना करें – 'विष्णो यज्ञपते देव दुष्टदैत्यनिषूदन। विभो यज्ञस्य रक्षार्थं कुण्डे सन्निहितो भव।।'

तृतीय तमसात्मक कृष्ण मेखला में –

'ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः।।'

ॐ भूर्भुवःस्वः रुद्राय नमः। रुद्रमावाहयामि स्थापयामि। भो रुद्र इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

प्रार्थना करें – 'गंगाधर महादेव वृषारूढ महेश्वर। आगच्छ मम यज्ञेऽस्मिन्रक्षार्थं रक्षसां गणात्।।'

कुण्ड की योनि में – 'ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि। मा त्वा हिꣳसीन्मा मा हिꣳसीः।।

आगच्छ देवि कल्याणि जगदुत्पत्तिहेतुके। मनोभवयुते रम्ये योनि त्वं सुस्थिरा भव।।

ॐ भूर्भुवःस्वः योन्यां योन्यै नमः। योनिमावाहयामि स्थापयामि। भो योने इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

प्रार्थना करें – 'सेवन्ते महतीं योनिं देवर्षिसिद्धमानवाः। चतुरशीतिलक्षाणि पन्नगाद्याः सरीसृपाः।।
पशवः पक्षिणः सर्वे संसरन्ति यतो भुवि। योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्तिहेतुका।।
मनोभवयुता देवी रतिसौख्यप्रदायिनी। मोहयित्री सुराणां च जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते।।
योने त्वं विश्वरूपाऽसि प्रकृतिर्विश्वधारिणी। कामस्था कामरूपा च विश्वयोन्यै नमो नमः।।'

कुण्ड के कण्ठ में –

'ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳरुद्राऽउपश्रिताः। तेषाꣳसहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि।।1।।
नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाऽधः क्षमाचराः। तेषाꣳसहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि।।2।।
कुण्डस्य कण्ठदेशोऽयं नीलजीमूतसन्निभः। अस्मिन्नावाहये रुद्रं शितिकण्ठं कपालिनम्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः कण्ठे रुद्राय नमः। रुद्रमावाहयामि स्थापयामि। भो रुद्र इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

प्रार्थना करें – 'कण्ठमंगलरूपेण सर्वकुण्डे प्रतिष्ठितः। परितो मेखलास्त्वत्तो रचिता विश्वकर्मणा।।'

कुण्ड की नाभि में –

'ॐ नाभिर्मे चित्तं विज्ञानम्पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यम्पसः।।
जंघाभ्यां पद्भ्यां घर्मोऽस्मि विशिराजा प्रतिष्ठितः। पद्माकाराऽथवा कुण्डसदृशाकृति बिभ्रती।।
आधारः सर्वकुण्डानां नाभिमावाहयाम्यहम्। ॐ भूर्भुवःस्वः नाभ्यां नाभ्यै नमः।।
नाभिमावाहयामि स्थापयामि। भो नाभे इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

प्रार्थना करें - 'नाभे त्वं कुण्डमध्ये तु सर्वदेवैः प्रतिष्ठिता। अतस्त्वां पूजयामीह शुभदा सिद्धिदा भव।।'

कुण्ड के अन्दर नैऋत्यकोण में -

'ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवो भवानः।
यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।
आवाहयामि देवेशं वास्तुदेवं महाबलम्। देवदेवं गणाध्यक्षं पातालतलवासिनम्।।'
ॐ भूर्भुवःस्वः वास्तुपुरुषाय नमः।
वास्तुपुरुषमावाहयामि स्थापयामि। भो वास्तुपुरुष इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

प्रार्थना करें -

'यस्य देहे स्थिता क्षोणी ब्रह्माण्डं विश्वमंगलम्। व्यापिनं भीमरूपं च सुरूपं विश्वरूपिणम्।।
पितामहसुतं मुख्यं वन्दे वास्तुपतिं प्रभुम्। विभो यज्ञस्य रक्षार्थं कुण्डे सन्निहितो भव।।
वास्तुपुरुष देवेश सर्वविघ्नहरो भव। शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वन्कामान्प्रयच्छ मे।।'

एकतन्त्र से कुण्ड में आवाहित समस्त देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा करें -

'ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमन्दधातु।
विश्वेदेवासऽइह मादयन्मों3 प्रतिष्ठ।।

ॐ भूर्भुवःस्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवेयुः।
ॐ भूर्भुवःस्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तेभ्यः सर्वेभ्यः कुण्डस्थदेवताभ्यो नमः –
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।'

अब कुण्डस्थ आवाहित देवताओं को बलि देने केलिये कुण्ड के बाहर एक पात्र में दध्योदन स्थापित करें और हाथ में जल लेकर –

'ॐ भूर्भुवःस्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तेभ्यः सर्वेभ्यः कुण्डस्थदेवेभ्यो नमः इमं सदीपं दध्योदनबलिं समर्पयामि। अनेन विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तानां सर्वेषां कुण्डस्थदेवानां पूजनेन बलिदानेन च विश्वकर्मादि वास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवताः प्रीयन्ताम् न मम।।' जल छोड़ें।

1.2-1 वैदिक विधि से अग्नि स्थापना करें –

पांच भूसंस्कार इस प्रकार हैं –

1. **'यद्देवेति दर्भैः परिसमूहनम्'** अर्थात् यद्देव इत्यादि मन्त्र से परिसमूहन संस्कार करे –

'ॐ यद्देवा देव हेडनन्देवा सश्च कृमवयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः।।

दर्भैः परिसमूह्य परिसमूह्य परिसमूह्य' ऐसा बोलकर इस विधि का पालन करें –

'धृत्वाङ्गुष्ठकनिष्ठाभ्यां मूलैः साग्रैः कुशत्रयम्। तदग्रैस्तस्य रजसां पूर्वस्यामपसर्पणम्।'

अर्थात् अंगुष्ठ और कनिष्ठिका से अग्र सहित तीन कुशा को लेकर, उनके अग्र से थोड़ी धूल (मिट्टी) निकालकर पूर्व दिशा में फेंकें।

2. **'मानस्तोकेत्युपलेपनम्'** अर्थात् मानस्तोक इत्यादि मन्त्र से गोबर से लीपे –

'ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान्रुद्रभाविनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे। गोमयेन उपलिप्य उपलिप्य उपलिप्य' ऐसा बोलकर इस विधि का पालन करें–गोमय से हवनकुण्ड को लीपें। **'गोमये वसते लक्ष्मीः पवित्रा सर्वमंगला। यज्ञार्थे संस्कृता भूमिस्तदर्थमुपलेपनं।'** क्योंकि गोमय में लक्ष्मी का वास है, इसलिये वह पवित्र और सर्वकल्याणकारी है। यज्ञ केलिये भूमि का संस्कार करना होता है और वह संस्कार गोमय से होता है। गोमय का लक्षण–

'रुग्णा वृद्धा प्रसूता च वन्ध्या संधिन्यमेध्यभुक्। मृतवत्सा च नैतासां ग्राह्यं मूत्रं शकृत्पयः।1।

स्वच्छं तु गोमयं ग्राह्यं स्थाने च पतिते शुचौ। उपर्य्यधः परित्यज्य आर्द्रजन्तु विवर्जितम्।'

अर्थात् रोगीणी, बूढ़ी, प्रसूता, बांझ, संधिकाल में अपवित्र चीजों को खानेवाली और जिसका बछड़ा मर गया हो ऐसी गाय के दूध, मूत्र और गोबर को पूजा, हवन आदि शुभ कर्मों केलिये ग्रहण नहीं करना चाहिये। शुद्ध स्थान में गिरा हुआ स्वच्छ गोबर को ग्रहण करें, उसमें भी ध्यान रहे कि गीला न हो और कीड़ों से युक्त न हो एवं ऊपर व नीचे के भाग को छोड़कर लें।

3. **'त्वामिद्धीत्युल्लिख्य'** अर्थात् त्वामिद्धि इत्यादि मन्त्र से उल्लेखनसंस्कार करे –

'ॐ त्वामिद्धि ह व हसातो वाजस्य कारवः। त्वां वृत्रेष्विन्द्रसत्पतिन्नरस्त्वाङ्काष्ठा सर्वतः।1। ॐ प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीया सत्येन सत्यं यज्ञेन यज्ञो यजूभिर्यजूꣳषि सामभिः सामान्यृग्भिर्ऋचः पुरोनुवाक्याभिः पुरोनुवाक्या याज्याभिर्याज्या वषट्कारैर्वषट्कारा आहुतिभिराहुतयो मे कामान्समर्द्धयन्तु।2। ॐ दक्षिणमारोह त्रिष्टुप्त्वाऽअवतु। बृहत्साम पञ्चदशस्तोमो ग्रीष्म ऋतुः क्षत्रन्द्रविणम्प्रतीचिमारोह।3। ॐ प्रतीचिमारोह जगती त्वाऽअवतु। वैरूपꣳसाम सप्तदशस्तोमो वर्षा ऋतु विड्द्रविणमुदीचीमारोह।4। ॐ उदीचीमारोहानुष्टुप्त्वाऽअवतु। वैराजꣳसामैकविꣳशस्स्तोमः शरदृतु फलन्द्रविणमूर्ध्वमारोह।5। स्रुवेण उल्लिख्य उल्लिख्य उल्ल्लिख्य' ऐसा बोलकर इस विधि का पालन करें – **'खादिरेण हस्तमात्रेण खड्गाकृतिना स्फ्येन उल्लिख्य प्रागग्रा उदक्संस्थाः स्थण्डिलपरिमाणास्तिस्रो रेखा कुर्यात्'** अर्थात् खदिर (खैर) के पेड़ का एक हाथ लम्बा खड्ग के आकारवाले स्फ्य नामक अस्त्र को पूर्व की ओर आगे बढ़ाते हुये स्थण्डिल के नाप के अनुसार तीन रेखा बनायें।

4. **सदसस्पतिनोद्धरणं** अर्थात् सदसस्पति इत्यादि मन्त्र से उद्धरणसंस्कार करे –

'ॐ सदसस्पतिमद्भुतम्प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिम्मेधा मयासिषꣳस्वाहा।'

स्रुवा से थोड़ी मिट्टी को उद्धृत कर अनामिका और अंगूठा से ईशानदिशा में फेंके– **'ॐ व्रतङ्कृणु**

व्रतङ्कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञीयः दैवीं धियम्मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञ वाहसꣳसुतीर्थानोऽअसद्वशे। ये देवा मनो जाता मनो युजो दक्षक्रतवस्ते नोऽअवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा।।

उद्धृत्य' ऐसा बोलकर इस विधि का पालन करें- '**अनामिकांगुष्ठाभ्यां यथोल्लिखिताभ्यो लेखाभ्यः पांसूनुद्धृत्य**' अर्थात् अनामिका और अंगूठे से अभी बनायी गयी रेखाओं के बीच में से थोड़ी धूल (मिट्टी) को निकालें।

5. '**शन्नो देवेत्यभ्युक्षणम्**' अर्थात् शन्नो इत्यादि मंत्र से अभ्युक्षण संस्कार करे -

'**शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।।**

उदकेन अभ्युक्ष्य' ऐसा बोलकर इस विधि का पालन करें-

'**मणिकाद्भिरभ्युक्ष्याभिषिच्य**' यानि मणिका युक्त जल से अभ्युक्षण और अभिषेक करें, क्योंकि कहा है-

'**आपो देव गणाः सर्वे आपः पितृगणाः स्मृताः। तेनैवाभ्युक्षणं प्रोक्तमृषिभिर्वेदवादिभिः।1।**

उत्तानेन तु हस्तेन कर्त्तव्यं प्रोक्षणं बुधैः। अवाचीनेन हस्तेन कर्त्तव्यं तदवेक्षणम्।2।

मुष्टिकृतेन हस्तेन चाभ्युक्षणमुदाहृतम्।3।

अर्थात् देवगण जल ही हैं, पितृगण जल ही है, इसलिये जल से ही अभ्युक्षण और अभिषेक करना चाहिये ऐसे वेदवादी ऋषियों ने कहा है। किस कर्म में जल का प्रयोग कैसे करें? बुद्धिमान प्रोक्षण कर्म को सदा ऊंचे हाथ से करें, नीचे की ओर हाथ करके जल का अवेक्षण करें और अभ्युक्षण कर्म केलिये हाथ में जल लेकर मुट्ठी बांधके जल को हवन कुण्ड में डालें। इस प्रकार पांच भूसंस्कारों को करके स्वास्ति वाचन करे। तत्पश्चात् अग्नि को उत्पन्न करें।

<u>अग्नि को उत्पन्न करने अथवा लाने की विधिः</u> – कर्मप्रयोगरत्न में कहा है कि

'उत्तमोऽरणिजन्योऽग्निर्मध्यमः सूर्यकान्तजः। उत्तमः श्रोत्रियागारान्मध्यमः स्वगृहादिजः।'

अर्थात् विभिन्न साधनों से उत्पन्न की जानेवाली अग्नियों में से अरणिमन्थन से उत्पन्न अग्नि श्रेष्ठ है और सूर्यकान्तमणि (अथवा लेन्स) से उत्पन्न अग्नि मध्यम है, शेष निकृष्ट हैं। यदि अग्नि को रसोई आदि अन्य स्थान से यज्ञकुण्ड में लाना है तो श्रोत्रिय के घर की हो तो श्रेष्ठ और अपने घर की हो तो मध्यम, शेष निकृष्ट है।

<u>अग्नि लाने में पात्र आदि नियम –</u>

'शुभं पात्रं तच्च कांस्यं स्यात्तेनाग्निं प्रणयेद्बुधः। तस्याभावे शरावेण नवेनापि दृढेन च।'

अर्थात् कांस्य का बर्तन श्रेष्ठ है और वह उपलब्ध न हो तो नये व दृढ़ मिट्टी के बर्तन में ला सकते हैं।

'पात्रेण पिहिते पात्रे वह्निमेवानयेत्ततः। अस्त्रेणादाय तत्पात्रं वर्मणोद्घाटयेत्तु तं।।
अस्त्रमन्त्रेण नैऋत्ये क्रव्यादांशं ततस्त्यजेत्। मूलेन पुरतो धृत्वा संस्कारांश्च ततश्चरेत्।।'

अर्थात् कभी भी अग्नि को खुला न लायें अपितु दूसरे पात्र से ढ़ककर लायें। अस्त्रमन्त्र **'हुं फट्'** से ढ़ककर ग्रहण करके लायें और यज्ञमण्डप में लाने के बाद वर्ममन्त्र **'रं फट्'** से उसे खोलें। अस्त्रमन्त्र से ही क्रव्यादांश के रूप में थोड़े अंगारों को नैऋत्य दिशा में फेंकें तत्पश्चात् अपने सामने रखी हुयी अग्नि की पूजा करके संस्कारों को करें।

विष्णुधर्मोत्तरपुराण में अग्नि की पूजा के विषय में कहा है कि –

'मध्येऽपि गन्धपुष्पादीन्दद्यादग्नेर्न संशयः। बहिर्नैवेद्यमात्रन्तु दातव्यमिति निश्चयः।'

पंचोपचार पूजा में जो गन्ध, पुष्प आदि अर्पण करते हैं उन्हें अग्नि के मध्य में ही डालें किन्तु केवल नैवेद्य को बाहर रखके अर्पण करें।

उक्त प्रकार से समुत्पन्न अग्नि के संस्कार करें - **'अग्निमुपसमाधाय'** ऐसा बोलकर कर्म के साधनभूत लौकिक अथवा स्मार्त अथवा श्रौत अग्नि को अपने सामने रखकर अग्नि की सात जिह्वाओं के नाम बोलें-

'याभिर्हव्यं समश्नाति हुतं सम्यग् द्विजोत्तमैः। काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता चैव सुधूम्रवर्णा।1।
स्फुलिंगिनी विश्वरुचिस्तथा च चलायमाना इति सप्त जिह्वा। एताश्चोक्ता विशेषेण ज्ञातव्या ब्राह्मणेन तु।2।
आहूय चैव होतव्यो यो यत्र विहितो विधिः। अविदित्वा तु यो ह्यग्निं होमयेदविचक्षणः।3।
न हुतं न च संस्कारो न तु यज्ञफलं भवेत्।'

ग्रहहोम में भी हवन करते वक्त ध्यान देने योग्य बात यह है कि ग्रह के अनुसार अग्नि के नाम अलग-अलग होने से जिस ग्रह को उद्देश्य कर आहुति देना है उसकी अग्नि का नाम स्मरण कर आहुति देनी चाहिये। उनके नाम स्कन्दपुराण में इस प्रकार बताये है-

'आदित्ये कपिलो नाम पिंगलः सोम उच्यते। धूमकेतुस्तथा भौमे जाठरोऽग्निर्बुधे स्मृतः।1।
गुरौ चैव शिखी नाम शुक्रे भवति हाटकः। शनैश्चरे महातेजा राहुकेत्वोर्हुताशनः।2।'

अर्थात् सूर्य की आहुति को कपिल नाम की अग्नि में डालना है यानि सामने में विद्यमान अग्नि में भावना करें कि 'यह कपिल नाम की अग्नि है'। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के विषय में भी भावना करें। चन्द्र-पिंगल, मंगल-धूमकेतु, बुध-जाठर, गुरु- शिखी, शुक्र-हाटक, शनि-महातेजा, राहु और केतु (दोनों केलिये) हुताशन।

पूर्वादि क्रम से आठों दिशाओं में पूजन करे।

पूर्वे - 'ॐ पृथिव्याः सधस्थादग्निम्पुरोष्यमङ्गिरस्वदच्छेमोऽअग्निम्पुरीष्यमङ्गिरस्वद्भरिष्यामः।'

दक्षिणे - 'ॐ अग्निश्च पृथिवी च सन्नते ते मे सन्नमतामदो वायुश्चान्तरिक्षश्च सन्नते ते मे सन्नमदामदऽ आदित्यश्च द्यौश्च सन्नते ते मे सन्नमदामदऽआपश्च वरुणश्च सन्नते ते मे सन्नमदामदः सप्तसꣳसदोऽष्टमीभूत साधनी सकामाँ।'

पश्चिमे - 'ॐ वायो ये ते सहस्रिणोरथासस्तेभिरागाहि। नियुत्वान्त्सोम पीतसे।'

उत्तरे - 'ॐ सोमो धेनुꣳसोमोऽर्वन्तमासुꣳसोमो वीरङ्कर्मण्यन्ददाति। सादन्यं वितथꣳसभेयम्पितृश्रवणं ये आददा समस्मै।'

आग्नेये - 'ॐ अग्निन्दूतन्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवा2आसदयादिह।'

नैर्ऋत्ये - 'ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।'

वायव्ये - 'ॐ वायुरनिलममृतमथेदम्भस्मान्तꣳशरीरम्। ॐ क्रतो3 स्मर क्लिवे3 स्मर कृतꣳस्मर।'

ईशान्ये – '**ॐ ईशावास्यमिदꣳसर्वं यत्किञ्च जगत्याञ्जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।**'

अब मध्य में तीन मन्त्रों से पूजन करे –

'**ॐ सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात्सविता ज्योतिरुदयाऽअजस्रम्।**
तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान्सम्पश्यन्विश्वा भुवनानि गोपाः।1।
ॐ प्रजापते नत्त्वदेतान्न्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम्।2।
ॐ सदसस्पतिमद्भुतम्प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।
सनिम्मेधा मयासिषꣳस्वाहा।3।'

अब लकड़ियों (ईंधन) का शोधन करे – '**कस्त्वा सत्योमदानामꣳहिष्ठोमत्सदन्धसः दृढा चिदारुजे वसु।**' तत्पश्चात् लकड़ियों को अग्नि पर स्थापित करे – '**ॐ त्वामिद्धि हवामहे सा तौ वाजस्य कारवः। त्वां वृत्रेष्विन्द्र-सत्पतिन्नरस्त्वां काष्ठा सर्वतः।**' अब अग्नि को शुद्ध करे– '**ॐ अग्नावग्निश्चरति प्रविष्टाऽऋषीणाम्पुत्रोऽभिशास्ति पावा। स नः स्योनः सुयजा यजे ह देवेभ्यो हव्यꣳसदमप्रयच्छन्स्वाहा।**'

अग्नि को ग्रहण (स्वीकार) करे – '**ॐ मयि गृह्णाम्यग्ने अग्निꣳरायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय। मामु देवताः सचन्ताम्।**' अब अग्नि के गर्भाधान से विवाह पर्यन्त संस्कार करे –

1. गर्भाधानम्: – '**ॐ गर्भोऽअस्योषधीनां गर्भो वनस्पतीनाम्। गर्भो विश्वस्य भूतस्याग्ने गर्भोऽअपामसि।**'

2. पुंसवनम्: – 'ॐ विवस्वान्नादित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिन्मत्स्व श्रद्धस्मै नरो वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती वाममश्नुतः। पुमान्पुत्रो जायते विन्दते वस्वधा विश्वा हारपऽएधते गृहे।'

3. सीमन्तोन्नयनम्: – 'ॐ अजीजनो हि पवमान सूर्य विधारे शक्मना पयः। गोजीरयारꣳहमानः पुरन्ध्या।'

4. जातकर्मः – 'ॐ एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणा सह यथायं वायुरेजति यथा समुद्र एजति। एवायन्दशमास्यो अस्रज्जरायुणा सह।'

5. नामकरणम्: – 'यदापि पेषमातरम्पुत्रः प्रमुदितौधयन्। एतत्तदग्नेऽअनृणो भवाम्यहतौ पितरौ मया। सम्पृचस्त्थसम्या भद्रेण पृङ्क्तो विपृचस्त्थविमा पाप्मना पृङ्क्त।'

6. निष्क्रमणम्: – 'ॐ पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्चदिशऽउदजयत्ताऽउज्जेषꣳसविता षडक्षरेण शड्तूनुदजयत्ता–नुज्जेषम्बृहस्पतिरष्टाक्षरेण गायत्रीमुज्जेषाम्मित्रो नवाक्षरेण।'

7. अन्नप्राशनम्: – 'ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।'

8. चूडाकरणम्: – 'ॐ अग्नऽऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि।'

9. कर्णवेधः – 'ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।'

10. उपनयनम्: – 'ॐ अग्निरेकाक्षरेण प्राणमुदजयन्तामुज्जेशमश्विनो द्व्यक्षरेण द्विपदो मनुष्यानुदजयन्तानुज्जेषं विष्णुस्त्र्यक्षरेण त्रींल्लोकानुदजयन्तानुज्जेषꣳसोमश्चतुरक्षरेणचतुष्पदः पशूनुज्जेषं पञ्चाक्षरेण।'

11. गायत्रीश्रवणम्:- 'ॐ भूर्भुवःस्वः वैश्वानराय विद्महे सप्तजिह्वाय धीमहि। तन्नोऽअग्निः प्रचोदयात्।'

12. समावर्तनम्: - 'ॐ व्रतङ्कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो। वनस्पतिर्यज्ञीयः दैवीं धियम्मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञ वाहसꣳसुतीर्थानोऽअसद्वशे। ये देवा मनो जाता मनो युजो दक्षक्रतवस्ते नोऽअवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा।'

13. गोदानकर्म: - 'ॐ गावऽउपावतावतम्मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया।'

14. विवाहकर्म: - 'ॐ भग एव भगवाँ2। अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम। तत्त्वा भग सर्व ईज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह।' तत्पश्चात् अग्नि को हवनकुण्ड में/स्थण्डिल पर तीन बार घुमाते हुये ले जाये -

'ॐ ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषस्पतिम्। अजस्रङ्घर्म मीमहे।
उपयाम गृहीतोऽसि वैश्वानराय त्वैषते योनिर्वैश्वानराय त्वा।।

'ॐ वैश्वानरो न ऊतय आ प्रयातु परावतः। अग्निरुक्थेन वाहसा। उपयाम गृहीतोऽसि वैश्वानराय त्वैषते योनिर्वैश्वानराय त्वा।।'

तत्पश्चात् अग्नि को हवनकुण्ड में/स्थण्डिल पर स्थापित करें -

'ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाꣳरेताꣳसि जिन्वति।।1।।
अग्निन्दूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ2ऽआसादयादिह।।2।।'

शोधित समिधाओं से अग्नि को प्रदीप्त यानि तेज करें –

'ॐ स्थिरो भव वीड्वङ्ग आशुर्भव वाज्यर्वन्। पृथुर्भव सुषदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहनः।'

अब अग्नि से प्रार्थना करे –

'ॐ आवाहये पुरुषम्महान्तं सुरासुरैर्वन्दितपादपद्मम्। ब्रह्मादयो यस्य मुखे विशन्ति प्रविश्य कुण्डे सुरलोकनाथ।'

अब अग्नि के समक्ष आवाहनादि मुद्रा दर्शायें –

**'भो अग्ने त्वमावाहितो भव। भो अग्ने त्वं संस्थापितो भव। भो अग्ने त्वं सन्निहितो भव।
भो अग्ने त्वं सन्निरुद्धो भव। भो अग्ने त्वं सकलीकृतो भव। भो अग्ने त्वमवगुण्ठितो भव।
भो अग्ने त्वममृतीकृतो भव। भो अग्ने त्वं परमीकृतो भव।'**

अग्नि का ध्यान करें –

**'ॐ चत्वारि शृंगास्त्रयोऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽअस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ2ऽआविवेश।।1।।
रुद्रतेजःसमुद्भूतं द्विमूर्धानं द्विनासिकम्। षण्णेत्रं च चतुः श्रोत्रं त्रिपादं सप्तहस्तकम्।।1।।
याम्यभागे चतुर्हस्तं सव्यभागे त्रिहस्तकम्। स्रुवं स्रुचं च शक्तिं च ह्यक्षमालां च दक्षिणे।।2।।
तोमरं व्यजनं चैव घृतपात्रं च वामके। बिभ्रतं सप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखं सप्तजिह्वकम्।।3।।**

याम्यायने चतुर्जिह्वं त्रिजिह्वं चोत्तरे मुखम्।। द्वादशकोटिमूर्त्याख्यं द्विपंचाशत्कलायुतम्।।4।।
आत्माभिमुखमासीनं ध्यायेच्चैव हुताशनम्। गोत्रमग्नेस्तु शाण्डिल्यं शाण्डिल्यासितदेवलाः।।5।।
त्रयोऽमी प्रवरा माता त्वरणी वरुणः पिता। रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम्।।6।।
स्वाहास्वधावषट्कारैरंकितं मेषवाहनम्। शतमंगलनामानं वह्निमावाहयाम्यहम्।।7।।
त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते। आगच्छ भगवन्नग्ने कुण्डेऽस्मिन्सन्निधो भव।।8।।
भो वैश्वानर शाण्डिल्यगोत्र शाण्डिल्यासितदेवलप्रवरान्वित भूमिमातः वरुणपितः मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव।।'

अब प्रतिष्ठित करें -

'ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञंꣳसमिमन्दधातु।
विश्वेदेवासऽइह मादयन्मों3 प्रतिष्ठ।। ॐ शतमंगलनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।।'

कुण्ड के मध्य अथवा नैर्ऋत्य में अग्नि की पूजा करें -

'ॐ भूर्भुवःस्वः शतमंगलनाम्ने वैश्वानराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।।

प्रार्थना करें - 'अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनं। हिरण्यवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्।।'

अग्नि के (अंगभूतकर्म सहित) संस्कार (कुशकण्डिका) कर्म करें-

पारस्कर सूत्रों के आधार पर यहां अंगभूत कर्म और संस्कारों का विधान बताया जा रहा है।

1. **<u>'दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्य'</u>** इस सूत्र के अनुसार अग्नि के दक्षिण दिशा में यज्ञीय लकड़ी से बनी हुयी पीठ के ऊपर कुशा का आसन बिछाये- **'ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।'** और उस पर कर्मज्ञाता चतुर्वेदी श्रोत्रिय ब्राह्मण को ब्रह्मा नामक ऋत्विक् के कर्म केलिये वरण किये थे उन्हें बिठायें।

'ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः। शूरऽइषव्योतिव्याधीमाहारथो जायतान्दोग्ध्रीर्धेनु वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा विष्णुरथेष्ठाः। सभे यो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे नः कल्पताम्।(ऋग्वेदीय)'

ब्रह्मासन के समीप में यजमान का आसन बिछाये –

'ॐ अग्ने प्रेहि प्रथमो देवयताञ्चक्षुर्देवानामुत मर्त्यानाम्। इत क्षमाण भृगुभिः सजोषा स्वर्य्यन्तु यजमाना स्वस्ति।'

अग्नि के उत्तरदिशा में प्रणीतापात्र केलिये दो प्रागग्रकुशाओं का आसन बिछाये और प्रणीता आसन व अग्नि के बीच में प्रोक्षणीपात्र केलिये प्रागग्रकुशाओं का आसन बिछाये – **'ॐ परीत्यभूतानि परीत्यलोकान् परीत्यसर्वाः प्रदिशो दिशश्च। उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्वमनात्कमानमभि संविवेश।'**, ब्रह्मा से प्रणीतापात्र का प्रणयन केलिये अनुमति लें – **'ब्रह्मन् अपः प्रणेयामि'**, ब्रह्माजी कहें – **'ॐ प्रणय'**, बायें हाथ में प्रणीता पात्र को धारण कर उसमें दाहिने हाथ से जल भरके वायव्यकोण में पहले प्रथम आसन पर रखकर दाहिने हाथ का अनामिका से आलभन कर दूसरे आसन पर रखें।

2. **'प्रणीय'** (अप इति शेषः) अर्थात् अग्नि के उत्तर दिशा में पूर्वाग्र कुशाओं के दो आसन बिछायें। बायें हाथ में यज्ञीय लकडी से बना हुआ 12 अंगुल लम्बा 4 अंगुल चौड़ा और 4 अंगुल गहरा चमस पात्र रखकर उसमें दाहिने हाथ से उद्धृतपात्रस्थ जल को भरें। जल भरने का मन्त्र –

'ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमद्ध्यमꣳश्रथाय।
अथावयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम।1।
ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेहवोद्ध्युरूशꣳसमान आयुः प्रमोषीः।2।'

बायें हाथ से दाहिने हाथ में ग्रहण करे –

'ॐ इन्द्रआसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनाम्मरुतो यन्त्वग्रयम्।'

उस चमस पात्र को पहले पश्चिम आसन पर रखकर आलभन करने के बाद पूर्व आसन पर स्थापित करें।,

3. **'परिस्तीर्य'** अर्थात् एक मुष्टि पूर्वाग्र सोलह बर्हि लेकर ईशानादि से उत्तर तक अग्नि के चारों तरफ (प्रत्येक दिशा में 4 बर्हि) यज्ञकुण्ड की मेखला के नीचे बिछायें। बिचाने का क्रम इस प्रकार है – 1. आग्नेयादीशानान्तं उदगग्रं, 2. ब्रह्मणोऽअग्निपर्यन्तं प्रागग्रं, 3. नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं उदगग्रं, 4. अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं प्रागग्रं। परिस्तरण कर्म इस मन्त्र से करे –

'ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञीयाः पाशा वितता महान्तः।
तेभिर्नो अद्य सवितोतविष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।'

4. **'अर्थवदासाद्य'** अर्थात् जितनी सामग्री है उसी के अनुसार अग्नि के उत्तर अथवा पश्चिम दिशा में (प्रयोग करने में अपनी अनुकूलता को देखकर) पात्रासादन करें।

तत्र क्रमः – **'पवित्रछेदनार्थं त्रयो दर्भाः, साग्रे अनन्तगर्भे पवित्रे द्वे, प्रोक्षणी पात्रं, आज्यं, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, त्रिप्रक्षालिता तण्डुला, सम्मार्जनकुशाः पंच, उपयमनकुशाः सप्त, समिधस्तिस्रः, स्रुवः, स्रुक्, पूर्णपात्रं, अन्यान्युपकल्पनीयानि अर्कादिसमित्तिलादि हवनीयद्रव्याणि निधाय पवित्रे कुर्यात्। द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय उपरि प्रादेश मात्रं अवशेषयित्वा दक्षिणकरेण द्वयोः पवित्रयोः मूलेन द्वौ कुशौ प्रदक्षिणीकृत्य वामकरेण सर्वाणि पवित्राणि युगपद्धृत्वा दक्षिणकरांगुष्ठांगुलिपर्वाभ्यां उपरि प्रादेश मात्रं छित्त्वा त्रीण्युत्तरतः क्षिपेत्, द्वे ग्राह्ये।'** अर्थात् पवित्र छेदन केलिये 3 दर्भ, साग्र अनन्तगर्भ पवित्र दो, प्रोक्षणीपात्र, घी, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, तीन बार प्रक्षालित चावल, 5 सम्मार्जनकुशा, 7 उपयमनकुशा, 3 समिधा, स्रुवा, स्रुक्, पूर्णपात्र, अन्य उपकल्पित अर्कादि समिधा सहित तिल आदि हवनीय द्रव्य को रखकर पवित्र निर्माण करें। 2 के उपर 3 को रखकर उपरि प्रादेशमात्र को शेष करके दाहिने हाथ से 2 पवित्रों के मूल से 2 कुशाओं की प्रदक्षिणा लगाकर बायें हाथ से सभी को एक साथ धारणकर दाहिने हाथ के अंगुष्ठ व अंगुलि से उपर के प्रादेशमात्र का छेदनकर 3 को उत्तर दिशा में फेंके और 2 को ग्रहण करें।

5. **'पवित्रे कृत्वा'** इस सूत्र के अनुसार पवित्री का निर्माण करना है जिसका लक्षण है – **'अनन्तर्गर्भिणं साग्रं कौशं द्विदलमेव च। प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पवित्रं यत्र कुत्रचित्।'** अर्थात् अन्तर्गर्भित न हो ऐसे अग्र सहित दोदलवाले प्रादेशमात्र लम्बे कुशा से पवित्र को बनाना चाहिये। कुशाओं को प्रादेशमात्र काटने केलिये इस मन्त्र का प्रयोग किया जाता है –

'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।1।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पति वेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः।2।'

कुशाओं से पवित्र को बनाते वक्त इस मन्त्र का पाठ करे –

'ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव। उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।1।

देवीरापो अग्रेगुवो अग्रपुवो अग्र इममद्य। यज्ञन्नयताग्रे यज्ञपतिं सुधातुम्यज्ञपतिन्देव युवम्।2।'

तत्पश्चात् प्रणीता आदि पात्रों को इस मन्त्र से ढके – **'ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेहवोद्ध्युरूशꣳसमान आयुः प्रमोषीः।'**

6. **प्रोक्षणीपात्र** – **'वारणं पाणिपात्रं च द्वादशांगुलविस्तृतम्। पद्मपत्राकृतिर्वापि प्रोक्षणीपात्रमीरितम्।'** अर्थात् यज्ञीय लकड़ी से निर्मित 12 अंगुलवाला पाणिपात्र अथवा कमल के पत्ते के आकार में बनाये हुये पात्र को प्रोक्षणीपात्र कहा गया है। **'ॐ इदम्मे वरुण श्रुधीहवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।'** अब दो पवित्र को प्रोक्षणीपात्र में डाले– **'ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। अग्नये जुष्टं गृह्णामि।'**

7. आज्यस्थाली – **'आज्यस्थाली कांस्यमयी यद्वा ताम्रमयी तथा। प्रादेशमात्रदीर्घा सा ग्रहीतव्याऽव्रणा शुभा।'**
अर्थात् प्रादेशमात्र नाप की कांसे की अथवा तांबे की आज्यस्थाली ग्रहण करनी चाहिये और वह चोट, छेद, दाग आदि से रहित होनी चाहिये।

'ॐ घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वीमदुधुघे सुपेशसा। द्यावापृथिवी वरुणस्य घर्मणा विष्वग्भिस्तेऽजरे भूरि रेतसा।'

8. चरुस्थाली– **'दृढा प्रादेशमात्रोर्ध्वं तिर्यङ्नातिबृहन्मुखी। मृन्मयौदुम्बरी वापि चरुस्थाली प्रशस्यते।'**
अर्थात् मजबूत व प्रादेशमात्र ऊंची मिट्टी से बनी अथवा गूलर की लकड़ी से बनी हुयी पात्र को चरुस्थाली के रूप में ग्रहण करना चाहिये और वह टेढ़ी–मेढ़ी न हो व बड़े मुंहवाली भी न हो।

'ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।'

9. स्रुवा का लक्षण– **'खादिरादेः स्रुवः कार्यो हस्तमात्रप्रमाणतः। अंगुष्ठपर्वखातं तत् त्रिभागं दीर्घपुष्करम्।।'**
अर्थात् खैर आदि यज्ञीयवृक्षों की लकड़ी से बना हुआ एक हाथ लम्बा, त्रिकोणात्मक (गोल नहीं) अंगूठे के बराबर गहरा किन्तु उसके पुष्कर लम्बे हों ऐसा स्रुवा ही कर्म में प्रयोग करना चाहिये।

'ॐ स्रुचश्च मे चमसा च मे वायव्यानि च मे द्रोणकलशश्च मे ग्रावाणश्च मे धिषवणे च मे पूतभृच्च मऽआधवनीयश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्च मेऽअवभृतश्च मे स्वगाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्'

10. <u>स्रुवसंमार्जनकुशा और उपयमनकुशा</u> –

'स्रुवसंमार्जनार्थाय पंच वाथ त्रयोऽपि वा। प्रादेशमात्रान्गृह्णीयात्संमार्जकुशसंज्ञकान्।।
उपयमनकुशाः सप्त पंच वाथ त्रयोऽपि वा।'

अर्थात् स्रुवा को साफ करने केलिये संमार्जनकुशा नाम से प्रादेशमात्र लम्बी पांच अथवा तीन कुशा ग्रहण करें और उपयमनकर्म (स्रुवा पर बांधने केलिये) सात अथवा पांच अथवा तीन कुशा ग्रहण करें।

सम्मार्जन कुशा को इस मन्त्र से ग्रहण करे –

'ॐ शादन्दद्भिरवकान्दन्तमूलैर्मृदं वैस्तेमदुꣳष्ठाभ्याꣳसरस्वत्याऽअग्रजिह्वायाऽउत्सादमवक्त्रन्दैनतालुवाज-ꣳहनुभ्यामपऽआश्येन वृषणमण्डाभ्यामादित्र्याँ। श्मश्रूभिः पन्थानम्भूभ्या द्यावापृथिवी वर्तोभ्यां विद्युतं कनीनकाभ्याꣳशुक्लाय स्वाहा कृष्णाय स्वाहा पार्याणि पक्ष्माणि पार्या इक्षवः।'

11. उपयमनकुशा ग्रहण करे – **'ॐ उपयाम गृहीतोऽस्यन्तर्यच्छ मघवन्पाहि सोमम्। उरुष्यरायऽएषो यजस्व।'**

सम्मार्जनीकुशाओं द्वारा प्रणीतापात्रस्थ जल से स्रुवा का प्रोक्षण करे (कुशा के अग्र से स्रुवा के अग्र का, मध्य से मध्य का और मूल से मूल का शोधन करें)–

'ॐ प्रत्युष्टꣳरक्षः प्रत्युष्टाऽअरातयो निष्टप्तꣳरक्षो निष्टप्ताऽअरातयः। उर्वन्तरिक्षमन्वैमि।'

समिधा के वृक्ष– ब्रह्मपुराण में समिधा के वृक्षों के बारे में कहा है – **'शमीपलाशन्यग्रोधप्लक्षवैकंकतोद्भवाः।1।**
अश्वत्थोदुम्बरौ बिल्वश्चन्दनस्सरलस्तथा। सालश्च देवदारुश्च खदिरश्चैव यज्ञीयाः।2।'

अर्थात् याग में इन वृक्षों की ही लकड़ी प्रयोग करने योग्य हैं - शमी, पलाश, वट, वैकंकती, पीपल, गूलर, बेल, चन्दन, चीड़, साल, देवदारु और खैर।

समिधा का लक्षण-

'नांगुष्ठादधिका ग्राह्या समित्स्थूलतया क्वचित्। न वियुक्ता त्वचा चैव न सकीटा न पाटिता।1।
प्रादेशान्नाधिका नोना न तथा स्याद् द्विशाखिका। न सपर्णा न निर्वीर्या होमेषु च विजानता।2।'

अर्थात् अंगूठे से ज्यादा मोटी न हो, त्वचा रहित न हो, कीड़े युक्त न हो, फटी न हो, दो शाखा युक्त न हो, पत्तों से युक्त न हो, वीर्य रहित न हो और प्रादेशमात्र से न ज्यादा लम्बी हो व न छोटी ही हो, ऐसी समिधा के योग्य पूर्वोक्त पवित्र वृक्षों की टहनियों से बनी समिधा ही हवन/याग में प्रयोग करें।

12. समिधा को ग्रहण करें - **'ॐ समिधाग्निन्दुवस्यत घृतैर्वोधयतातिथिम्। आस्मिन्हव्या जुहोतन।।'**

आज्य विचारः - **'उत्तमं गोघृतं प्रोक्तं मध्यमं महिषीभवं। अधमं छागलीजातं तस्माद् गव्यं प्रशस्यते।1।'**

अर्थात् गौ का घी उत्तम है, भैंस का मध्यम और बकरी का अधम, इसलिये गौ का घी ही हवन, पूजा आदि कार्य केलिये सर्वश्रेष्ठ है।

चरुविचारः - **'हविष्येषु यवा मुख्यास्तदनु व्रीहयः स्मृताः। यथोक्तवस्त्वसंपत्तौ ग्राह्यं तदनुकारि यत्।1।**
यवानामिव गोधूमा व्रीहीणामिव शालयः। अभावे व्रीहियवयोर्दध्ना वा पयसापि वा।2।'

अर्थात् हवन के योग्य धान्यों में जौ मुख्य है तत्पश्चात् चावल। यदि ये दोनों उपलब्ध न हो तो इनके सदृश क्षेत्रीय धान्य का प्रयोग करें, जैसे कि जौ के सदृश गेहूं को और चावल के सदृश स्यांवां चावल को माना गया है।

13. <u>आज्यपात्र और चरुपात्र ग्रहण करें</u> - आज्यस्थाली में आज्य भरे और चरुपात्र में चरु भरे -

'ॐ घृताच्यसि जुहूर्नाम्ना सेदम्प्रियेण धाम्ना प्रियꣳसदऽआसीद घृताच्यासि प्रभञ्जन्नाम्ना सेदम्प्रियेण धाम्ना प्रियꣳसदऽआसीद घृताच्यसि ध्रुवाऽसदन्नृतस्य योनौ ता विष्णोः पाहि यज्ञम्पाहि यज्ञपतिम्पाहि मां यजन्तम्।।'

<u>पूर्णपात्र विचार</u>-

'अकृते पूर्णपात्रे च छिद्रयज्ञः प्रजायते। पूर्णपात्रे च संपूर्णे सर्वसंपूर्णता भवेत्।।'

अर्थात् पूर्णपात्र न हो तो वह यज्ञ छिद्रयुक्त होगा यानि यजमान केलिये हानिकारक होगा। इसके विपरीत यदि पूर्णपात्र संपूर्ण हो तो सब कुछ संपूर्ण होगा यानि यजमान की सकल कामनायें पूर्ण होंगी।

14. पूर्णपात्र ग्रहण करें -

'ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। अग्नीषोमोभ्यान्त्वा जुष्टन्नियुनज्मि।1। अद्भ्यस्त्वौषधीभ्यो न त्वा माता मन्यतामनुपितानुभ्राता सगभ्यों सखा सयूथ्यः अग्नीषोमोभ्यान्त्वा जुष्टं प्रोक्षामि।2।'

15. **'<u>प्रोक्षणीः संस्कृत्य</u>'** अर्थात् प्रोक्षणीपात्र को प्रणीतापात्र के उत्तर में स्थापित कर उसमें दूसरे पात्र से अथवा अपने हाथ से प्रणीतापात्र के जल से सींच के पवित्रों से उत्पवन करके उन पवित्रों को प्रोक्षणीपात्र में डालें। दाहिने हाथ

से प्रोक्षणीपात्र को उठाकर बायें हाथ में रखकर उसके जल को उछालकर प्रणीतापात्र के जल से प्रोक्षण करें।

16. '<u>**अर्थवत्प्रोक्ष्य**</u>' अर्थात् आज्यस्थाली से पूर्णपात्र पर्यन्त सकल पात्रों, कुशाओं, समिधाओं, आसादित अन्य समस्त पर जिस क्रम से उन्हें रखा गया था उसी क्रम से प्रोक्षणीपात्र के जल से प्रोक्षण करके प्रणीतापात्र और अग्नि के बीच में प्रोक्षणीपात्र को रखें।

17. '<u>**निरूप्याज्यम्**</u>' अर्थात् अग्नि के निकट स्थापित आज्यस्थाली में रखे हुये घी में थोड़ा चरु का प्रक्षेप करें और चरुस्थाली में रखे हुये चरु पर प्रणीतापात्र के जल से प्रोक्षण करें। चरुस्थाली में त्रिप्रक्षालित तण्डुल का प्रक्षेप करें।

18. '<u>**अधिश्रित्य**</u>' अर्थात् ब्रह्मा ऋत्विक् (उसके अभाव में अध्वर्यु/होता/यजमान स्वयं) घी का अधिश्रयण कर चरु के साथ थोड़ा घी अग्नि में डालें।

'ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः ।1।
ॐ अनिशितोऽअसि पत्नक्षिद्वा जिनिन्त्वा वाजेद्ध्यायै सम्माज्र्मि ।2।',

19. '<u>**पर्यग्नि कुर्यात्**</u>' अर्थात् जलते हुये अंगारे से घी और चरु पर प्रदक्षिणा कराके यानि घुमाके अर्धश्रित चरु पर भी घुमायें। इससे सम्मार्जन कर प्रतपन करे –

'ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि माम्।।',

20. **'स्रुवं प्रतप्य संमृज्य'** अर्थात् दाहिने हाथ से स्रुवा को लेकर अधोमुख (उल्टा करके) अग्नि के पश्चिम भाग में पकड़के तपाकर बायें हाथ में पकड़ लें और उस पर संमार्जनी कुशाओं से स्रुवा का शोधन करें। कैसे? कुशा के अग्रभाग से स्रुवा का मूल से शुरुकर अग्र तक स्पर्श करते हुये जायें तथा कुशा के मूल से स्रुवा के अग्र से शुरुकर मूल तक स्पर्श करते जायें। पुनः स्रुवा को तपाये –

'ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेहवोद्धयुरूषꣳसमान आयुः प्रमोषीः।।'

स्वस्थान में स्थापित करे – **'ॐ तमुत्त्वा दध्यङ् ऋषिः पुत्रऽअथर्वणः। वृत्रहणम्पुरन्दरम्।।'**

21. **'पुनः प्रतप्य निदध्यात्'** अर्थात् पूर्ववत् दोबारा तपाकर अपनी दाहिनी दिशा में रखें। आज्यपात्र को अग्नि की प्रदक्षिणा कराके स्वस्थान में रखें–**'ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि। प्रियन्देवानामनाधृष्टन्देव यजनमसि।।'** चरुस्थाली को भी अग्नि की प्रदक्षिणा कराके स्वस्थान में रखें –**'ॐ पशुभिः पशुनाप्नोति पुरोडाशैर्हविꣳष्या। छन्दोभिः सामिधेनीर्याज्याभिर्वषट्कारान्।।'**

22. **'आज्यमुद्वास्य'** अर्थात् आज्यस्थाली को उठाकर चरु की पूर्व दिशा से लाकर अग्नि की उत्तर दिशा में स्थापित करें और चरुस्थाली को उठाकर आज्यस्थाली की पश्चिम दिशा से लाकर आज्यस्थाली के उत्तरदिशा में रखें। आज्य का उत्पवन करे – **'ॐ प्रत्युष्टꣳरक्षः प्रत्युष्टाऽअरातयो निष्टप्तꣳरक्षो निष्टप्ताऽअरातयः। उर्वन्तरिक्षमन्वैमि।।'**

23. **'उत्पूय'** अर्थात् घी के ऊपर पवित्रीकुशाओं (अथवा अपनी हथेली के माध्यम से) फूंक मारें। तत्पश्चात् आज्यावेक्षण करे – **'ॐ आपवस्व हिरण्यवदस्ववत्सोम वीरवत्। वाजङ्गोमन्तमाभरत्स्वाहा।'**

24. **'अवेक्ष्य'** अर्थात् घी को अच्छी तरह देखे (गृहस्थ हो तो पत्नी को घी देखने को कहे) और उसमें कुछ अन्य द्रव्य दीखें तो निकाले।

25. **'कुशानाधाय'** आज्य में कुशा को रखे –

'ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।'

26. **'प्रोक्षणीश्च पूर्ववत्'** अर्थात् प्रोक्षणी पात्र पर भी पूर्ववत् पवित्रीकुशाओं से उत्पवन करें। जलती हुयी कुशा से आज्यपात्र, चरुस्थाली और अग्नि के ऊपर प्रदक्षिणा के क्रम से घुमाकर अग्नि में डाले –

'ॐ धृष्टिरस्यपाग्नेऽअग्निमामादृꣳहि निष्क्रव्यादꣳसेधा देवयजं वह।

ध्रुवमसि पृथिवीदृꣳह ब्रह्म वनि त्वा क्षत्रवनि सजात वन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय।।'

27. **'उपयमनान्कुशानादाय'** अर्थात् उपयमनकुशाओं को दाहिने हाथ से लेकर बायीं ओर रखें।

28. **'समिधोऽभ्याधाय'** अर्थात् बैठे हुये समिधा को घी से युक्त कर अग्नि में डालकर अग्नि को आहुतियां डालने के योग्य तेज करें।

29. **'<u>पर्युक्ष्य जुहुयात्</u>'** अर्थात् प्रोक्षणीपात्र के पूरे जल को पवित्री धारण किये हुये दाहिने हाथ के चुल्लु में भरकर ईशान

दिशा से आरम्भकर उत्तरदिशा तक घुमाते हुये अग्नि के चारों तरफ सींचें। तत्पश्चात् संस्रव को धारण करने केलिये प्रणीतापात्र और अग्नि के बीच में थोड़े जल से भरा संस्रवपात्र को स्थापित करें। पांच वारुणक आहुतियों के बारे में त्रिकारिका में कहा है कि –

'आघारौ नासिके ज्ञेया आज्यभागौ च चक्षुषी। वक्त्रश्चोदरकुक्षी च कटी व्याहृतिभिः स्मृता।1।

शिरो हस्तौ च पादौ च पंचवारुणकाः स्मृताः। प्रजापतिः स्विष्टकृतं श्रोत्रे द्वे परिकीर्तिते।2।'

अर्थात् ऐसी भावना करें की आप आहुतियों से अग्निदेव के शरीर का निर्माण कर रहे हैं। कैसे? दो आघार आहुतियों से दो नासिका, दो आज्यभाग आहुतियों से दो आंख, तीन व्याहृतियों से मुख-पेट-कुक्षी; पांच वारुणक आहुतियों से कटि-सिर-हाथ और पैर तथा अन्त में प्रजापति देवता की आहुति और स्विष्टकृत् होम से दो कानों के निर्मित होने की भावना करें।

1.2-2 अथवा **आगमिक विधि** से अग्नि स्थापना करें –

रुद्रयामल तन्त्रोक्त देवीरहस्य (11.7-17) के अनुसार आगम पद्धति से अग्नि स्थापना करने की यह विधि है।

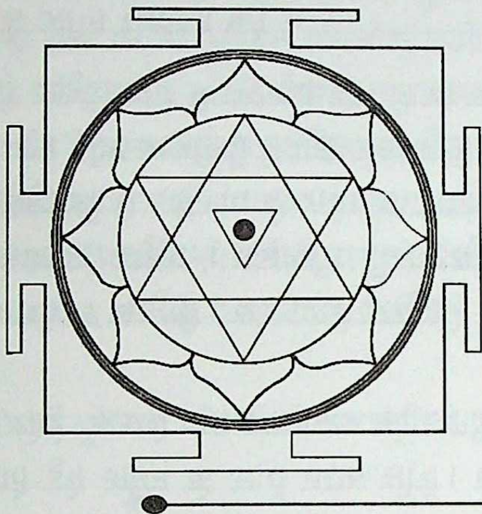
'पूर्वस्यां दिशि सद्यन्त्रात्खनेत्कुण्डं त्रिकोणकम्। हस्तैकविस्तृतं चाधो हस्तैकपरिमाणतः।।'

अर्थात् पूर्वदिशा में एक त्रिकोण कुण्ड (अन्य तन्त्र शास्त्र में योनि कुण्ड आदि का भी विधान है।) का खनन करे। वह कुण्ड यजमान के हाथ (सामान्यतः एक हाथ =24 अंगुल यानि 18 इंच) के अनुसार तीनों भुजायें एक-एक हाथ लम्बी और एक हाथ गहरी होनी चाहिये।

'कुण्डेऽस्मिन् विलिखेद्यन्त्रं त्र्यश्रं बिन्दुविराजितम्। षट्कोणमष्टपत्रं च त्रिवृतं भूगृहांकितम्।।
ततः पूजां चरेत् देवि कुण्डचक्रस्य पार्वति। यथोक्तविधिना येन साधको दीक्षितो भवेत्।।'

अर्थात् इस त्रिकोण कुण्ड में त्रिकोण बनाकर उसके मध्य में बिन्दु का अंकन करे। उसके (त्रिकोण) के बाहर षट्कोण, अष्टदल, तीनवृत्त और भूपुर बनाये। हे पार्वति! कुण्डस्थ चक्र की पूजा साधक अपनी दीक्षा में जिस प्रकार बताया गया है उस विधि के अनुसार ही करे। अथवा निम्न सामान्य विधि से करे -

कुण्डस्थ श्री चक्र-पूजन



1. **'गणेशधर्मवरुणाः कुबेरसहितास्तथा। चतुर्द्वारेषु सम्पूज्याश्चत्वारो द्वारपालकाः।।'**

अर्थात् भूपुर के चारों द्वार पर पूर्वादि क्रम से गणेश, यम, वरुण और कुबेर की आवाहनादि पूर्वक पूजा करे –

ॐ गं गणेशाय नमः, ॐ यं यमाय नमः, ॐ वं वरुणाय नमः, ॐ कुं कुबेराय नमः।

2. **'माया च मोहिनी मत्ता माध्वी वह्निवल्लभा। वर्तुली वीरसूर्वाम्या पूज्या अष्टदलस्थिताः।।'**

अर्थात् अष्टदल में माया, मोहिनी, मत्ता, माधवी, वह्निवल्लभा, वार्ताली, वीरसू और वाम्या का पूजन करे –

ॐ मां मायायै नमः, ॐ मों मोहिन्यै नमः, ॐ मं मत्तायै नमः, ॐ मां माधव्यै नमः, ॐ वं वह्निवल्लभायै नमः, ॐ वां वार्ताल्यै नमः, ॐ वीं वीरसुवे नमः, ॐ वां वाम्यायै नमः।

3. **'अम्बालिकाम्बाबगला छिन्नशीर्षाम्बिका भगा। षट्कोणमध्यगाः पूज्याः कुण्डचक्रे महेश्वरि।।'**

अर्थात् हे महेश्वरि! कुण्डचक्र में स्थित षट्कोण में अम्बालिका, अम्बा, बगला, छिन्नशीर्षा, अम्बिका और भगा का पूजन करे – **ॐ ह्रीं अम्बालिकायै नमः, ॐ ह्रीं अम्बायै नमः, ॐ ह्रीं बगलायै नमः, ॐ ह्रीं छिन्नशीर्षायै नमः, ॐ ह्रीं अम्बिकायै नमः, ॐ ह्रीं भगायै नमः।**

4. **'वह्निं वैश्वानरं चाग्निं त्रिकोणे पूजयेच्छिवे। स्वाहा भगवतीं बिन्दौ जातवेदसमर्चयेत्।।'**

अर्थात् हे शिवे! त्रिकोण में वह्नि, वैश्वानर और अग्नि की पूजा करे।

ॐ वह्न्यै नमः, ॐ वैश्वानराय नमः, ॐ अग्नये नमः।

तथा बिन्दु में स्वाहा और जातवेद की पूजा करे –

ॐ स्वाहायै नमः, ॐ जातवेदसे नमः।

5. **'अग्निं मूलेन देवेशि वह्नेर्दशकलास्ततः। तारं वह्निः शिवोऽब्धिश्च हृज्जं शक्तिर्महेश्वरि।।'**

अर्थात् हे देवेशि! हे महेश्वरि! बिन्दु में ही अग्नि की दस कलाओं का पूजन करे –

ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः, ॐ रं ऊष्मायै नमः, ॐ लं ज्वलिन्यै नमः, ॐ वं ज्वालिन्यै नमः, ॐ शं विस्फुलिंगिन्यै नमः, ॐ षं सुश्रियै नमः, ॐ सं सुरूपायै नमः, ॐ हं कपिलायै नमः, ॐ ळं हव्यवाहिन्यै नमः, ॐ क्षं कव्यवाहिन्यै नमः।

6. अब संपूर्ण चक्रका पूजन निम्न मन्त्र से करे –

'अग्ने वैश्वानरं ब्रूयाज्जटाभारेति संवदेत्। भास्वरेति त्रिनेत्रेति ज्वालामुखपदं वदेत्।।
प्रज्वलेति युगं ब्रूयाज्जातवेदसि संवदेत्। ठद्वयं संवदेदन्ते मन्त्रोऽयं वह्निवल्लभः।।'

अर्थात् अग्नि का यह प्रिय मूलमन्त्र है – **'ॐ रं गं रूं जं सौः अग्ने वैश्वानर जटाभार भास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख प्रज्वल प्रज्वल जातवेद ठः ठः स्वाहा/नमः।'** अब कुण्डस्थ चक्र का पूजन इसी मन्त्र से गन्धाक्षतपुष्पादि से करे। तथा यन्त्रेश्वर के पूजन का अंगभूत आवाहनादि समस्त उपचारों को भी इसी मन्त्र से करे।

'ततो दिग्भैरवान् भूतानर्चयेत् कुसुमैः परम्। ततो देवि प्रमथ्याग्निं कुण्डचक्रे कुलेश्वरि।।

बिन्दौ वह्निं समावाह्य मूलेनोज्ज्वालयेच्छिवे। अग्निं संदीप्य मूलेन प्रणमेद्वह्निमुद्रया।।
मूलेनाहुतिभिर्वह्निं हुनेत् षोडशभिस्ततः। अष्टोत्तरशतावृत्त्या दद्यदाज्येन पार्वति।।'

अर्थात् पूजित उस चक्र में 8 दिग्भैरवों का और भूतों का पूजन पुष्पों से करे। हे कुलेश्वरि! तत्पश्चात् अरणि मन्थन से अथवा अपनी दीक्षा की परम्परा के अनुसार स्मार्त विधि से अग्नि को प्रज्वलित कर चक्र मध्य में स्थित बिन्दु में स्थापित करे। हे शिवे! उसमें अग्नि देवता का आवाहनादि पूर्वक पूजन पूर्वोक्त अग्नि का मूलमन्त्र से गन्धाक्षतपुष्पादि से करके वह्नि मुद्रा को दर्शाये। पूर्वोक्त अग्नि का मूलमन्त्र से 18 आहुति घी की देकर अग्नि को प्रदीप्त करे। पुनः मूलमन्त्र से ही 108 आहुति घी देकर अग्नि को समस्त संस्कारों से संस्कारित होने की भावाना करे। तदनन्तर आगमिक पद्धति से अग्नि का अन्वाधान करे जो की निम्न प्रकार से है। 1. वास्तोष्पते प्रतिजानीहि, 2. वास्तोष्पते शग्मया-इति द्वाभ्यां पक्वहविषा; 3. वास्तोष्पते ध्रुवास्थूणां, 4. वास्तोष्ते प्रतरणो, 5. अमीवहा-इति षड्भिः; 6. जातवेद - इत्यादि पंचभिः; 7. सद्योजात - इत्यादि पंचभिः; 8. शन्न इन्द्राग्नी - इत्यादि पंचदर्शग्भिः; 9. भूरादि व्याहृतिभिश्च एकैकवारं घृतेन जुहुयात्। 10. शन्नो देवेति मन्त्रेण प्रतिद्रव्यं 108 आहुति देयं, तानि च द्रव्याणि - शमीसमिदाज्यं, चर्वाज्यं, पंचगव्याप्लुतदूर्वाज्यं च। शेषेण स्विष्टकृदादि प्रणीताविमोकान्तं कर्म कर्तव्यम्। वे मन्त्र इस प्रकार हैं -

1. वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः। यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।1।।

2. वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या। पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।1।।

3. वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणाऽसत्रं सोम्यानाम्। द्राप्सो भेत्ता पुरां शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा।।1।

4. वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्द्रो। अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान् प्रति नो जुषस्व।।1।।

5. अमीवहा वास्तोष्पते विश्वां रूपाण्याविशन्। सख सुशेव एधि नः।।1।।
यदर्जुन सारमेय दतः मिशंग यच्छसे। वीव भ्राजन्त ऋष्टय उप स्रक्वेषु बप्सतो नि षु स्वप।।2।।
स्तेनं राय सारमेय तस्करं वा पुनः सर। स्तोतॄनिन्द्रस्य रायसि किमस्मानु दुच्छुनायसे नि षु स्वप।।3।।
त्वं सूकरस्य ददृहि तव दर्दर्तु सूकरः। स्तोतॄनिन्द्रस्य रायसि किमस्मानु दुच्छुनायसे नि षु स्वप।।4।।
सस्तु माता सस्तु पिता सस्तु श्वा सस्तु विश्पतिः। ससन्तु सर्वे ज्ञातयः सस्त्वयमभितो जनः।।5।।
य आस्ते यश्च चरति यश्च पश्यति नो जनः। तेषां स हन्मो अक्षाणि यथेदं हर्म्यं तथा।।6।।

6. जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः।।1।।
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः।।2।।
अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान् स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा। मूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शंयोः।।3।।
विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदस्सिन्धुं न नावा दुरिताऽतिपर्षि। अग्ने अत्रिवन्मनसा गृणानोऽस्माकं बोध्यविता तनूनाम्।।4।।
पृतनाजितं सहमानमुग्रमग्निं हुवेम परमा सधस्थात्। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामद्देवो अतिदुरिताऽत्यग्निः।।5।।

7. सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नमः।।1।। वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमश्श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।।2।। अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यस्सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।3।। तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।4।। ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।।5।।

8. शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ।।1।। शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु।।2।। शंनो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः। शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु।।3।। शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्। शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः।।4।। शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु। शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः।।5।। शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्यभिर्वरुणः सुशंसः। शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्राभिरिह शृणोतु।।6।। शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सनतु यज्ञाः। शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः।।7।। शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु। शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः।।8।। शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु

मरुतः स्वर्काः। शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो सावित्रं शम्वस्तु वायुः।।9।। शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः। शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः।।10।। शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः।।11।। शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः। शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु।।12।। शं नो अज एकपाद देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः। शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा।।13।। आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्तेदं ब्रह्म क्रिमाणं नवीयः। शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः।।14।। ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः। ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।15।।

9. ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा – इति व्याहृतिभिः एकैकवारं घृतेन जुहुयात्।

10. ॐ शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।

शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः।।1।।

इति मन्त्रेण प्रतिद्रव्यं 108 आहुति देयं, तानि च द्रव्याणि – शमीसमिदाज्यं, चर्वाज्यं, पंचगव्याप्लुतदूर्वाज्यं च।

1.2-3 अथवा इस निम्न **संक्षिप्त अग्नि स्थापन विधि** से भी अग्नि स्थापना कर सकते हैं –

ॐ अग्निं प्रज्ज्वलितं वन्दे जात वेद हुताशनम्। सुवर्णवर्णममलं समिद्धं सर्वतो दिशम्।
सर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षिशिरो मुखम्। विश्वरूपो महानग्ने प्रणीतः सर्वकर्मसुः।

ॐ अग्निश्चपृथिवी च सन्नते ते मे सन्नमतामदो वायुश्चान्तरिक्षञ्च सन्नते ते मे सन्नमतामदऽआदित्यश्च द्यौश्च सन्नते ते मे सन्नमतामदऽआपश्च वरुणश्च सन्नते ते मे सन्नमतामदः। सप्तसꣳसदोऽअष्टमीभूत साधनी। सकामाँ2ऽअध्वनस्कुरु संज्ञानमस्तु मेमुना ।।

अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।

युयोद्ध्यस्म्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम ।।

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा पाम्मोदाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा वायवे स्वाहा विष्णवे स्वाहेन्द्राय स्वाहा बृहस्पतये स्वाहा मित्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा ।

1.3 अग्निसम्मुखीकरणम्-

स्थापित अग्नि को सम्मुख कर लेने की विधि -

'सपवित्राम्बुहस्तेन वह्नेः कुर्यात्प्रदक्षिणम्। हव्यवाट् सलिलं दृष्ट्वा बिभीतो सम्मुखो भवेत्।।'

अर्थात् सपवित्री होकर जल को हाथ में लिये हुये हनवकुण्ड की परिक्रमा करने से जल को देखके भयभीत होकर अग्निदेव सम्मुख होते हैं। अतः हाथ में जल लेकर हवनकुण्ड की परिक्रमा करें।

1.4 होम द्रव्य विषयक सामान्य विचार : (रुद्रयामल आदि ग्रन्थेषु)

'पायसं सर्पिषा युक्तं तिलैः शुक्लैर्विमिश्रितम्। होमयेद्विधिवद्भक्त्या दशांशेन नृपोत्तम।।'

अर्थात् हे राजन्! जप के दशांश होम भक्तिपूर्वक विधिवत् घी से युक्त और सफेद तिल से मिश्रित खीर से ही करें। अन्यत्र स्पष्ट कहा है -

'प्रधानद्रव्यमुद्दिष्टं पायसान्नं तिलास्तथा। किंशुकैः सर्षपैः पूगैर्लाजादूर्वांकुरैस्तथा।।1।।

यवैर्वा श्रीफलैर्दिव्यैर्नानाविधफलैस्तथा। रक्तचन्दनखण्डैश्च गुग्गुलैश्च मनोहरैः।।2।।

प्रतिश्लोकं च जुहुयात्सर्वद्रव्याणि च क्रमात्। पायसान्नेन जुहुयात्पूजिते हेमरेतसि।।3।।'

अर्थात् प्रधान द्रव्य के बारे में यह उपदेश दिया गया है-खीर, तिल, ढ़ाक, सरसों, सुपारी, खील, दूर्वांकुर और जौ, अथवा श्रीफल और अनेक प्रकार के दिव्यफल साथ में लालचन्दन के टुकड़े और श्रेष्ठ गुग्गुल भी जोड़ें। प्रत्येक श्लोक में सभी द्रव्यों को क्रम से अथवा केवल खीर से अग्नि में हवन करें। सामग्रियों के मात्रा के बारे में भी कहा गया है कि-

'कर्शमात्रं घृतं होमे शुक्तिमात्रम्पयः स्मृतम्। तत्समम्मधुदुग्धान्नमक्षमात्रमुदाहृतम्।।1।।

अर्थात् होम में घी की आहुति हमेशा एक कर्ष यानि सोलह माषा के बराबर वजन ही स्रुवा/जुहू में ग्रहण कर आहुति देनी चाहिये। इसी प्रकार दूध और शहद शुक्तिका यानि 32 माषा, दुग्धान्न (पायस=खीर) एक अक्ष यानि एक कर्ष= सोलह माषा, 12 माषा=10 ग्राम।

दधि प्रसृतिमात्रं स्याल्लाजाः स्युर्मुष्टिसम्मिताः। पृथुकास्तत्प्रमाणाः स्युः सक्तवोपि तथोदिताः।। 2।।

अर्थात् दही एक प्रसृति यानि दो पल बराबर मात्रा, लाजा चार पल, चिवड़े और सत्तु मुट्ठि बराबर मात्रा।।

गुडम्पलार्धमानं स्याच्छर्कराऽपि तथा मता। ग्रासार्धं चरुमानं स्यादिक्षुः पर्वावधिर्मता।।3।।

अर्थात् गुड़ आधा पल, चीनी भी आधा पल, चरू आधा ग्रास (मुर्गी के अण्डे के बराबर मात्रा ग्रास कहा जाता है।) गन्ना आधा गाँठ (यानि एक गाँठ से दूसरे गाँठ से दूसरे गाँठ तक की लम्बाई का आधा भाग)

एकैकम्पत्रपुष्पाणि तथाऽपूपानि कल्पयेत्। कदलीफलनारंगफलान्येकैकशो विदुः।।4।।

अर्थात् पत्र, पुष्प, मालपुए (अपूप) एक-एक ही डालना है, केवल और नारंगी फल भी एक-एक ही डालना है।

मातुलिंगं चतुःखण्डम्पनसं दशधा कृतम्। अष्टधा नारिकेलानि खण्डितानि विदुर्बुधाः।।5।।

अर्थात् चकोतरा का एक चौथाई भाग, कटहल का दशांश, नारियल आठवाँ हिस्सा तोड़कर ही डालें।

त्रिधाकृतम्फलं बिल्वं कपित्थं खण्डितं त्रिधा। उर्वारुकफलं होमे चोदितं खण्डितं त्रिधा।। 6।।

अर्थात् बेल का फल, कैथ का फल और ककड़ी के एक तिहाई को ही आहुति में दें।

फलान्यान्यानि खण्डशः समिधस्तु दशांगुलाः। दूर्वा त्रयं समुद्दिष्टं गुडूची चतुरंगुलाः।।7।।

अर्थात् अन्य फलों को भी टुकड़े करके ही डालें, समिधा दस अंगुल लम्बी, दूर्वा तीन एक साथ और गुडूची चार अंगुल लम्बी ही होनी चाहिये।

व्रीहयो मुष्टिमात्रास्स्युः मुद्गमाषयवापि च। तण्डुलास्स्युर्तदर्धांशाः कोद्रवा मुष्टिसम्मिता।।8।।

अर्थात् धान एक मुट्ठी, मूँग, उड़द और जौ भी एक-एक मुट्ठी ही हो, चावल आधा मुट्ठी किन्तु कोदों एक मुट्ठी ही होना चाहिये।

गोधूमरक्तकमला विहिता मुष्टिमानतः। तिलाश्चुलुकमात्रा स्युः सर्षपास्तत्प्रमाणकाः।।9।।

अर्थात् गेहूँ और लाल कमल गट्ठे मुट्ठी बराबर, तिल और सरसों चुल्लू भर मात्रा ही आहुति में डालें।

शक्तिप्रमाणं लवणं मरीचान्येकविंशतिः।। पुरुर्बदरमानः स्याद्रामठं तत्समं स्मृतम्।।10।।

अर्थात् नमक आधा तोला, मिर्ची 21 संख्या, हल्दी और हींग बेर के फल के बराबर परिमाण होना चाहिये।

चन्दनागुरुकस्तूरीकर्पूरकुंकुमानि च।। तिन्तिडिबीजमानानि समुद्दिष्टानि देशिकः।।11।।
कर्षाणि पंचगव्यानि तत्समानि मनीषिणः।।

अर्थात् चन्दन, अगर, कस्तूरी, कपूर और कुकुम को इमली के बीज के बराबर मात्रा ही ग्रहण करें। पंचगव्य को सोलह माषा बराबर मात्रा ही होम में ग्रहण करना चाहिये।।

इसमें ध्यान रखें-

'तिलाधिक्ये भवेल्लक्ष्मी यवाधिक्ये दरिद्रता।
घृताधिक्ये भवेन्मुक्तिः सर्वसिद्धिस्तु शर्करा मता।।'

अर्थात् तिल ज्यादा हो तो लक्ष्मी प्राप्ति होगी, जौ ज्यादा हो तो दरिद्रता मिलेगी, घी अधिक हो तो मुक्ति मिलेगी और शक्कर अधिक हो तो सर्व कार्य सिद्धि होगी।

1.5 आहुति कब डालनी है-

'सकारे सूतकं विद्याद्धकारे मृत्युमादिशेत्। आहुतिस्तत्र दातव्यो यत्र आकार दृश्यते।।'

अर्थात् स्वाहा शब्द के 'स' यानि 'स्वा' का उच्चारण करने पर आहुति डालेंगे तो वह सूतक उत्पन्न करेगी और 'ह' यानि 'हा' का उच्चारण करने पर आहुति डालेंगे तो वह मृत्यु को उत्पन्न करेगी, अतः 'स्वाहा' के बाद जब 'आ' का उच्चारण हो तब आहुति देनी चाहिये। अतः आगम पद्धति के अनुसार 'स्वाहा आ' ऐसे उच्चारण कर आहुति देनी चाहिये। किन्तु वैदिक पद्धति के अनुसार इस श्लोक का अर्थ है - स्वाहा शब्द के 'स' यानि 'स्वा' का उच्चारण करने पर आहुति डालेंगे तो वह सूतक उत्पन्न करेगी और 'ह्' का उच्चारण करने पर आहुति डालेंगे तो वह मृत्यु को उत्पन्न करेगी, अतः 'स्वाहा' शब्द के अन्तिम अक्षर 'आ' का श्रवण यानि ठीक से पूरा सुनने के बाद ही आहुति देनी चाहिये।

2. अथ होम प्रकरणम्

2.1-1 आघाराज्यभागहोमः -

अग्नि के उत्तरदिशा से पूर्वदिशा तक घी की धारा छोड़ें - **'ॐ प्रजापतये (स्वाहा)। इदं प्रजापतये न मम** (मनसा)।' प्रोक्षणी पात्र में संस्रव छोड़ें। पुनः पूर्व से दक्षिण तक घी की धारा छोड़ें - **'ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय न मम।'**

उत्तरपूर्वार्ध में घी की आहुति दें - **'ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम।'**

दक्षिणपूर्वार्ध में घी की आहुति दें - **'ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।'**

2.1-2 यजमान द्वारा द्रव्यत्याग :-

मया सम्पादितानि यथालाभोपपन्नानि समिच्चरुतिलाज्यादिहवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तानि, न मम। यथादैवतं सन्तु।।

2.2 अग्नि पूजनम् -

'ॐ भूर्भुवःस्वः शतमंगलनाम्ने वैश्वानराय नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।।

2.3 अथ गणेशाम्बिकयोः (वराहुति) होमः -

ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसो मम।

आहमजानिगर्भधमात्वमजासि गर्भधम् । ॐ गणपत्तये स्वाह । इदं गणपतये न मम ।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।

ॐ अम्बिकायै स्वाहा । इदं अम्बिकायै न मम ।

ॐ त्र्यम्बकँ यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्त्योर्मुक्षीयमाऽमृतात् ।।

ॐ महामृत्युञ्जयाय स्वाहा । इदं महामृत्युञ्जयाय न मम ।

2.4-1 नवग्रहादिदेवतानाम् होममन्त्राः

1. ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।
ॐ सवित्रे स्वाहा । इदं सवित्रे न मम।

2. ॐ इमं देवा असपत्नꣳसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳराजा । ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय न मम ।

3. ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पतिःपृथिव्या अयम् । अपाꣳरेताꣳसिजिन्वति ।
ॐ भौमाय स्वाहा । इदं भौमाय न मम।

4. ॐ उदुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सꣳसृजेथामयं च ।

अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत । ॐ बुधाय स्वाहा । इदं बुधाय न मम ।

5. ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद् द्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु । यदीदयच्छवस ऋतः प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् । ॐ बृहस्पतये स्वाहा। इदं बृहस्पतये न मम।

6. ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः । ॐ शुक्राय स्वाहा । इदं शुक्राय न मम।

7. ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शय्योरभिस्रवन्तु नः ।
ॐ शनैश्चराय स्वाहा । इदं शनैश्चराय न मम ।

8. ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा । कया सचिष्ठया वृता । ॐ राहवे स्वाहा। इदं राहवे न मम ।

9. ॐ केतु कृण्वन्न केतवे पेशोर्मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः । ॐ केतवे स्वाहा। इदं केतवे न मम ।

अनेन होमेन सूर्यादिनवग्रहदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।

2.4-2 अथ अधिदेवतानाम् होम मन्त्राः ।।

1. ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।
ॐ ईश्वराय (रुद्राय) स्वाहा । इदं ईश्वराय (रुद्राय) न मम।

2. ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणामुम्म इषाण सर्व लोकम्म इषाण। ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा । इदं महालक्ष्म्यै न मम।

3. ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्। ॐ स्कन्दाय स्वाहा । इदं स्कन्दाय न मम।

4. ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्त्वा । ॐ विष्णवे स्वाहा । इदं विष्णवे न मम।

5. ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । इदं ब्रह्मणे न मम।

6. ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् । जहि शत्रूँरपमृधो नुदस्वाथा भयं कृणुहि विश्वतो नः। ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय न मम।

7. ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन । असि सोमेन समया विपृक्त आहूस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि। ॐ यमाय स्वाहा । इदं यमाय न मम।

8. ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि । समापो अद्भिरगमत समोषधीभिरोषधीः ।
ॐ कालाय स्वाहा । इदं कालाय न मम ।

9. ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय । ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा । इदं चित्रगुप्ताय न मम ।
अनेन होमेन ईश्वरादि अधिदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।

2.4-3 प्रत्यधिदेवतानाम् होम मन्त्राः ।।

1. ॐ अग्नि दूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवां आसादयादिह । ॐ अग्नये स्वाहा । इदमग्नये न मम।

2. ॐ अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तिष्वश्वा भवत वाजिनः । देवीरापो यो व ऊर्मि प्रतूर्तिः ककुन्मान् वाजसास्तेनायं वाजꣳसेत । ॐ अद्भ्यः स्वाहा । इदमद्भ्यो न मम ।

3. ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरान्निवेशनी । यच्छानः शर्म सप्रथाः । ॐ पृथिव्यै स्वाहा । इदं पृथिव्यै न मम।

4. ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा । इदं विष्णवे न मम।

5. ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवे हवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम् । हवयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः । ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय न मम।

6. ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः पूषासि घर्माय दीष्व । ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा । इदमिन्द्राण्यै न मम।

7. ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वारुपाणि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् । ॐ प्रजापत्तये स्वाहा । इदं प्रजापत्तये न मम ।

8. ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।
ॐ सर्पेभ्यो स्वाहा । इदं सर्पेभ्यो न मम ।

9. ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः । स बुध्न्या उपमा अस्य विष्टाः।

सतश्च योनिमसतश्च विवः । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । इदं ब्रह्मणे न मम । अनेन होमेन अग्न्यादि प्रत्यधिदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।

2.5 पंच लोकपालानाम् होम मन्त्राः

1. ॐ गणानांत्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳहवामहे । वसोमम आहमजानि गर्मधमात्वमजासि गर्भधम् । ॐ गणपतये स्वाहा । इदं गणपतये न मम ।
2. ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् । ॐ अम्बिकायै स्वाहा । इदमम्बिकायै न मम ।
3. ॐ आनो नियुद्भिः शतिनिभि रध्वरꣳसहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् । बायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पातः स्वस्तिभिः सदा नः ।ॐ वायवे स्वाहा । इदं वायवे न मम ।
4. ॐ घृतं घृतपावानः पिवतवसाम्बसा पावानः पिवतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशः आदिशो विदिशः उ-िशो दिग्भ्यः स्वाहा ।।ॐ आकाशाय स्वाहा । इदं आकाशाय न मम ।
5. ॐ यावाङ् कशामधुमत्यशिवना सुनृतावती । तया यज्ञम्मिमिक्षतम् । ॐ अश्विभ्यां स्वाहा । इदं अश्विनीकुमाराभ्याम् न मम ।

अनेन होमेन गणपत्यादिपञ्चलोकपालाः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।

2.6 अथ दशदिक्पालदेवतानाम् होममन्त्राः

1. ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवे हवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय न मम।

2. ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवां2आसादयादिह। ॐ अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये न मम।

3. ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन ब्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि। ॐ यमाय स्वाहा। इदं यमाय न मम। अत्र प्रणीतोदक स्पर्शः।

4. ॐ एष ते निर्ऋते भागस्त जुषस्व। ॐ निर्ऋतये स्वाहा। इदं निर्ऋतये न मम।

5. ॐ इमम्मे बरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके। ॐ वरुणाय स्वाहा। इदं वरुणाय न मम।

6. ॐ वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्तविंशतिः। ते अग्रेऽश्वमयुञ्जस्ते अस्मिन् जवमा दधुः। ॐ वायवे स्वाहा। इदं वायवे न मम।

7. ॐ वयꣳसोमव्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि। ॐ कुबेराय स्वाहा। इदं कुबेराय न मम।

8. ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेदसा मसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धःस्वस्तये।ॐ ईशानाय स्वाहा। इदं ईशानाय न मम।

9. ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मस तश्चविवः। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम।

10. ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। ॐ सर्पेभ्यो स्वाहा। इदं सर्पेभ्यो न मम।

अनेन होमेन इन्द्रादिदशदिगपालाः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम।

2.7 अथ प्रधान होमः

प्रधान होम (सप्तशती होम) के विषय में ध्यान दे –

प्रधान आहुतियों में प्रयुक्त द्रव्य के विषय में देवीरहस्य और मारीचकल्पतन्त्र में यह कहा गया है –

'गर्ज गर्जेति मन्त्रेण सुरां दद्यात्प्रयत्नतः। अथवा माक्षिकं दद्याद्विशेषेण सुरेश्वरि।।'

अर्थात् हे सुरेश्वरि! हवन के समय गर्ज गर्ज (3.38) इस मन्त्र से प्रयत्न पूर्वक सुरा की आहुति दे अथवा विशेष तौर पर शहद की आहुति दे।

'शूलेनेति चतुर्मन्त्रैर्नाहुतिं कश्चिदाचरेत्। यदि मोहाच्चरेद्वापि तस्य नाशो न संशयः।।'

अर्थात् शूलेन इत्यादि तैरस्मान्रक्ष तक के चार मन्त्रों (4.24-27) से कोई भी साधक शाकल्य की आहुति न दे। यदि कोई साधक मोह वश शाकल्य की आहुति देता है तो निश्चय ही वह नष्ट हो जायेगा। किन्तु

'महालक्ष्मीत्यनेनैव चतुर्धा हवनं चरेत्। एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैर्मन्त्रोणानेन साधकः।।
गन्धपुष्पाणि सन्दद्यात्पूजयेज्जगदम्बिकाम्।'

अर्थात् चारों श्लोक का पाठ कर '**ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा**' इस मन्त्र से ही चार सामान्य आहुति प्रदान करे। एवं स्तुता (4.29) मन्त्र से गन्ध और पुष्प की ही आहुति देकर जगदम्बिका का पूजन करे।

'ततः कोपं च मन्त्रेण मसिं दद्यान्महेश्वरि।।'

अर्थात् हे महेश्वरि! ततः कोपं (7.5) इस मन्त्र से मसी (कपूर युक्त काजल) की आहुति दे।

'मुखेन काली मन्त्रान्ते रक्तं दद्यात्पशोरपि। अथवा कपिकाष्ठं च विकल्पेनैव होमयेत्।।'

अर्थात् मुखेन काली (8.57) इस मन्त्र से पशु (बकरा अथवा भैंसा) के रक्त की आहुति दे अथवा विकल्प में लालचन्दन से हवन करे।

'भक्षयन्त्याश्च मनुना दाडिमीकुसुमेन च। ततोऽहमिति मन्त्रेण शाकं दद्यात्तथोत्तमम्।।'

अर्थात् भक्षयन्त्याश्च (11.44) इस मन्त्र से अनार अथवा अनार के पुष्प की आहुति दे। ततोऽहं (11.48) इस मन्त्र से शाक (पालक, सोआपालक, चौलाई) की आहुति दे।

'यदा यदेति मन्त्रेण सिद्धार्थानपि होमयेत्। तदन्ते हवनं कुर्यात्प्रतिश्लोकेन पायसैः।।'

अर्थात् इत्थं यदा यदा (11.54) इस मन्त्र से खीर का हवन करे। 11 वें अध्याय के अन्तिम मन्त्र (11.55) से भी खीर मिश्रित शाकल्य की ही आहुति दे। शेष समस्त श्लोकों से हवन पायस से ही करें।'

इनके बाद प्रत्येक अध्याय के अन्त में दी जानेवाली महा आहुति के बारे में विशेष बताये हैं। जो साधक मांस से परहेज नहीं करते हैं उन केलिये पहले बता रहे हैं –

'छागं तु प्रथमे दद्यात् द्वितीये माहिषं तथा। तृतीये कारणेनैव सर्वकामार्थसिद्धये।।'

अर्थात् प्रथम अध्याय के अन्त में बकरी का मांस, द्वितीय अध्याय के अन्त में भैंस का मांस, तृतीय अध्याय के अन्त में सकल कामनाओं की सिद्धि केलिये दारु की आहुति दे।

'चतुर्थे तूर्यमांसेन लक्ष्मीकामार्थसिद्धये। पंचमे शशमांसेन मोहनार्थं महेश्वरि।।'

अर्थात् हे महेश्वरि! चौथे अध्याय के अन्त में लक्ष्मी की प्राप्ति केलिये सूखा मांस और पांचवें अध्याय के अन्त में मोहन प्रयोग केलिये खरगोश के मांस की आहुति दे।

'षष्ठे च सप्तमे देवि खड्गेनैव हुनेत्तथा। अष्टमे तु महेशानि वन्यवाराहकेण च।।'

अर्थात् हे देवि! छठे और सातवें अध्याय के अन्त में गैंडे के मांस की आहुति दे और हे महेशानि! आठवें अध्याय के अन्त में जंगली सूअर के मांस़ की आहुति दे।

'नवमे मार्जारमांसेन दशमे गोधया तथा। रौद्रे कुक्कुटमांसेन सर्वकामार्थसिद्धये।।'

अर्थात् नौवें अध्याय के अन्त में समस्त कामनाओं की सिद्धि केलिये बिल्ली के मांस की आहुति दे, दसवें अध्याय का अन्त में गोह के मांस की आहुति दे और ग्यारहवें अध्याय के अन्त में मुर्गा के मांस की आहुति दे।

'आदित्ये तु महेशानि जम्बुकेन तथैव च। त्रयोदशेऽश्वमांसेन विधिना साधकोत्तमः।।'

अर्थात् हे महेशानि! बारहवें अध्याय के अन्त में सियार के मांस से आहुति दे और तेरहवें अध्याय के अन्त में घोड़े के मांस से हवन करें।

जिन साधकों को मांस से परहेज हैं (यानि प्रयोग नहीं करना चाहते हैं) उन केलिये विकल्प बता रहे हैं –

'प्रथमे मधुना कुर्याद् द्वितीये गुग्गुलेन च। तृतीये च प्रकर्तव्य माहिषेण घृतेन च।।'

अर्थात् प्रथम अध्याय के अन्त में शहद, द्वितीय अध्याय के अन्त में गुग्गुल, तृतीय अध्याय के अन्त में भैंस के घी की आहुति दे।

'शक्रादीनां स्तुतौ कुर्याद् गन्धाक्षतसमन्वितैः। कदली वेक्षुदण्डैश्च बबाण षष्ठे च सप्तमे।।'

अर्थात् चौथे अध्याय के अन्त में मिश्रित गन्ध व अक्षत और पांचवें, छठे और सातवें अध्याय के अन्त में पके केले के टुकड़े अथवा गन्ने की आहुति दे।

'रक्तबीजवधे कुर्याद् रक्तचन्दनमिश्रितम्। कुर्याद्धोमं प्रयत्नेन नानाद्रव्यैः समन्वितम्।।'

अर्थात् आठवें अध्याय के अन्त में नाना सुगन्धित द्रव्यों से युक्त लाल चन्दन के चूरे की आहुति दे।

'नवमे दशमे चैव नारायणिस्तुतौ तथा। गन्धपुष्पैः प्रकर्तव्यं पायसेन समन्वितम्।।'

अर्थात् नौवे, दसवें और ग्यारहवें अध्याय के अन्त में खीर से युक्त गन्ध और पुष्प से आहुति दे।

'शतपत्रैश्च कर्तव्यं गोरोचनसमन्वितम्। द्वादशे त्रयोदशे चैव कर्तव्यं तु यथाविधिः।।'

अर्थात् बारहवें और तेरहवें अध्याय के अन्त में गोरोचन मिश्रित गेंदे के पत्तों से हवन करें।

तत्पश्चात् रहस्यादि के विषय में कहा गया है कि –

'पंचखाद्येन कर्तव्यं रहस्यादि यथाक्रमम्। एतत्क्रमेण कर्तव्यं द्रव्यं चैव मनोहरम्।।'

अर्थात् तीनों रहस्यों के मन्त्रों से तिल, जौ, चावल, चीनी और घी – इन पांच खाद्यों का ही आहुति दें। इस क्रम से ही मनोहर द्रव्यों को संपादन कर हवन करना चाहिये।

'आद्यन्ते च प्रकर्तव्यं पायसं शर्करान्वितम्। नीलव्रीहियवश्चैव होतव्यं च घृताप्लुतम्।।
अन्यथा कुरुते यस्तु तत्सर्वं निष्फलं भवेत्।।'

अर्थात् आदि और अन्त में नवार्ण मन्त्र की आहुति में चीनी और घी से मिश्रित तिल, चावल और जौ की आहुति दें। इसके विपरीत जो साधक हवन करता है उसके समस्त कार्य निष्फल होते हैं।

विशेष सूचना:- साधकों की सुविधा केलिये लोकाचार और उक्त के अनुसार हवन को करने में त्रुटि न हो इसलिये प्रत्येक मन्त्र में सुनिश्चित आहुति द्रव्य को मन्त्र से पहले दर्शाया जा रह है। दर्शायी गयी सामग्री को अर्ध्वयु/यजमान/प्रतिनिधि द्वारा ही डाला जायेगा। शेष उपस्थित होतृगण और आहुति देने वाले अन्य सभी केवल शाकल्य की ही आहुति देंगे।

।। मधुकैटभ वधः ।।

।। प्रथमाध्याये आहुतयः ।।

अथ विनियोगः –

ॐ अस्य प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, महाकाली देवता, नन्दा शक्तिः, रक्तदन्तिका बीजम्, अग्निस्तत्त्वम्, ऋग्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थे प्रथमचरित्रहोमे विनियोगः।

(जल छोड़े)

अथ ध्यानम् :-

खड्गं चक्रगदेशुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शंखं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वांगभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां,
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।। ॐ महाकाल्यै नमः।

1. लाजा (खील)।

ॐ ऐं मार्कण्डेय उवाच।।1।।

2. अर्क (आंक)

सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः। निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो मम ।।2।।

3. अर्क।

महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः। स बभूव महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः।।3।।

4. पायस (खीर), घृत (घी)।

स्वरोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः। सुरथो नाम राजाऽभूत् समस्ते क्षितिमण्डले।।4।।

5. अपामार्ग, शमी।

तस्य पालयतः सम्यक्प्रजाः पुत्रानिवौरसान्। बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसनस्तथा।।5।।

6. कुशा, शमी।

तस्य तैरभवद् युद्धमतिप्रबलदण्डिनः। न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः।।6।।

7. खदिर (खैर)।

ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत्। आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः।।7।।

8. पायस (खीर), घृत (घी)।

अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः। कोषो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः।।8।।

9. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततो मृगया व्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः। एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम्।।9।।

10. दूर्वा, कुशा।

स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः। प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिरष्योपशोभितम्।।10।।

11. पायस (खीर), घृत (घी)।

तस्थौ कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः। इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन् मुनिवराश्रमे।।11।।

12. पायस (खीर), घृत (घी)।

सोऽचिन्तयत् तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः। मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत्।।12।।

13. पायस (खीर), घृत (घी)।

मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा। न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः।।13।।

14. पायस (खीर), घृत (घी)।

मम वैरिवशं यातः कान्भोगानुपलप्स्यते। ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः।।14।।

15. पायस (खीर), घृत (घी)।

अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम्। असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम्।।15।।

16. पायस (खीर), घृत (घी)।

संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति। एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः।।16।।

17. पायस (खीर), घृत (घी)।

तंत्र विप्राश्रमाभ्यासे वैश्यमेकं ददर्श सः। स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः।।17।।

18. पायस (खीर), घृत (घी)।

सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे। इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम्।।18।।

19. पायस (खीर), घृत (घी)।

प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम्।।19।।

20. शाकल्य।

वैश्य उवाच।।20।।

21. पायस (खीर), घृत (घी)।

समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले।।21।।

22. पायस (खीर), घृत (घी)।

पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः। विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम्।।22।।

23. पायस (खीर), घृत (घी)।

वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः। सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम्।।23।।

24. पायस (खीर), घृत (घी)।

प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः। किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम्।।24।।

25. पायस (खीर), घृत (घी)।

कथं ते किं नु सद्वृत्ताः दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः।।25।।

26. गोरोचन, चन्दन।

राजोवाच।।26।।

27. पायस (खीर), घृत (घी)।
यैर्निरस्तो भवांल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः।।27।।

28. पायस (खीर), घृत (घी)।
तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम्।।28।।

29. शाकल्य।
वैश्य उवाच।।29।।

30. पायस (खीर), घृत (घी)।
एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः।।30।।

31. पायस (खीर), घृत (घी)।
किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः। यैः सन्त्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः।।31।।

32. पायस (खीर), घृत (घी)।
पतिस्वजनहार्दं च हार्दि तेष्वेव मे मनः। किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते।।32।।

33. पायस (खीर), घृत (घी)।
यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु। तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते।।33।।

34. पायस (खीर), घृत (घी)।
करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम्।।34।।

35. लाजा (खील)।
मार्कण्डेय उवाच।।35।।

36. पायस (खीर), घृत (घी)।
ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ। समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः।।36।।

37. पायस (खीर), घृत (घी)।
कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम्।।37।।

38. पायस (खीर), घृत (घी)।
उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ।।38।।

39. गोरोचन, चन्दन।

राजोवाच।।39।।

40. पायस (खीर), घृत (घी)।

भगवांस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत्।।40।।

41. पायस (खीर), घृत (घी)।

दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना। ममत्वं गतराज्यस्य राज्यांगेष्वखिलेष्वपि।।41।।

42. पायस (खीर), घृत (घी)।

जानतोऽपि यथाऽज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम। अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः।।42।।

43. लौंग।

स्वजनेन च सन्त्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति। एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ।।43।।

44. लौंग।

दृष्टदोषोऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ। तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि।।44।।

45. लौंग।

ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता।।45।।

46. लौंग।

ऋषिरुवाच ।।46।।

47. पायस (खीर), घृत (घी)।

ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे।।47।।

48. पायस (खीर), घृत (घी)।

विषयश्च महाभाग याति चैवं पृथक्पृथक्। दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रान्धास्तथापरे।।48।।

49. पायस (खीर), घृत (घी)।

केचिद् दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः। ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किन्नु ते न हि केवलम्।।49।।

50. पायस (खीर), घृत (घी)।

यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः। ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम्।।50।।

51. चावल, जौ।

मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः। ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतंगाञ्छावचंचुषु।।51।।

52. पायस (खीर), घृत (घी)।

कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा। मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान्प्रति।।52।।

53. पायस (खीर), घृत (घी)।

लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेतान् किन्न पश्यसि। तथापि ममतावर्ते मोहगर्ते निपातिताः।।53।।

54. विजया (भांग)।

महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा। तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः।।54।।

55. विजया (भांग), छोटी इलायची।

महामाया हरेश्चैतत्तथा संमोह्यते जगत्। ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।।55।।

56. शर्करा (चीनी)।

बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति। तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम्।।56।।

57. पायस (खीर), घृत (घी)।
सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये। सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी।।57।।

58. पायस (खीर), घृत (घी)।
संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी।।58।।

59. गोरोचन, चन्दन।
राजोवाच।।59।।

60. पायस (खीर), घृत (घी)।
भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान्।।60।।

61. पायस (खीर), घृत (घी)।
ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज। यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा।।61।।

62. पायस (खीर), घृत (घी)।
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर।।62।।

63. लौंग।

ऋषिरुवाच।।63।।

64. पायस (खीर), घृत (घी)।

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम्।।64।।

65. पायस (खीर), घृत (घी)।

तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम। देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा।।65।।

66. मिश्री।

उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते। योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते।।66।।

67. पीपलपत्ता, कमलगट्टे।

आस्तीर्य शेषमभजत् कल्पान्ते भगवान् प्रभुः। तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ।।67।।

68. समुद्री झाग, उड़द।

विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ। स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः।।68।।

69. कमलगट्टे।

दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम्। तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः।।69।।

70. कमलगट्टे।

विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम्। विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।।70।।

71. कमलफूल, हल्दी।

निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः।।71।।

72. कमलफूल, हल्दी।

ब्रह्मोवाच।।72।।

73. कमलफूल।

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।।73।।

74. दूर्वा, कुशा।

सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता। अर्द्धमात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्य विशेषतः।74।

75. मिश्री।

त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा। त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।।75।।

76. पायस (खीर), घृत (घी)।

त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा। विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।।76।।

77. राई।

तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये। महाविद्या महामाया माहामेधा महास्मृतिः।।77।।

78. राई।

महामोहा च भवती महादेवी महेश्वरी। प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।।78।।

79. लाजा, मिश्री, शहद, सहदेवी।

कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा। त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिबोधलक्षणा।।79।।

80. पायस (खीर), घृत (घी)।

लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिःक्षान्तिरेव च। खड्गिनी शूलिनी घोरागदिनीचक्रिणी तथा।।80।।

81. पायस (खीर), घृत (घी)।
शंखिनी चापिनी बाणभुशुण्डी परिघायुधा। सौम्या सौम्यतराशेष सौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।।81।।

82. पायस (खीर), घृत (घी)।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी। यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।।82।।

83. राई, हल्दी, घृत।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा। यया त्वया जगत्स्रष्टा जगन्पात्यत्ति यो जगत्।83।

84. जायफल, भांग।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः। विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।।84।।

85. पायस (खीर), घृत (घी)।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत्। सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।85।

86. पायस (खीर), घृत (घी)।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ। प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।।86।।

87. विजया (भांग)।

बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ।।87।।

88. लौंग।

ऋषिरुवाच ।।88।।

89. कमलगट्टे।

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा।।89।।

90. पायस (खीर), घृत (घी)।

विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ। नेत्रास्यनासिका-बाहु-हृदयेभ्यस्तथोरसः।।90।।

91. पायस (खीर), घृत (घी)।

निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः। उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः।।91।।

92. रक्तगुंजा, राई।

एकार्णवेऽहिशयनात्ततः स ददृशे च तौ। मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ।।92।।

93. पायस (खीर), घृत (घी)।

क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ। समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः।।93।।

94. राई।

पंचवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः। तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ।।94।।

95. पायस (खीर), घृत (घी)।

उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम्।।95।।

96. शाकल्य।

भगवानुवाच।।96।।

97. पायस (खीर), घृत (घी)।

भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि।।97।।

98. पायस (खीर), घृत (घी)।

किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम।।98।।

99. लौंग।

ऋषिरुवाच।।99।।

100. कर्पूर।

वंचिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत्।।100।।

101. कमलगट्टे।

विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः। आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता।।101।।

102. लौंग।

ऋषिरुवाच।।102।।

103. शंखपुष्पी, गुग्गुल, शहद, केला।

तथेत्युक्त्वा भगवता शंखचक्रगदाभृता। कृत्वा चक्रेण वै छिन्ने जघने शिरसी तयोः।।103।।

104. कमलफूल।

एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्। प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते।।104।।

।। जय जय श्रीमार्कण्डेयमहापुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये प्रथमः। हरिः ॐ तत्सत्।
सत्याः सन्तु यजमानस्य (मम) कामाः।।

105. अथ प्रथमाध्यायस्य महाहुतिद्रव्याणि - स्वर्ण एवं रजत मुद्रा सहित नवरत्न, आभूषण, लौंग, पत्र, पुष्प, फल, पान, सुपारी, छोटी इलायची, जायफल और जावित्री। इन सामग्रियों को स्रुचि में रखकर खड़े होकर महाहुति दें।

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

ॐ सांगायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै, सशक्तिकायै, वाग्भवकूटबीजाधिष्ठात्र्यै प्रथमाध्यायाधिष्ठात्र्यै प्रथमचरित्राधिष्ठा त्र्यै च महाकाल्यै महाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।

आचमनीय में जल लेकर-

अनेन होमेन श्रीमार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये प्रथमाध्यायाधिष्ठात्री प्रथमचरित्राधिष्ठात्री च महाकाली सांगा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयताम् ।105।।

(जल छोड़े)

।।1 एका महाहुति सहित 49 एकोनपंचाशत् विशेषाहुतयः, समुदिताहुतयः 50 पंचाशत्।।
।। पंचपंचाशत्सामान्याहुतयश्च सहिता कुलसमुदिताहुतयः 105 पंचाधिकं शतं।।
।। मधुकैटभ वधः।। इति प्रथमाध्याये आहुतयः।।

।। महिषासुरसैन्य वधः ।।

।। द्वितीयाध्याये आहुतयः ।।

अथ विनियोगः -

ॐ अस्य मध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषिः, उष्णिक्छन्दः, महालक्ष्मी देवता, शाकम्भरी शक्तिः, दुर्गा बीजम्, वायुस्तत्त्वम्, यजुर्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थे मध्यमचरित्रहोमे विनियोगः।

अथ ध्यानम् :-

ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां,
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।। ॐ श्रीलक्ष्म्यै नमः।।

1. लौंग।
ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच।।1।।

2. जिमिकन्द, गुग्गुल।
देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा। महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे।।2।।

3. पायस (खीर), घृत (घी)।

तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम्। जित्वा च सकलान्देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः।।3।।

4. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम्। पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ।।4।।

5. पायस (खीर), घृत (घी)।

यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम्। त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम्।।5।।

6. पायस (खीर), घृत (घी)।

सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च। अन्येषां चाधिकारान्स स्वयमेवाधितिष्ठति।।6।।

7. पायस (खीर), घृत (घी)।

स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि। विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना।।7।।

8. पायस (खीर), घृत (घी)।

एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम्। शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम्।।8।।

(इदमधिकं - लौंग। ऋषिरुवाच।।8क।।)

9. पायस (खीर), घृत (घी)।

इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः। चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ।।9।।

10. नीम, गिलोय, आंवला, जायफल।

ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः। निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च।।10।।

11. पायस (खीर), घृत (घी)।

अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः। निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत।।11।।

12. कर्पूर।

अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव चर्वतम्। ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम्।।12।।

13. पायस (खीर), घृत (घी)।

अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्। एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा।।13।।

14. जटामांसि, विष्णुक्रान्ता।

यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्। याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा।।14।।

15. विष्णुक्रान्ता, आम्रफल, आम्रपत्र।

सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्। वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः।।15।।

16. पायस (खीर), घृत (घी)।

ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुलयोऽर्कतेजसा। वसूनाञ्च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका।।16।।

17. कर्पूर।

तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा। नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा।।17।।

18. रक्तचन्दन।

भ्रुवौ च सन्ध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च। अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा।।18।।

19. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम्। तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः।।19।।

(इदमधिकं - पायस (खीर), घृत (घी)।

ततो देवा ददुस्तस्यै स्वानि स्वान्यायुधानि च। ऊचुर्जयजयेत्युच्चैर्जयन्तीं ते जयैषिणः।।20।।)

20. लौंग।

शूलं शूलाद्विनिष्कृत्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्। चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाद्य स्वचक्रतः।।20।।

21. शंखपुष्पी।

शङ्खञ्च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः। मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेशुधी।।21।।

22. लौंग।

वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य कुलिशादमराधिपः। ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात्।।23।।

23. पायस (खीर), घृत (घी)।

कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ। प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम्।।24।।

24. पायस (खीर), घृत (घी)।

समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन्दिवाकरः। कालश्च दत्तवान्खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम्।।25।।

25. पुष्प, शाकल्य।

क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे। चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च।।26।।

26. पायस (खीर), घृत (घी)।
अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु। नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम्।।27।।

27. स्वर्णमुद्रा, अंगूठी।
अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च। विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुञ्चातिनिर्मलम्।।27।।

28. कर्पूर।
अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम्। अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम्।।28।।

29. कमलगट्टे।
अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम्। हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च।।29।।

30. शहद।
ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः। शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम्।।30।।

31. पायस (खीर), घृत (घी)।
नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम्। अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा।।31।।

32. पायस (खीर), घृत (घी)।
सम्मानिता ननादौच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः। तस्या नादेन घोरेण कुत्स्नमापूरितं नभः।।32।।

33. पायस (खीर), घृत (घी)।
अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत्। चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे।।33।।

34. पायस (खीर), घृत (घी)।
चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः। जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम्।।34।।

35. पायस (खीर), घृत (घी)।
तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः। दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः।।35।।

36. पायस (खीर), घृत (घी)।
सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः। आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः।।36।।

37. पायस (खीर), घृत (घी)।
अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः। स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयं त्विषा।।37।।

38. पायस (खीर), घृत (घी)।

पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बरम्। क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम्।।38।।

39. पायस (खीर), घृत (घी)।

दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद्व्याप्य संस्थिताम्। ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम्।।39।।

40. पायस (खीर), घृत (घी)।

शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम्। महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः।।40।।

41. पायस (खीर), घृत (घी)।

युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः। रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः।।41।।

42. पायस (खीर), घृत (घी)।

अयुध्यतायुतानाञ्च सहस्रेण महाहनुः। पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः।।42।।

43. पायस (खीर), घृत (घी)।

अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे। गजवाजिसहस्रौघैरनेकैरुग्रदर्शनः।।43।।

44. पायस (खीर), घृत (घी)।

वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत। बिडालाक्षोऽयुतानाञ्च पञ्चाशद्भिरथायुतैः।।44।।

(इदमधिकं - पायस (खीर), घृत (घी)।

वृतः कालो रथानाञ्च रणे पञ्चाशतायुतैः। युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः।।44क।।)

45. पायस (खीर), घृत (घी)।

युयुधे संयुगे तत्र तावद्भिः परिवारितः। अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृतः।।45।।

46. पायस (खीर), घृत (घी)।

युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः। कोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा।।46।।

47. पायस (खीर), घृत (घी)।

हयानाञ्च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः। तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा।।47।।

48. पायस (खीर), घृत (घी)।

युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः। केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे।।48।।

49. पायस (खीर), घृत (घी)।
देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमतुः। सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका।।49।।

50. पायस (खीर), घृत (घी)।
लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी। अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः।।50।।

51. पायस (खीर), घृत (घी)।
मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी। सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी।।51।।

52. पायस (खीर), घृत (घी)।
चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः। निःश्वासान्मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका।।52।।

53. पायस (खीर), घृत (घी)।
त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्रशः। युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः।।53।।

54. पायस (खीर), घृत (घी)।
नाशयन्तोऽसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः। अवादयन्त पटहान् गणाः शंखांस्तथापरे।।54।।

55. पायस (खीर), घृत (घी)।

मृदंगाश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे। ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः।।55।।

56. पायस (खीर), घृत (घी)।

खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान्। पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान्।।56।।

57. हरताल।

असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्। केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे।।57।।

58. पायस (खीर), घृत (घी)।

विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते। वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः।।58।।

59. पायस (खीर), घृत (घी)।

केचिन्निपातिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि। निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे।।59।।

60. सरसों।

शैलानुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः। केषाञ्चिद्बाहवश्छिन्नग्रीवास्तथापरे।।60।।

61. पायस (खीर), घृत (घी)।

शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः। विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरूर्व्यां महासुराः।।61।।

62. पायस (खीर), घृत (घी)।

एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधा कृताः। छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः।।62।।

63. कटहल।

कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः। ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः।।63।।

64. कटहल, पेठा।

कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः। तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः।।64।।

(इदमधिकं - पायस (खीर), घृत (घी)। रुधिरौघविलुप्ताङ्गाः संग्रामे लोमहर्षणे।।64क।।)

65. पायस (खीर), घृत (घी)।

पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा। अगम्या साऽभवत् तत्र यत्राभूत्स महारणः।।65।।

66. पायस (खीर), घृत (घी)।

शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र विसुस्रुवुः। मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम्।।66।।

67. कर्पूर, दर्भ, सफेद चन्दन, राई।

क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका। निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम्।।67।।

68. पायस (खीर), घृत (घी)।

स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेसरः। शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति।।68।।

69. बिल्वफल, गुग्गुल।

देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं तथाऽसुरैः। यथैषां तुतुषुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि।।69।।

।। जय-जय श्रीमार्कण्डेयमहापुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये द्वितीयः। हरिः ॐ तत्सत्। सत्याः सन्तु यजमानस्य (मम) कामाः।।

70. अथ द्वितीयाध्यायस्य महाहुतिद्रव्याणि - स्वर्ण एवं रजत मुद्रा सहित नवरत्न, आभूषण, लौंग, पत्र, पुष्प, फल, पान, सुपारी, छोटी इलायची, जायफल और जावित्री। इन सामग्रियों को स्रुचि में रखकर खड़े होकर महाहुति दें।

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

ॐ सांगायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै, सशक्तिकायै, द्वितीयाध्यायाधिष्ठात्र्यै च लक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।

आचमनीय में जल लेकर-

अनेन होमेन श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये द्वितीयाध्यायाधिष्ठात्री लक्ष्मी सांगा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयताम् ।।70।।

(जल छोड़े)

।।1 एका महाहुति सहित 22 द्वाविंशति विशेषाहुतयः, समुदिताहुतयः 23 त्रयोविंशतिः।।

।। 47 सप्तचत्वारिंशत्सामान्याहुतयश्च सहिता कुलसमुदिताहुतयः 70 सप्ततिः।।

।। महिषासुरसैन्यवधः।। इति द्वितीयोऽध्यायः।।

।। महिषासुर वधः।।

।। तृतीयाध्याये आहुतयः।।

अथ ध्यानम् -

उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां,
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं,
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम्।। ॐ श्रीविजयायै नमः।।

1. लौंग।
ऋषिरुवाच ।।1।।

2. पायस (खीर), घृत (घी)।
निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः। सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम्।।2।।

3. पायस (खीर), घृत (घी)।
स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः। यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः।।3।।

4. पायस (खीर), घृत (घी)।

तस्य च्छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान्। जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनम्।।4।।

5. पायस (खीर), घृत (घी)।

चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम्। विव्याध चैव गात्रेषु च्छिन्नधन्वानामाशुगैः।।5।।

6. नींबू।

स च्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः। अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः।।6।।

7. पायस (खीर), घृत (घी)।

सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्द्धनि। आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान्।।7।।

8. पायस (खीर), घृत (घी)।

तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य चफाल नृपनन्दन। ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः।।8।।

9. शृंगार, रत्न, आभूषण, मणि, कर्पूर, दर्पण, लौंग।

चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः। जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात्।।9।।

10. कागजी नींबू, लौंग।

दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत। तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः।।10।।

11. मैनशिल।

हते तस्मिन् महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ। आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः।।11।।

12. गुग्गुल।

सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम्। हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम्।।12।।

13. पायस (खीर), घृत (घी)।

भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः। चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत्।।13।।

14. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः। बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा।।14।।

15. पायस (खीर), घृत (घी)।

युध्यमानो ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ। युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः।।15।।

16. पालक।

ततो वेगात्खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा। करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम्।।16।।

17. शिलाजीत, मैनशिल।

उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः। दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः।।17।।

18. पायस (खीर), घृत (घी)।

देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्। वाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम्।।18।।

19. लौंग।

उग्रास्यमुग्रवीर्यञ्च तथैव च महाहनुम्। त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी।।19।।

20. सरसों।

बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः। दुर्द्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम्।।20।।

(अधिके द्वे - पायस (खीर), घृत (घी)।

कालं च कालदण्डेन कालरात्रिरपातयत्। उग्रदर्शनमत्युग्रैः खड्गपातैरताडयत्।।20क।।

पायस (खीर), घृत (घी)।

असिनैवासिलोमानमच्छिदत् सा रणोत्सवे। गणैः सिंहेन देव्या च जयक्ष्वेडाकृतोत्सवैः।।20ख।।)

21. **पायस (खीर), घृत (घी)।**

एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः। माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान्।।21।।

22. **पायस (खीर), घृत (घी)।**

कांश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान्। लाङ्गूलताडितांश्चान्यान् शृङ्गाभ्याञ्च विदारितान्।।22।।

23. **पायस (खीर), घृत (घी)।**

वेगेन कांश्चिदपरान् नादेन भ्रमणेन च। निःश्वासपवनेनान्यान् पातयामास भूतले।।23।।

24. **पायस (खीर), घृत (घी)।**

निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः। सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका।।24।।

25. **खिरनी (फैन्नी), पेड़ा।**

सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः। शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चैश्चिक्षेप च ननाद च।।25।।

26. गन्ना।

वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत। लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः।।26।।

27. सिंघाड़ा।

धुतशृङ्गविभिन्नश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः। श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः।।27।।

28. पायस (खीर), घृत (घी)।

इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्। दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत्।।28।।

29. हरताल।

सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम्। तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे।।29।।

30. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततः सिंहोऽभवत् सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः। छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत।।30।।

31. पायस (खीर), घृत (घी)।

तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः। तं खड्गचर्मणा सार्द्धं ततः सोऽभून्महागजः।।31।।

32. पायस (खीर), घृत (घी)।
करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च। कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत।।32।।

33. शर्करा, घृत, शहद (त्रिमधु)।
ततो महासुर भूयो माहिषं वपुरास्थितः। तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम्।।33।।

34. शर्करा, घृत, शहद (त्रिमधु)।
ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्। पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना।।34।।

35. पायस (खीर), घृत (घी)।
ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमहोद्धतः। विषाणाभ्याञ्च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान्।।35।।

36. वच।
सा च तान् प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः। उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम्।।36।।

37. रक्तकनेर, कमलफल, लौंग।
देव्युवाच ।।37।।

38. शहद।

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम्। मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः।।38।।

39. लौंग।

ऋषिरुवाच।।39।।

40. शिलाजीत, काली उड़द, गोखरू, काली मूसली, कालीकरौंजी, सरसों।

एवमुक्त्वा समुत्पत्य सारूढा तं महासुरम्। पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत्।।40।।

41. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततः सोऽपि पदाक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः। अर्द्धनिष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः।।41।।

42. सालम पंजा, मूसली, लौकी, पेठा, कालीमिर्च, लौंग, उड़द, लौकी/पेठा।

अर्द्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः। तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः।।42।।

(अधिके द्वे - पायस (खीर), घृत (घी)।

एवं स महिषो नाम ससैन्यः ससुहृद्गणः। त्रैलोक्यं मोहयित्वा तु तया देव्या विनाशितः।।42क।।

पायस (खीर), घृत (घी)।

त्रैलोक्यस्थैस्तदा भूतैर्महिषे विनिपातिते। जयेत्युक्तं ततः सर्वैः सदेवासुरमानवैः।।42ख।।)

43. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत्। प्रहर्षञ्च परं जग्मुः सकला देवतागणाः।।43।।

44. गुलाल।

तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः। जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः।।44।।

।।जय जय श्रीमार्कण्डेयमहापुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये तृतीयः। हरिः ॐ तत्सत्। सत्याः सन्तु यजमानस्य (मम) कामाः।।

45. अथ तृतीयाध्यायस्य महाहुतिद्रव्याणि-स्वर्ण एवं रजत मुद्रा सहित नवरत्न, आभूषण, लौंग, पत्र, पुष्प, फल, पान, सुपारी, छोटी इलायची, जायफल और जावित्री। इन सामग्रियों को स्रुचि में रखकर खड़े होकर महाहुति दें।

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

ॐ सांगायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै, सशक्तिकायै, तृतीयाध्यायाधिष्ठात्र्यै विजयायै महाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।

आचमनीय में जल लेकर-

अनेन होमेन श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये तृतीयाध्यायाधिष्ठात्री विजया सांगा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयताम्।।45।। (जल छोड़ें)

।।1 एका महाहुति सहित 19 एकोनविंशतिविशेषाहुतयः, समुदिताहुतयः 20 विंशतिः।

।। 25 पंचविंशतिसामान्याहुतयश्च सहिता कुलसमुदिताहुतयः 45 पंचचत्वारिंशत्।।

।। महिषासुर वधः।। इति तृतीयोऽध्यायः।।

।। शक्रादिस्तुतिः ।।

।। चतुर्थाध्याये आहुतयः ।।

अथ ध्यानम् -

कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां,
शंखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं,
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ।। ॐ श्रीदुर्गायै नमः ।।

1. **लौंग।**
ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच।।1।।
(इदमधिकं - पायस (खीर), घृत (घी)।
ततः सुरगणाः सर्वे देव्या इन्द्रपुरोगमाः। स्तुतिमारेभिरे कर्तुं निहते महिषासुरे।।1क।।)

2. **पायस (खीर), घृत (घी)।**
शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये, तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या।

तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा, वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः।।2।।
(इदमधिकं - पायस (खीर), घृत (घी)। देवा ऊचुः ।।2क।।)

3. केला।

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या, निःशेषदेवगणशक्ति समूहमूर्त्या।
ताममम्बिकामखिलदेव महर्षिपूज्यां, भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः।।3।।

4. केसर।

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो, ब्रह्म हरश्च नहि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय, नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु।।4।।

5. विष्णुक्रान्ता, बिल्वफल।

या श्रीः स्वयं सुकृतीनां भवनेष्वलक्ष्मीः, पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धां सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा, तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।5।।

6. पायस (खीर), घृत (घी)।

किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्, किं चातिवीर्यमसारक्षयकारि भूरि।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्‌भुतानि, सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु।।6।।

7. बिल्वफल।

हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषैर्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूतमव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या।।7।।

8. हलुवा, मालपूवा, पक्वन्नादि, श्वेतचन्दन।

यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन, तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि।
स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतुरुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च।।8।।

9. पायस (खीर), घृत (घी)।

या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्वमभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषैर्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि।।9।।

10. कर्पूर।

शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधानमुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम्।
देवी त्रयी भगवती भवभावनाय, वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री।।10।।

11. ब्राह्मी, कर्पूर।

मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा, दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा, गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा।।11।।

12. बीजौरा नींबू।

ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्रबिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम्।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण।।12।।

13. पायस (खीर), घृत (घी)।

दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकरालमुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रंकैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन।।13।।

14. रक्तकनेरपुष्प।

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय, सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य।।14।।

15. पायस (खीर), घृत (घी)।

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां, तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा, येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना।।15।।

16. पायस (खीर), घृत (घी)।

धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन।।16।।

17. पायस (खीर), घृत (घी)।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः, स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।।17।।

18. पायस (खीर), घृत (घी)।

एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते, कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु, मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि।।18।।

19. पायस (खीर), घृत (घी)।

दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म, सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम्।
लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि शस्त्रपूता, इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी।।19।।

20. पायस (खीर), घृत (घी)।

खड्ग प्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः, शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम्।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्डयोग्याननं तव विलोकयतां तदेतत्।।20।।

21. पायस (खीर), घृत (घी)।

दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं, रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः।
वीर्यं च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां, वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम्।।21।।

22. पायस (खीर), घृत (घी)।

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य, रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा, त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि।।22।।

23. कमलगट्टे, रक्तकनेरपुष्प, कद्दू, सरीफा।

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन, त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते।।23।।

24. हाथ जोड़े, आहुति नहीं डालनी है।

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके। घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।24।।

25. हाथ जोड़े, आहुति नहीं डालनी है।

प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे। भ्रमणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।।25।।

26. हाथ जोड़े, आहुति नहीं डालनी है।

सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते। यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।।26।।

27. हाथ जोड़े, आहुति नहीं डालनी है।
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके। करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मिन् रक्ष सर्वतः।।27।।
अब चार बार केवल 'घी' की आहुति देनी है "**ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा**" मन्त्र से।

28. लौंग।
ऋषिरुवाच।।28।।

29. हल्दी, चन्दन, इत्र, सुगन्धितद्रव्य।
एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः। अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः।।29।।

30. गुग्गुल, अष्टांगधूप।
भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता। प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान्।।30।।

31. कमलफूल, लौंग।
देव्युवाच।।31।।

32. पायस (खीर), घृत (घी)।

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम्।।32।।

(इदं सार्धश्लोकमधिकं – पायस (खीर), घृत (घी)।

ददाम्यहमतिप्रीत्या स्तवैरेभिः सुपूजिता। कर्तव्यमपरं यच्च दुष्करं तन्न विद्महे।।32क।।

इत्याकर्ण्य वचो देव्याः प्रत्यूचुस्ते दिवौकसः।)

33. शाकल्य।

देवा ऊचुः।।33।।

34. राई, गुग्गुल।

भगवत्या कृतं सर्वं न किञ्चिदवशिष्यते।।34।।

35. गुग्गुल, जायफल।

यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः। यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि।।35।।

36. पंचमेवा, मिश्री, गुग्गुल, गुलकन्द।

संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः। यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने।।36।।

37. बिल्वफल।

तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम्। वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके।।37।।

38. लौंग।

ऋषिरुवाच।।38।।

39. नाना प्रकार के पुष्प।

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः। तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप।।39।।

40. पायस (खीर), घृत (घी)।

इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा। देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी।।40।।

41. भोजपत्र, रक्तकनेरपुष्प।

पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत्। वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः।।41।।

42. आंवला, मधु, धूप, गुग्गुल।

रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी। तच्छृणु व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते।।42।।

।। जय जय श्रीमार्कण्डेयमहापुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये चतुर्थः। हरिः ॐ तत्सत्।
सत्या सन्तु यजमानस्य (मम) कामाः।।

43. अथ चतुर्थाध्यायस्य महाहुतिद्रव्याणि - स्वर्ण एवं रजत मुद्रा सहित नवरत्न, आभूषण, लौंग, पत्र, पुष्प, फल, पान, सुपारी, छोटी इलायची, जायफल और जावित्री। इन सामग्रियों को स्रुचि में रखकर खड़े होकर महाहुति दें।

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

ॐ सांगायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै, सशक्तिकायै, कामकूटबीजाधिष्ठात्र्यै चतुर्थाध्यायाधिष्ठात्र्यै दुर्गायै मध्यम-चरित्राधिष्ठात्र्यै महालक्ष्म्यै च महाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।

आचमनीय में जल लेकर-

अनेन होमेन श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये कामकूटबीजाधिष्ठात्री चतुर्थाध्यायाधिष्ठात्री दुर्गा मध्यमचरित्राधिष्ठात्री महालक्ष्मी च सांगाभ्याम् सपरिवाराभ्याम् सायुधाभ्याम् सशक्तिकाभ्याम् सवाहनाभ्याम् प्रीयेताम्।।43।। (जल छोड़)

।।1 एका महाहुति सहित 22 द्वाविंशतिविशेषाहुतयः, समुदिताहुतयः 23 त्रयेविंशतिः।
।। 20 विंशतिसामान्याहुतयश्च सहिता कुलसमुदिताहुतयः 43 त्रयश्चत्वारिंशत्।।

।। शक्रादि स्तुतिः।। इति चतुर्थोऽध्यायः।।

।। देव्या दूतसंवादः ।।

।। पंचमाध्याये आहुतयः ।।

अथ विनियोगः -

ॐ अस्य श्री उत्तरचरित्रस्य रुद्र ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, महासरस्वती देवता, भीमा शक्तिः, भ्रामरी बीजम्, सूर्यस्तत्त्वम्, सामवेदः स्वरूपम्, श्रीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे उत्तरचरित्रहोमे विनियोगः।

अथ ध्यानम् :-

ॐ घण्टाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुःसायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।। ॐ श्री धूम्राक्ष्यै नमः।।

1. लौंग।
ॐ क्लीं ऋषिरुवाच।।1।।

2. पायस (खीर), घृत (घी)।
पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः। त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात्।।2।।

3. पायस (खीर), घृत (घी)।

तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम्। कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च।।3।।

4. पायस (खीर), घृत (घी)।

तावेव पवनर्द्धिंच चक्रतुर्वह्निकर्म च।

(अन्येषाञ्चाधिकारान्स स्वयमेवाधितिष्ठति - इत्यधिकं क्वचित्)

ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः।।4।।

5. पायस (खीर), घृत (घी)।

हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः। महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजितम्।।5।।

6. शाकल्य।

तयास्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताखिलाः। भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः।।6।।

7. विष्णुक्रान्ता।

इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम्। जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः।।7।।

8. शाकल्य।

देवा ऊचुः।।8।।

9. गुग्गुल, पायस (खीर), घृत (घी)।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।9।।

10. हल्दी, आंवला, भोजपत्र, गुग्गुल।

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः। (नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः। - इत्यधिकं क्वचित्)

ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः।।10।।

11. शाकल्य।

कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः। नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः।।11।।

12. कुशा, दूर्वा।

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै। ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः।।12।।

13. दारुहल्दी।

अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः। नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः।।13।।

14. विष्णुक्रान्ता।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता। नमस्तस्यै।।14।।

15. विष्णुक्रान्ता।
नमस्तस्यै।।15।।

16. विष्णुक्रान्ता।
नमस्तस्यै नमो नमः।।16।।

17. आंवला।
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते। नमस्तस्यै।।17।।

18. आंवला।
नमस्तस्यै।।18।।

19. आंवला।
नमस्तस्यै नमो नमः।।19।।

20. ब्राह्मी।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।।20।।

21. ब्राह्मी।
नमस्तस्यै।।21।।

22. ब्राह्मी।
नमस्तस्यै नमो नमः।।22।।

23. नीमगिलोय, कालीहल्दी।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 23।।

24. नीमगिलोय, कालीहल्दी।
नमस्तस्यै।।24।।

25. नीमगिलोय, कालीहल्दी।
नमस्तस्यै नमो नमः।।25।।

26. पंचमेवा।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 26।।

27. पंचमेवा।
नमस्तस्यै।।27।।

28. पंचमेवा।
नमस्तस्यै नमो नमः।।28।।

29. शतावरी।
या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 29।।

30. शतावरी।
नमस्तस्यै।।30।।

31. शतावरी।
नमस्तस्यै नमो नमः।।31।।

32. सोंठ, जायफल।
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 32।।

33. सोंठ, जायफल।
नमस्तस्यै।।33।।

34. सोंठ, जायफल।
नमस्तस्यै नमो नमः।।34।।

35. गुलाबजल, ठंड़ाई।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 35।।

36. गुलाबजल, ठंड़ाई।
नमस्तस्यै।।36।

37. गुलाबजल, ठंड़ाई।
नमस्तस्यै नमो नमः।।37।।

38. पायस (खीर), घृत (घी)।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 38।।

39. पायस (खीर), घृत (घी)।
नमस्तस्यै।।39।।

40. पायस (खीर), घृत (घी)।
नमस्तस्यै नमो नमः।।40।।

41. पायस (खीर), घृत (घी)।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 41।।

42. पायस (खीर), घृत (घी)।
नमस्तस्यै।।42।।

43. पायस (खीर), घृत (घी)।
नमस्तस्यै नमो नमः।।43।।

44. लाजा (खील), पुष्प।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 44।।

45. लाजा (खील), पुष्प।
नमस्तस्यै।।45।।

46. लाजा (खील), पुष्प।
नमस्तस्यै नमो नमः।।46।।

47. कमलफूल।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 47।।

48. कमलफूल।
नमस्तस्यै।।48

49. कमलफूल।
नमस्तस्यै नमो नमः।।49।।

50. कमलफूल।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 50।।

51. कमलफूल।
नमस्तस्यै।।51।।

52. कमलफूल।
नमस्तस्यै नमो नमः।।52।।

53. अभ्रक, अभीर, कुकुंम, गुलाल।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 53।।

54. अभ्रक, अभीर, कुकुंम, गुलाल।
नमस्तस्यै।।54।।

55. अभ्रक, अभीर, कुकुंम, गुलाल।
नमस्तस्यै नमो नमः।।55।।

56. बिल्वफल, कमलगट्टे।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 56।।

57. बिल्वफल, कमलगट्टे, मिश्री।
नमस्तस्यै।।57

58. बिल्वफल, कमलगट्टे, मिश्री।
नमस्तस्यै नमो नमः।।58।।

59. त्रिमधु।
या देवी सर्वभूतेरूषु वृत्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 59।।

60. त्रिमधु।
नमस्तस्यै।।60।।

61. त्रिमधु।
नमस्तस्यै नमो नमः।।61।।

62. ब्राह्मी, विजया।
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 62।।

63. ब्राह्मी, विजया।
नमस्तस्यै।।63।।

64. ब्राह्मी, विजया।
नमस्तस्यै नमो नमः।।64।।

65. सहदेवी।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 65।।

66. सहदेवी।
नमस्तस्यै।।66।।

67. सहदेवी।
नमस्तस्यै नमो नमः।।67।।

68. मालपुए, पक्वान्न।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 68।।

69. मालपुए, पक्वान्न।
नमस्तस्यै।।69।।

70. मालपुए, पक्वान्न।
नमस्तस्यै नमो नमः।।70।।

71. लालकनेर, केसर।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 71।।

72. लालकनेर, केसर।
नमस्तस्यै।।72।।

73. लालकनेर, केसर।
नमस्तस्यै नमो नमः।।73।।

74. पायस (खीर), घृत (घी)।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।। 74।।

75. पायस (खीर), घृत (घी)।
नमस्तस्यै।।75।।

76. पायस (खीर), घृत (घी)।
नमस्तस्यै नमो नमः।।76।।

77. पायस (खीर), घृत (घी)।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या। भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः।।77।।

78. पायस (खीर), घृत (घी)।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्। नमस्तस्यै।।78।।

79. पायस (खीर), घृत (घी)।
नमस्तस्यै।।79।।

80. पायस (खीर), घृत (घी)।

नमस्तस्यै नमो नमः।।80।।

81. मिश्री।

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेशु सेविता।

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।81।।

82. गुग्गुल।

या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।

या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः।।82।।

83. लौंग।

ऋषिरुवाच।।83।।

84. गंगाजल, गुलाबजल और जावित्री।

एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती। स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन।।84।।

85. दालचीनी।

साऽब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का। शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा।।85।।

86. भोजपत्र।

स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः। देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः।।86।।

87. जावित्री, भोजपत्र, दालचीनी।

शरीरकोशाद्यत्तस्या पार्वत्या निःसृताम्बिका। कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते।।87।।

88. दारूहल्दी।

तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती। कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया।।88।।

89. आम्रफल, आम्रपल्लव, सिराली।

ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम्। ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यै शुम्भनिशुम्भयोः।।89।।

90. पायस (खीर), घृत (घी)।

ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा। काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम्।।90।।

91. पायस (खीर), घृत (घी)।

नैव तादृक्क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम्। ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर।।91।।

92. कर्पूर।

स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा। सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान्द्रष्टुमर्हति।।92।।

93. रत्न, आभूषण, मणि।

यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो। त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे।।93।।

94. बिल्वफल।

ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात्। पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः।।94।।

95. रक्तगुंजा, आभूषण।

विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गने। रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम्।।95।।

96. कमलगट्टे।

निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्। किंजल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालाम्लानपंकजाम्।।96।।

97. भोजपत्र, कमलफूल।

छत्रं ते वारुणं गेहे कांचनस्रावि तिष्ठति। तथायं स्यन्दनवरो यः पुरासीत्प्रजापतेः।।97।।

98. भोजपत्र।

मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता। पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे।।98।।

99. कमलगट्टे, भोजपत्र।

निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः। वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी।।99।।

100. पायस (खीर), घृत (घी)।

एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते। स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते।।100।।

101. लौंग।

ऋषिरुवाच।।101।।

102. पायस (खीर), घृत (घी)।

निशाम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः। प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरः।।102।।

(क्वचिद् - शुम्भ उवाच।।102क।।)

103. पायस (खीर), घृत (घी)।

इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम। यथा चाभ्येति संप्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु।।103।।

104. मैनशिल।

स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने। तां च देवीं ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा।।104।।

105. (मनसा) शाकल्य।

दूत उचाव।।105।।

106. पायस (खीर), घृत (घी)।

देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः। दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः।।106।।

107. पायस (खीर), घृत (घी)।

अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु। निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत्।।107।।

108. पायस (खीर), घृत (घी)।

मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः। यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक्पृथक्।।108।।

109. पायस (खीर), घृत (घी)।

त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः। तथैव गजरत्नं च हृत्वा देवेन्द्रवाहनम्।।109।।

110. पायस (खीर), घृत (घी)।

क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः। उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम्।।110।।

111. पायस (खीर), घृत (घी)।

यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च। रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने।।111।।

112. पायस (खीर), घृत (घी)।

स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम्। सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम्।।112।।

113. पायस (खीर), घृत (घी)।

मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्। भज त्वं चंचलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः।।113।।

114. लाजा।

परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात्। एतद्बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज।।114।।

115. लौंग।

ऋषिरुवाच।।115।।

116. ब्राह्मी, वच, खस, भोज पत्र, शमीपत्र, दूर्वा, पान, बेल।

इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ। दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत्।।116।।

117. रक्तकनेर, कमलफूल, शमीपत्र, लौंग, दूर्वा।

श्रीदेव्युवाच।।117।।

118. शमीपत्र।

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम्। त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः।।118।।

119. पायस (खीर), घृत (घी)।

किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम्। श्रूयतामल्पबुद्धित्वात् प्रतिज्ञा या कृता पुरा।।119।।

120. शिलाजीत, लाजा, बड़ी इलायची, लौंग, काजल, करौंजी।

यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति। यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति।।120।।

121. हिंगुल, पंचमेवा, लाजा, शमीपत्र।

तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः। मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु।।121।।

122. (मनसा) शाकल्य।

दूत उवाच।।122।।

123. पायस (खीर), घृत (घी)।

अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः। त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः।।123।।

124. पायस (खीर), घृत (घी)।

अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि। तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका।।124।।

125. इन्द्रजौ, जटामांसी।

इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे। शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम्।।125।।

126. जटामांसी।

सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः। केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि।।126।।

127. रक्तकनेर, कमलफूल, शमीपत्र, दूर्वा, लौंग।

श्रीदेव्युवाच।।127।।

128. पायस (खीर), घृत (घी)।

एवमेतद् बलो शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान्। किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा।।129।।

129. गन्ना (इक्षुदण्ड)।

स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः। तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत्।।129।।

।।जय जय श्रीमार्कण्डेयमहापुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये पंचमः। हरिःॐ तत्सत्। सत्याः सन्तु यजमानस्य (मम) कामाः।।

130. अथ पंचमाध्यायस्य महाहुतिद्रव्याणि-स्वर्ण एवं रजत मुद्रा सहित नवरत्न, आभूषण, लौंग, पत्र, पुष्प, फल, पान, सुपारी, छोटी इलायची, जायफल और जावित्री। इन सामग्रियों को स्रुचि में रखकर खड़े होकर महाहुति दें।

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

ॐ सांगायै, सपरिवारायै, सवाहनायै, सायुधायै, सशक्तिकायै, पंचमाध्यायाधिष्ठात्र्यै धूम्राक्ष्यै महाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।

आचमनीय में जल लेकर-

अनेन होमेन श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये पंचमाध्यायाधिष्ठात्री धूम्राक्षी सांगा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयताम्।।130।। (जल छोड़े)

।।1 एका महाहुति सहित 90 नवतिविशेषाहुतयः, समुदिताहुतयः 91 एकनवतिः।

।। 39 एकोनचत्वारिंशत्सामान्याहुतयश्च सहिता कुलसमुदिताहुतयः 130 त्रिंशदधिकं शतं।।

।। देव्या दूत संवादः।। इति पंचमोऽध्यायः।।

।। धूम्रलोचनवधः ।।

।। षष्ठाध्याये आहुतयः ।।

अथ ध्यानम् –

नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली–
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम्,
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां,
सर्वज्ञेश्वरभैरवांकनिलयां पद्मावतीं चिन्तये ।। ॐ श्रीधूमावत्यै नमः ।।

1. लौंग।
ऋषिरुवाच ।।1 ।।

2. पायस (खीर), घृत (घी)।
इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः। समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात् ।।2 ।।

3. पायस (खीर), घृत (घी)।
तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः। सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम् ।।3 ।।

4. राई, जटामांसी, गुग्गुल।

हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः। तामानय बलाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम्।।4।।

5. पायस (खीर), घृत (घी)।

तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः। स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा।।5।।

6. लौंग।

ऋषिरुवाच।।6।।

7. मसूर, जटामांसी।

तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः। वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ।।7।।

8. पायस (खीर), घृत (घी)।

स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम्। जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः।।8।।

9. जटामांसी।

न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति। ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम्।।9।।

10. रक्तकनेर, कमलफूल, शमीपत्र, दूर्वा, लौंग।

श्रीदेव्युवाच।।10।।

11. पायस (खीर), घृत (घी)।
दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः। बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम्।।11।।

12. लौंग।
ऋषिरुवाच।।12।।

13. सुरमा।
इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः। हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः।।13।।

14. उड़द, मसूर।
अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका। ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः।।14।।

15. पायस (खीर), घृत (घी)।
ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम्। पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः।।15।।

16. पायस (खीर), घृत (घी)।
कांश्चित्करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान्। आक्रम्य चाधरेणान्यान्स जघान महासुरान्।।16।।

17. केसर।

केषाञ्चित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी। तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक्।।17।।

18. केसर, राई, रक्तचन्दन।

विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे। पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः।।18।।

19. राई, रक्तचन्दन।

क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना। तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना।।19।।

20. केसर, राई।

श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम्। बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवी केसरिणा ततः।।20।।

21. पायस (खीर), घृत (घी)।

चुकोप दैतयाधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः।आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ।।21।।

22. पायस (खीर), घृत (घी)।

हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ। तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु।।22।।

23. राई, जटामांसी।

केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि। तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम्।।23।।

24. केसर, लौंग, इक्षुदण्ड (गन्ना)।

तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते। शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम्।।24।।

।। जय जय श्रीमार्कण्डेयमहापुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये षष्ठः। हरिः ॐ तत्सत्।

सत्याः सन्तु यममानस्य (मम) कामाः।।

25. **अथ षष्ठाध्यायस्य महाहुतिद्रव्याणि - स्वर्ण एवं रजत मुद्रा सहित नवरत्न, आभूषण, लौंग, पत्र, पुष्प, फल, पान, सुपारी, छोटी इलायची, जायफल और जावित्री।** इन सामग्रियों को स्रुचि में रखकर खड़े होकर महाहुति दें।

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

ॐ सांगायै, सपरिवारायै, सवाहनायै सायुधायै सशक्तिकायै षष्ठाध्यायाधिष्ठात्र्यै धूमावत्यै महाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।

आचमनीय में जल लेकर-

अनेन होमेन श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये षष्ठाध्यायाधिष्ठात्री धूमावती सांगा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयताम् ।।25।। (जल छोड़ें)

।।1 एका महाहुति सहित 15 पंचदशविशेषाहुतयः, समुदिताहुतयः 16 षोडश।।

।। 9 नवसामान्याहुतयश्च सहिता कुलसमुदिताहुतयः 25 पंचविंशतिः।।

।। धूम्रलोचनवधः।। इति षष्ठोऽध्यायः।।

।। चण्डमुण्डवधः ।।

।। सप्तमाध्याये आहुतयः ।।

अथ ध्यानम् –

ध्यायेयं रत्नपीठे शुकक्लपठितं शृण्वतीं श्यामलांगीं,
न्यस्तैकांघ्रीं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्।
कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां,
मातंगीं शंखपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम्।। ॐ श्रीचामुण्डायै नमः।

1. लौंग।

ऋषिरुवाच।।1।।

2. पायस (खीर), घृत (घी)।

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः। चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः।।2।।

3. स्वर्ण

ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम्। सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृंङ्गे महति कंचने।।3।।

4. पायस (खीर), घृत (घी)।

ते दृष्टा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः। आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः।।4।।

5. काजल, कस्तूरी, सरला, कालीहल्दी, शिलाजीत।

ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन् प्रति। कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा।।5।।

6. कालीमिर्च, शिलाजीत।

भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद् द्रुतम्। काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी।।6।।

7. रक्त व श्वेतचन्दन, कालीमिर्च, जिमीकन्द।

विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा। द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा।।7।।।

8. रक्तचन्दन, कुंकुम, केसर।

अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा। निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा।।8।।

9. पायस (खीर), घृत (घी)।

सा वेगेनाभिपतिता घातयन्तीमहासुरान्। सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम्।।9।।

10. पायस (खीर), घृत (घी)।

पार्ष्णिग्रहाङ्कुशग्राहि योधघण्टासमन्वितान्। समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान्।।10।।

11. पायस (खीर), घृत (घी)।

तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह। निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम्।।11।।

12. पीलीसरसों।

एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरान्। पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत्।।12।।

13. पायस (खीर), घृत (घी)।

तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः। मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि।।13।।

14. कालीहल्दी, कालीमिर्च।

बलिनां तद् बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम्। ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तथा।।14।।

15. वज्रदन्ती, गुग्गुल।

असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः। जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहता रणे।।15।।

16. पायस (खीर), घृत (घी)।

क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां निपातितम्। दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम्।।16।।

17. पायस (खीर), घृत (घी)।

शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः। छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः।।17।।

18. पायस (खीर), घृत (घी)।

तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम्। बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम्।।18।।

19. वज्रदन्ती, कर्पूर।

ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी। काली करालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला।।19।।

20. जटामांसि, दर्भ, दूर्वा, केला, सरसों।

उत्थाय च महासिंहं देवी चण्डमधावत। गृहीत्वा चास्य केशेशु शिरस्तेनासिनाच्छिनत्।।20।।

(इदमधिकं - छिन्ने शिरसि दैत्येन्द्रश्चक्रे नादं सुभैरवम्। तेन नादेन महता त्रासितं भुवनत्रयम्।।20क।।)

21. पायस (खीर), घृत (घी)।

अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्। तमप्यपातयद् भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा।।21।।

22. पायस (खीर), घृत (घी)।

हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्। मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम्।।22।।

23. बिजौरानींबू।

शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च। प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम्।।23।।

24. गन्ना।

मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू। युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि।।24।।

25. लौंग।

ऋषिरुवाच।।25।।

26. कमलगट्टे, पान, जायफल।

तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ। उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः।।26।।

27. मैनाफल, माजूफल, जायफल।

यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता। चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि।।27।।

।। जय जय श्रीमार्कण्डेयमहापुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सप्तमः। हरिः ॐ तत्सत्।
सत्याः सन्तु यजमानस्य (मम) कामाः।।

28. अथ सप्तमाध्यायस्य महाहुतिद्रव्याणि - स्वर्ण एवं रजत मुद्रा सहित नवरत्न, आभूषण, लौंग, पत्र, पुष्प, फल, पान, सुपारी, छोटी इलायची, जायफल और जावित्री। इन सामग्रियों को स्रुचि में रखकर खड़े होकर महाहुति दें।
ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः स्म प्रणताः ताम्।।
ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै सशक्तिकायै सप्तमाध्यायाधिष्ठात्र्यै चामुण्डायै महाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।

आचमनीय में जल लेकर-

अनेन होमेन श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सप्तमाध्यायाधिष्ठात्री चामुण्डा सांगा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयताम्।।28।।

(जल छोड़ें)

।।1 एका महाहुति सहित 14 चतुर्दशविशेषाहुतयः, समुदिताहुतयः 15 पंचदश।।
।। 13 त्रयोदशसामान्याहुतयश्च सहिता कुलसमुदिताहुतयः 28 अष्टाविंशतिः।।

।। चण्डमुण्डवधः।। इति सप्तमोऽध्यायः।।

।। रक्तबीजवधः ।।

।। अष्टमाध्याये आहुतयः ।।

अथ ध्यानम् –

अरुणां करुणातरंगिताक्षीं धृतपाशांकुशबाणचापहस्ताम्।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम्।।
ॐ श्रीरक्तदन्तिकायै नमः।

1. लौंग।
ऋषिरुवाच।।1।।

2. पायस (खीर), घृत (घी)।
चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते। बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः।।2।।

3. पायस (खीर), घृत (घी)।
ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान्। उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह।।3।।

4. पायस (खीर), घृत (घी)।
अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः। कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः।।4।।

5. राई।
कोटिवीर्याणि पंचाशदसुराणां कुलानि वै। शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया।।5।।

6. राई।
कालका दौर्हृदा मौर्याः कालकेयास्तथासुराः। युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम।।6।।

7. पायस (खीर), घृत (घी)।
इत्याज्ञाप्यसुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः। निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः।।7।।

8. रक्तकनेर, गुग्गुल, दूर्वा।
आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम्। ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम्।।8।।

9. रक्तकनेर, गुग्गुल, दूर्वा।
स च सिंहो महानादमतीव कृतवान्नृप। घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चाप्यबृंहयत्।।9।।

10. शिलाजीत, दूर्वा, कालीहल्दी, गुग्गुल।

धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा। निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना।।10।।

11. पायस (खीर), घृत (घी)।

तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम्। देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः।।11।।

12. पायस (खीर), घृत (घी)।

एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम्। भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः।।12।।

13. शाकल्य।

ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः। शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः।।13।।

14. रक्तगुंजा।

यस्य देवस्य यद्रूपं यथाभूषणवाहनम्। तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ।।14।।

15. ब्राह्मी।

हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः। आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते।।15।।

16. जटामांसी।

माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी। महाहिवलया प्राप्ता चन्द्रलेखाविभूषणा।।16।।

17. मोरपंख।

कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना। योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी।।17।।

18. शंखपुष्पी, विष्णुक्रान्ता।

तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता। शंखचक्रगदाशार्ङ्ग खड्गहस्ताभ्युपाययौ।।18।।

19. वज्रदन्ती।

जज्ञे वाराहमतुलं रूपं या बिभ्रती हरेः। शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम्।।19।।

20. गोखरू।

नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः। प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः।।20।।

21. वज्रदन्ती, पुष्प।

वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता। प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा।।21।।

22. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः। हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम्।।22।।

23. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा। चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी।।23।।

24. पायस (खीर), घृत (घी)।

सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता। दूत त्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः।।24।।

25. पायस (खीर), घृत (घी)।

ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ। ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः।।25।।

26. पायस (खीर), घृत (घी)।

त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः। यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ।।26।।

27. पापड़।

बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकांक्षिणः। तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः।।27।।

28. जटामांसी, विजया (भांग)।

यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम्। शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता।।28।।

29. आंवला, हल्दी।

तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः। अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता।।29।।

30. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः। ववर्षुरुद्धतामर्षस्तां देवीममरारयः।।30।।

31. पायस (खीर), घृत (घी)।

सा च तान्प्रतिहतान्बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान्। चिच्छेद लीलयाऽऽध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः।।31।।

32. पायस (खीर), घृत (घी)।

तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान्। खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन् कुर्वतो व्यचरत्तदा।।32।।

33. पायस (खीर), घृत (घी)।

कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान् हतौजसः। ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून्येन येन स्म धावति।।33।।

34. पायस (खीर), घृत (घी)।

माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी। दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना।।34।।

35. पायस (खीर), घृत (घी)।

ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः। पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः।।35।।

36. पायस (खीर), घृत (घी)।

तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः। वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः।।36।।

37. पायस (खीर), घृत (घी)।

नखैर्विदारितांश्चान्यान्भक्षयन्ती महासुरान्। नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगन्तरा।।37।।

38. पायस (खीर), घृत (घी)।

चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः। पेतुः पृथिव्यां पतितान्तांश्चखादाथ सा तदा।।38।।

39. सरसों।

इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान्। दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः।।39।।

40. रक्तगुंजा, रक्तचन्दन।

पलायनपरान्दृष्ट्वा दैत्यान्मातृगणार्दितान्। योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः।।40।।

41. पायस (खीर), घृत (घी)।

रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः। समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणो महासुरः।।41।।

42. पायस (खीर), घृत (घी)।

युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः। ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत्।।42।।

43. रक्तगुंजा।

कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम्। समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः।।43।।

44. रक्तगुंजा।

यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः। तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः।।44।।

45. पायस (खीर), घृत (घी)।

ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः। समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीषणम्।।45।।

46. पायस (खीर), घृत (घी)।

पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा। ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः।।46।।

47. पायस (खीर), घृत (घी)।

वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह। गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम्।।47।।

48. पायस (खीर), घृत (घी)।

वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः। सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः।।48।।

49. रक्तचन्दन।

शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना। माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम्।।49।।

50. पायस (खीर), घृत (घी)।

स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक्। मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः।।50।।

51. पायस (खीर), घृत (घी)।

तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशमलादिभिर्भुवि। पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः।।51।।

52. पायस (खीर), घृत (घी)।
तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत्। व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम्।।52।।

53. पायस (खीर), घृत (घी)।
तान्विषण्णान्सुरान्दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा। उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु।।53।।

54. रक्तचन्दन।
मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून्महासुरान्। रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना।।54।।

55. रक्तचन्दन।
भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान् महासुरान्। एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति।।55।।

56. पायस (खीर), घृत (घी)।
भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे। (इदमधिकं- ऋषिरुवाच।।56क।।)
त्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम्।।56।।

57. रक्तचन्दन।
मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्। ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम्।।57।।

58. पायस (खीर), घृत (घी)।

न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि। तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम्।।58।।

59. पायस (खीर), घृत (घी)।

यतस्ततः स्ववक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति। मुखे समुद्भूता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः।।59।।

60. रक्तचन्दन।

तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम्। देवी शूलेन चक्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः।।60।।

61. रक्तचन्दन।

जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम्। स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसंहतितो हतः।।61।।

62. बिजौरानींबू।

नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः। ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप।।62।।

63. शाकल्य।

तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः।।63।।

।। जय जय श्रीमार्कण्डेयमहापुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये अष्टमः। हरिः ॐ तत्सत्।
सत्याः सन्तु यजमानस्य (मम) कामाः।।

64. अथ अष्टमाध्यायस्य महाहुतिद्रव्याणि - स्वर्ण एवं रजत मुद्रा सहित नवरत्न, आभूषण, लौंग, पत्र, पुष्प, फल, पान, सुपारी, छोटी इलायची, जायफल और जावित्री। इन सामग्रियों को स्रुचि में रखकर खड़े होकर महाहुति दें।

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै सशक्तिकायै अष्टमाध्यायाधिष्ठात्र्यै रक्तदन्तिकायै महाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।

आचमनीय में जल लेकर-

अनेन होमेन श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये अष्टमाध्यायाधिष्ठात्री रक्तदन्तिका सांगा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयताम्।।64।। (जल छोड़ें)

।।1 एका महाहुति सहित 30 त्रिंशद्विशेषाहुतयः, समुदिताहुतयः 31 एकत्रिंशत्।।
।। 33 त्रयस्त्रिंशत्सामान्याहुतयश्च सहिता कुलसमुदिताहुतयः 64 चतुष्षष्ठी।।

।। <u>रक्तबीजवधः।। इति अष्टमोऽध्यायः</u>।।

।। निशुम्भवधः ।।

।। नवमाध्याये आहुतयः ।।

अथ ध्यानम् –

बन्धूककांचननिभं रुचिराक्षमालां, पाशांकुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्रमर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि।। ॐ श्रीताराये नमः।।

1. गोरोचन, चन्दन।
राजोवाच।।1।।

2. बिजौरानींबू।
विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम। देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम्।।2।।

3. रक्तगुंजा।
भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते। चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः।।3।।

4. लौंग।
ऋषिरुवाच।।4।।

5. पायस (खीर), घृत (घी)।

चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते। शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे।।5।।

6. पायस (खीर), घृत (घी)।

हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन्। अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया।।6।।

7. पायस (खीर), घृत (घी)।

तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः। संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः।।7।।

8. पायस (खीर), घृत (घी)।

आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः। निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः।।8।।

9. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततो युद्धमतीवासीद्देव्या शुम्भनिशुम्भयोः। शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः।।9।।

10. पायस (खीर), घृत (घी)।

चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरीरोत्करैः। ताडयामास चांगेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ।।10।।

11. पायस (खीर), घृत (घी)।

निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम्। अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम्।।11।।

12. पायस (खीर), घृत (घी)।

ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम्। निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम्।।12।।

13. पायस (खीर), घृत (घी)।

छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः। तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम्।।13।।

14. पायस (खीर), घृत (घी)।

कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः। आयातं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत्।।14।।

15. पायस (खीर), घृत (घी)।

अथादाय गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति। सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता।।15।।

16. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुंगवम्। आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले।।16।।

17. कपीठ चूक, कस्तूरी।

तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे। भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम्।।17।।

18. पायस (खीर), घृत (घी)।

स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः। भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः।।18।।

19. पायस (खीर), घृत (घी)।

तमायान्तं समालोक्य देवी शंखमवादयत्। ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम्।।19।।

20. केसर।

पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च। समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना।।20।।

21. केला, आकाशबेल।

ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः। पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश।।21।।

22. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत्। कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः।।22।।

23. पायस (खीर), घृत (घी)।

अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह। तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ।।23।।

24. आकाशबेल।

दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा। तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः।।24।।

25. पायस (खीर), घृत (घी)।

शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा। आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया।।25।।

26. सिराली।

सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम्। निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते।।26।।

27. पायस (खीर), घृत (घी)।

शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान्। चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः।।27।।

28. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम्। स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह।।28।।

29. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः। आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा।।29।।

30. पायस (खीर), घृत (घी)।

पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः। चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम्।।30।।

31. रक्तकनेर, दूर्वा, पपीता।

ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी। चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान्।।31।।

32. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम्। अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसेनासमावृतः।।32।।

33. पायस (खीर), घृत (घी)।

तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका। खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे।।33।।

34. लौंग।

शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम्। हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका।।34।।

35. बिजौरानींबू।

भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः। महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन्।।35।।

36. गुग्गुल, इन्द्रजौ।

तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः। शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद् भुवि।।36।।

37. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततः सिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान्। असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान्।।37।।

38. मोरपंख, ब्राह्मी।

कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः। ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः।।38।।

39. पपीता।

माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे। वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि।।39।।

40. गन्ना, उड़द, कूष्माण्ड, बेलगिरि।

खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः। वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे।।40।।

41. बेलगिरि।

केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात्। भक्षिताश्चापरं कालीशिवदूतीमृगाधिपैः।।41।।

।। जय जय श्रीमार्कण्डेयमहापुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये नवमः। हरिः ॐ तत्सत्।

सत्याः सन्तु यजमानस्य (मम) कामाः।।

42. **अथ नवमाध्यायस्य महाहुतिद्रव्याणि-स्वर्ण एवं रजत मुद्रा सहित नवरत्न, आभूषण, लौंग, पत्र, पुष्प, फल, पान, सुपारी, छोटी इलायची, जायफल और जावित्री।** इन सामग्रियों को स्रुचि में रखकर खड़े होकर महाहुति दें।

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ।

ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै सशक्तिवायै नवमाध्यायाधिष्ठात्र्यै तारादेव्यै महाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।

आचमनीय में जल लेकर-

अनेन होमेन श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये नवमाध्यायाधिष्ठात्री तारा सांगा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयन्ताम्।।42।। (जल छोड़े)

।।1 एका महाहुति सहित 15 पंचदशविशेषाहुतयः, समुदिताहुतयः 16 षोडश।।

।। 26 षड्विंशतिसामान्याहुतयश्च सहिता कुलसमुदिताहुतयः 42 द्विचत्वारिंशत्।।

।। निशुम्भवधः।। इति नवमोऽध्यायः।।

।। शुम्भवधः ।।

।। दशमाध्याये आहुतयः ।।

अथ ध्यानम् -

उत्तप्तहेतरुचिरां रविचन्द्रवह्नि - नेत्रां धनुश्शरयुतांकुशपाशशूलम्।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम्।।
ॐ श्री कामेश्वर्यै नमः

1. लौंग।
ऋषिरुवाच।।1।।

2. वच, केसर, कस्तूरी।
निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम्। हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः।।।।

3. पायस (खीर), घृत (घी)।
बलावलेपाद् दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह। अन्यासां बलमाश्रित्य युध्यसे यातिमानिनी।।3।।

4. रक्तकनेर, कमलपुष्प, शमीपत्र, दूर्वा, लौंग।
श्रीदेव्युवाच।।4।।

5. सेव, रक्तगुंजा।
एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा। पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः।।5।।

6. लौंग।
ऋषिरुवाच।।6।।

7. कमलपुष्प।
ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा लयम्। तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका।।7।।

8. रक्तकनेर, कमलपुष्प, शमीपत्र, दूर्वा, लौंग।
श्रीदेव्युवाच।।8।।

9. शाकल्य।
अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता। तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव।।9।।

10. लौंग।

ऋषिरुवाच।।10।।

11. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः। पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम्।।11।।

12. धनुषबाण।

दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका। बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः।।12।।

13. स्वर्ण।

मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी। बभञ्ज लीलयैवोग्रहुंकारोच्चारणादिभिः।।13।।

14. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः। सा च तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः।।14।।

15. पायस (खीर), घृत (घी)।

छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे। चिच्छेद चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम्।।15।।

16. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत्। अभ्यधावत्तदा देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः।।16।।

17. पायस (खीर), घृत (घी)।

तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका। धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम्।।17।।

18. पायस (खीर), घृत (घी)।

(अश्वांश्च पातयामास रथं सारथिना सह। - इदमधिकं।)

हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः। जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः।।18।।

19. पायस (खीर), घृत (घी)।

चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः। तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान्।।19।।

20. पायस (खीर), घृत (घी)।

स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुंगवः। देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत्।।20।।

21. पायस (खीर), घृत (घी)।

तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले। स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः।।21।।

22. आकाशबेल।

उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः। तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका।।22।।

23. आकाशबेल।

नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम्। चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम्।।23।।

24. पायस (खीर), घृत (घी)।

ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह। उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले।।24।।

25. पायस (खीर), घृत (घी)।

स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः। अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया।।25।।

26. केला।

तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम्। जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि।।26।।

27. भोजपत्र, केला।

स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः। चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम्।।27।।

28. भोजपत्र, पीलीसरसों।

ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि। जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः।।28।।

29. पायस (खीर), घृत (घी)।

उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः। सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते।।29।।

30. वटपत्र, कपूर, गुग्गुल, कमलगट्टे, इन्द्रजौ।

ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः। बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः।।30।।

31. वटपत्र, कपूर, गुग्गुल, कमलगट्टे, इन्द्रजौ।

अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः। ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः।।31।।

32. वटपत्र, कपूर, गुग्गुल, कमलगट्टे, इन्द्रजौ।

जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्ता दिग्जनितस्वनाः।।32।।

।। जय जय श्रीमार्कण्डेयमहापुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये दशमः।

हरिः ॐ तत्सत्। सत्याः सन्तु यजमानस्य (मम) कामा।।

33. **अथ दशमाध्यायस्य महाहुतिद्रव्याणि - स्वर्ण एवं रजत मुद्रा सहित नवरत्न, आभूषण, लौंग, पत्र, पुष्प, फल, पान, सुपारी, छोटी इलायची, जायफल और जावित्री।** इन सामग्रियों को स्रुचि में रखकर खड़े होकर महाहुति दें।

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै सशक्तिकायै दशमाध्यायाधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यै उत्तरचरित्राधिष्ठत्र्यै महासरस्वत्यै च महाहुतिं समपर्यामि।

आचमनीय में जल लेकर-

अनेन होमेन श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये दशमाध्यायाधिष्ठात्री कामेश्वरी सांगाभ्याम् सपरिवाराभ्याम् सायुधाभ्याम् सशक्तिकाभ्याम् सवाहनाभ्याम् प्रीयेताम्।।33।। (जल छोड़ें)

।।1 एका महाहुति सहित 15 पंचदशविशेषाहुतयः, समुदिताहुतयः 16 षोडश।।
।। 17 सप्तदशसामान्याहुतयश्च सहिता कुलसमुदिताहुतयः 33 त्रयस्त्रिंशत्।।

।। शुम्भवधः।। इति दशमोऽध्यायः।।

।। देवीस्तुतिः: ।।

।। एकादशाध्याये आहुतयः ।।

अथ ध्यानम् –

बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुंगकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदांकुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्।।
ॐ श्री भुवनेश्वर्यै नमः।।

1. लौंग।

ऋषिरुवाच।।1।।

2. पायस (खीर), घृत (घी)।

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्तान्।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्विकाशिवक्त्राब्जविकाशिताशाः।।2।।

3. दूर्वांकुर।

(इदमधिकं – देवा ऊचुः।।3क।।)

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरी पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।3।।

4. पायस (खीर), घृत (घी)।
आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतदाप्याय्यते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये।।4।।

5. अंजीर, बिजौरानींबू, विष्णुक्रान्ता।
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।5।।

6. भोजपत्र, मालकांगनी।
विद्याः समस्तास्तव देविभेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वैकया पूरितमम्बयैतत् का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।।6।।

7. पायस (खीर), घृत (घी)।
सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी। त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः।।7।।

8. पायस (खीर), घृत (घी)।

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते। स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।8।।

9. पायस (खीर), घृत (घी)।

कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनी। विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते।।9।।

10. पेठा, अनानास, गुग्गुल, दूर्वा, केसर, मिश्री, छोटी इलायची।

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।10।।

11. मेहंदी।

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि। गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते।।11।।

12. दूर्वा, इत्र, गुग्गुल, कमलगट्टे।

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।12।।

13. ब्राह्मी, कुशा।

हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि। कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।13।।

14. कर्पूर।

त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि। माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते।।14।।

15. मोरपंख।

मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे। कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते।।15।।

16. शंख, शंखपुष्पी।

शंखचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे । प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते।।16।।

17. वज्रदन्ती पंचांग।

गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे। वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते।।17।।

18. गोखरू।

नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे। त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते।।18।।

19. पुष्प, शाकल्य।

किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले। वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते।।19।।

20. शिवलिंगी, जटामांसी, जायफल।

शिवदूतिस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले। घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते।।20।।

21. नीमगिलोय।

दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे। चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते।।21।।

22. लौंग, मिश्री, गुग्गुल।

लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टे स्वधे ध्रुवे। महारात्रे महामाये नारायणि नमोऽस्तु ते।।22।।

23. वच, पुष्प, पान।

मेघे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि। नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते।।23।।

(इदमधिकं - सर्वत: पाणिपादान्ते सर्वतोक्षिशिरोमुखे। सर्वत: श्रवणघ्राणे नारायणि नमोऽस्तु ते।।23क।।)

24. रक्तकनेर, दूर्वा, पुष्प।

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते। भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।24।।

25. बहेड़ा।

एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्। पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते।।25।।

26. नीमगिलोय, बहेड़ा।

ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् । त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते।।26।।

27. पायस (खीर), घृत (घी)।

हिनस्ति दैतेयतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।27।।

28. रक्तचन्दन, उड़द, मसूर, दही, गुडुची, गिलोय, औषधियां।

असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः। शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्।।28।।

29. राई, सरसों, आंवला, कालीमिर्च, नीमगिलोय, सभी मूसलियां।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।29।।

30. कालीमिर्च।

एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या।।30।।

31. भोजपत्र, मालकांगनी, हल्दी।

विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम्।।31।।

32. हल्दी, दर्भ, कुशा, भोजपत्र।

रक्षांसि यत्रोग्रविशाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्।।32।।

33. मिश्री, पुष्प।

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः।।33।।

34. गुग्गुल, मिश्री।

देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान्।।34।।

35. कर्पूर।

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि। त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव।।35।।

36. रक्तकनेर, कमलपुष्प, शमीपत्र, दूर्वा, लौंग।

श्रीदेव्युवाच ।।36।।

37. लाजा, शमीपत्र।

वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ। तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम्।।36।।

38. विष्णुक्रान्ता।

देवा ऊचुः।।38।।

39. कालीमिर्च, सरसों, दालचीनी, शिलाजीत।

सर्वबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि। एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्।।37।।

40. रक्तकनेर, कमलपुष्प, शमीपत्र, दूर्वा, लौंग।

श्रीदेव्युवाच।।40।।

41. सरसों।

वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे। शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ।।41।।

42. मक्खन, मिश्री।

नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा। ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनि।।42।।

43. जायफल, शाकल्य।

पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतलं। अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान्।।43।।

44. अनारदाना आदि पंचांग।

भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान्सुदानवान्। रक्तदन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः।।44।।

45. अनार, मंजीठा।

ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः। स्तुवन्तो व्याव्हरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम्।।45।।

46. आकाशबेल, नारंगी।

भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि। मुनिभिः संस्तुता भूमौ संभविष्याम्ययोनिजा।।46।।

47. कमलगट्टे, संतरा।

ततः शतेन नेत्राणां निरीक्ष्यामि यन्मुनीम्। कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः।।47।।

48. इन्द्रजौ, पालक, हरी सब्जियां।

ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः। भरिष्यामि पुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः।।48।।

49. पालक।

शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि। तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम्।।49।।

50. रक्तकनेर, दूर्वांकुर।

दुर्गा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति। पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमालये।।50।।

51. पायस (खीर), घृत (घी)।

रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात्। तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः।।51।।

52. रक्तगुंजा।

भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति। यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति।।52।।

53. रक्तकनेर, पालक।

तदाऽहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम्। त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम्।।53।।

54. रक्तगुंजा।

भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः। इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति।।54।।

55. कालीमिर्च, सरसों, गुग्गुल।

तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम्।।55।।

।। जय जय श्रीमार्कण्डेयमहापुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये एकादशः। हरिः ॐ तत्सत्।
सत्याः सन्तु यजमानस्य (मम) कामाः।।

56. अथ एकादशाध्यायस्य महाहुतिद्रव्याणि - स्वर्ण एवं रजत मुद्रा सहित नवरत्न, आभूषण, लौंग, पत्र, पुष्प, फल, पान, सुपारी, छोटी इलायची, जायफल और जावित्री। इन सामग्रियों को स्रुचि में रखकर खड़े होकर महाहुति दें।

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै सशक्तिकायै एकादशाध्यायाधिष्ठात्र्यै भुवनेश्वर्यै महाहुतिं समर्पयामि।

आचमनीय में जल लेकर-

अनेन होमेन श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये एकादशाध्यायाधिष्ठात्री भुवनेश्वरी सांगा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयताम्।।56।। (जल छोड़ें)

।।1 एका महाहुति सहित 47 सप्तचत्वारिंशद्विशेषाहुतयः, समुदिताहुतयः 48 अष्टाचत्वारिंशत्।।
।। 8 अष्टसामान्याहुतयश्च सहिता कुलसमुदिताहुतयः 56 षट्पंचाशत्।।
।। देवीस्तुतिः।। इति एकादशोऽध्यायः।।

।। फलस्तुतिः ।

।। द्वादशाध्याये आहुतयः ।।

अथ ध्यानम् –

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां, कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं, बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

ॐ श्रीवैष्णव्यै नमः।

1. रक्तकनेर, कमलपुष्प, शमीपत्र, दूर्वा, लौंग।
   श्रीदेव्युवाच।।1।।

2. नागकेसर, आंवला, हल्दी, गुग्गुल, सुपारी।
   एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः। तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम्।।2।।

3. दर्भ, कुशा।
   मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम्। कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वधं शुम्भनिशुम्भयोः।।3।।

4. भोजपत्र।
   अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः। स्तोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम्।।4।।

5. गुग्गुल, मिश्री।

न तेषां दुष्कृतं किंचिद् दुष्कृतोत्था न चापदः। भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम्।।5।।

6. हल्दी, दूर्वा।

शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः। न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्सम्भविष्यति।।6।।

7. गुग्गुल।

तस्मन्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः। श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं महत्।।7।।

8. मिश्री।

उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्। तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम।।8।।

9. मधु, मिश्री, बहेड़ा।

यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ् नित्यमायतने मम। सदा न तद्विमोक्ष्यामि सांनिध्यं तत्र मे स्थितम्।।9।।

10. कूष्माण्ड, गन्ना, केला, पेड़ा।

बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे। सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च।।10।।

11. कूष्माण्ड, गन्ना, केला।

जानताऽजानता वापि बलिपूजां तथा कृताम्। प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथा कृतम्।।11।।

12. मावा, मिश्री।

शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी। तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः।।12।।

13. मिश्री, हल्दी, पीलीसरसों, पायस, कालीमिर्च।

सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसमन्वितः। मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।13।।

14. दूर्वा।

श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथोत्पत्तीः पृथक्छुभाः। पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान्।।14।।

15. राई, गुग्गुल।

रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते। नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं शृणुयान्मम।।15।।

16. गंगाजल।

शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने। ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणयान्मम।।16।।

17. आंक, पलाश, शलीपत्र, भोजपत्र, खैर।

उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः। दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते।।17।।

18. राई, गुग्गुल, प्रियंगु के फूल, आशापुरी धूप।

बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम्। संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम्।।18।।

19. कूष्माण्ड बलि।
दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्। रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम्।।19।।

20. शाकल्य।
सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम्। पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः।।20।।

21. धूप, मिश्री, केसर, कपूर, बिजौरा नींबू /खीर, पक्वान्न।
विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम्। अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या।।21।।

22. पायस (खीर), घृत (घी), पक्वान्न, जायफल।
प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन् सकृत्सुचरिते श्रुते। श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति।।22।।

23. शाकल्य।
रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम। युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम्।।23।।

24. पायस (खीर), घृत (घी)।
तस्मिञ्श्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते। युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृता।।24।।

25. दर्भ, भोजपत्र।
ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां गतिम्। अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः।।25।।

26. पायस (खीर), घृत (घी)।

दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः। सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वनहस्तिभिः।।26।।

27. पायस (खीर), घृत (घी)।

राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा। आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे।।27।।

28. पायस (खीर), घृत (घी)।

पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे। सर्वाबाधासु घोरेषु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा।।28।।

29. हरताल, गुग्गुल।

स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत संकटात्। मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा।।29।।

30. सरसों, गुग्गुल, लौंग।

दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम।।30।।

31. लौंग।

ऋषिरुवाच।।31।।

32. वच, कपूर।

इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा।।32।।

33. सर्वौषधि, पान।
पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत। तेऽपि देव्या निरातंकाः स्वाधिकारान् यथा पुरा।।33।।

34. पायस (खीर), घृत (घी)।
यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः। दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि।।34।।

35. पायस (खीर), घृत (घी)।
जगद्विध्वंसके तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे। निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः।।35।।

36. पायस (खीर), घृत (घी)।
एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः। सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम्।।36।।

37. मिश्री, अमर बेल।
तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते। सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति।।37।।

38. पायस (खीर), घृत (घी)।
व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर। महाकालया महाकाले महामारीस्वरूपया।।38।।

39. अनार के छिलके, गंगाजल।
सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा। स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी।।39।।

40. मिश्री, चन्दन, धूप, गन्ध।
भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे। सैवाभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोपजायते।।40।।

41. मिश्री, चन्दन, धूप, गन्ध।
स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा। ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम्।।41।।

।। जय जय श्रीमार्कण्डेयमहापुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये द्वादशः।
हरिः ॐ तत्सत्। सत्याः सन्तु यजमानस्य (मम) कामाः।।

42. अथ द्वादशाध्यायस्य महाहुतिद्रव्याणि - स्वर्ण एवं रजत मुद्रा सहित नवरत्न, आभूषण, लौंग, पत्र, पुष्प, फल, पान, सुपारी, छोटी इलायची, जायफल और जावित्री। इन सामग्रियों को स्रुचि में रखकर खड़े होकर महाहुति दें।
ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।
ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै सशक्तिकायै द्वादशाध्यायाधिष्ठात्र्यै वैष्णव्यै महाहुतिं समर्पयामि।

आचमनीय में जल लेकर-

अनेन होमेन श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये द्वादशाध्यायाधिष्ठात्री वैष्णवी सांगा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयताम्।।42।।

(जल छोड़ें)

।।1 एका महाहुति सहित 33 त्रयस्त्रिंशद्विशेषाहुतयः, समुदिताहुतयः 34 चतुस्त्रिंशत्।।

।। 8 अष्टसामान्याहुतयश्च सहिता कुलसमुदिताहुतयः 42 द्विचत्वारिंशत्।।

।। फलस्तुतिः ।। इति द्वादशोऽध्यायः ।।

।। सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानम्।।

।। त्रयोदशाध्याये आहुतयः।।

अथ ध्यानम् –

बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्। पाशांकुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे।।

ॐ श्री त्रिपुरभैरव्यै नमः।

1. लौंग।

ऋषिरुवाच।।1।।

2. पायस (खीर), घृत (घी)।

एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम्। एवं प्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत्।।2।।

3. विष्णुक्रान्ता।

विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया। तथा त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः।।3।।

4. पायस (खीर), घृत (घी)।

मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे। तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम्।।4।।

5. पायस (खीर), घृत (घी)।
आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा।।5।।

6. लाजा (खील)।
मार्कण्डेय उवाच।।6।।

7. पायस (खीर), घृत (घी)।
इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः।।7।।

8. पायस (खीर), घृत (घी)।
प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम्। निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च।।8।।

9. शाकल्य।
जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने। संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः।।9।।

10. सुगन्धितद्रव्य, गन्ध, लाल चन्दन।
स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन्। तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम्।।10।।

11. इक्षुदण्ड।
अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः। निराहारौ यतात्मानौ तन्मनस्कौ समाहितौ।।11।।

12. पेड़ा।
ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम्। एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः।।12।।

13. पायस (खीर), घृत (घी)।
परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका।।13।।

14. रक्तकनेर, कमलपुष्प, शमीपत्र, दूर्वा, लौंग।
श्रीदेव्युवाच।।14।।

15. पायस (खीर), घृत (घी)।
यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन। मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत्।।15।।

16. लाजा (खील)।
मार्कण्डेय उवाच।।16।।

17. कालीमिर्च, गुग्गुल, अशोकपुष्प, जिमीकन्द।
ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि। अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात्।।17।।

18. शमीपत्र, दूर्वा, कनेरपुष्प।
सोऽपि वैश्यास्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः। ममेत्यहमिति प्राज्ञः संगविच्युतिकारकम्।।18।।

19. अशोकपंचांग, रक्तकनेर, कमलपत्र।
श्रीदेव्युवाच।।19।।

20. सरसों, गुग्गुल।
स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान्।।20।।

21. पायस (खीर), घृत (घी)।
हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति।।21।।

22. अर्क, कपूर।
मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः।।22।।

23. पुष्प, फल, शाकल्य।
सावर्णिको नाम मनुर्भवान् भुवि भविष्यति।।23।।

24. भोजपत्र।
वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः।।24।।

25. शाकल्य।

तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति।।25।।

26. लाजा (खील)।

मार्कण्डेय उवाच।।26।।

27. पायस (खीर), घृत (घी)।

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम्।।27।।

28. शाकल्य।

बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता। एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।।28।।

29. अर्क, कपूर, गन्ध।

सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः।।29।।

30. सुपारी।

एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः। सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः।।30।।

।। जय जय श्रीमार्कण्डेयमहापुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे त्रयोदशः।

हरिः ॐ तत्सत्। सत्याः सन्तु यजमानस्य (मम) कामाः।।

31. **अथ त्रयोदशाध्यायस्य महाहुतिद्रव्याणि - स्वर्ण एवं रजत मुद्रा सहित नवरत्न, आभूषण, लौंग, पत्र, पुष्प, फल, पान, सुपारी, छोटी इलायची, जायफल और जावित्री।** इन सामग्रियों को स्रुचि में रखकर खड़े होकर महाहुति दें।

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै सशक्तिकायै त्रयोदशाध्यायाधिष्ठात्र्यै त्रिपुरभैरव्यै महाहुतिं समर्पयामि।

आचमनीय में जल लेकर-

अनेन होमेन श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये त्रयोदशाध्यायाधिष्ठात्री त्रिपुरभैरवी सांगा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सवाहना प्रीयताम्।।31।।

(जल छोड़े)

।।1 एका महाहुति सहित 20 विंशतिविशेषाहुतयः, समुदिताहुतयः 21 एकविंशतिः।।

।। 10 दशसामान्यांहुतयश्च सहिता कुलसमुदिताहुतयः 31 एकत्रिंशत्।।

।। सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानं।। इति त्रयोदशोऽध्यायः।।

2.8 पीठदेवतानां होममन्त्राः

01. ॐ पं पूर्वपीठाय स्वाहा।
02. ॐ पं पूर्णपीठाय स्वाहा।
03. ॐ कं कमलपीठाय स्वाहा।
04. ॐ उं उड्याणपीठाय स्वाहा।
05. ॐ मां मातृपीठाय स्वाहा।
06. ॐ जं जालन्धरपीठाय स्वाहा।
07. ॐ कं कोल्हापुरोपपीठाय स्वाहा।
08. ॐ पूं पूर्णगिरिपीठाय स्वाहा।
09. ॐ सौं सौहारोपपीठाय स्वाहा।
10. ॐ कं कोल्हागिरिपीठाय स्वाहा।
11. ॐ कं कामरूपपीठाय स्वाहा।
12. ॐ गुं गुरुभ्यो स्वाहा।
13. ॐ पं परमगुरुभ्यो स्वाहा।
14. ॐ पं परात्परगुरुभ्यो स्वाहा।
15. ॐ पं परमेष्ठिगुरुभ्यो स्वाहा।
16. ॐ मातापितृभ्यां स्वाहा।
17. ॐ उपमन्युनारदसनकव्यासादिभ्यो स्वाहा।
18. ॐ गं गणपतये स्वाहा।
19. ॐ दुं दुर्गायै स्वाहा।
20. ॐ सं सरस्वत्यै स्वाहा।
21. ॐ क्षं क्षेत्रपालाय स्वाहा।
22. ॐ गुं गुरुभ्यो स्वाहा।
23. ॐ पं परमगुरुभ्यो स्वाहा।
24. ॐ पं परात्परगुरुभ्यो स्वाहा।
25. ॐ पं परमेष्ठिगुरुभ्यो स्वाहा।
26. ॐ गं गणपतये स्वाहा।

27. ॐ दुं दुर्गायै स्वाहा।
28. ॐ क्षं क्षेत्रपालाय स्वाहा।
29. ॐ आं आधारशक्त्यै स्वाहा।
30. ॐ मूं मूलप्रकृत्यै स्वाहा।
31. ॐ कां कालाग्निरुद्राय स्वाहा।
32. ॐ मं महामण्डूकाय स्वाहा।
33. ॐ आं आदिकूर्माय स्वाहा।
34. ॐ आं आदिवराहाय स्वाहा।
35. ॐ अं अनन्ताय स्वाहा।
36. ॐ पं पृथिव्यै स्वाहा (ॐ भूं भूम्यै स्वाहा)।
37. ॐ अं अमृतार्णवाय स्वाहा।
38. ॐ रं रत्नद्वीपाय स्वाहा।
39. ॐ हं हेमगिरये स्वाहा।
40. ॐ नं नन्दनोद्यानाय स्वाहा।
41. ॐ मं मणिभूम्यै स्वाहा।
42. ॐ रं रत्नमण्डपाय स्वाहा (ॐ दिं दिव्यमण्डपाय स्वाहा)।
43. ॐ कं कल्पतरवे स्वाहा
44. ॐ रं रत्नसिंहासनाय स्वाहा।
45. ॐ सं स्वर्णवेदिकायै स्वाहा।
(ॐ कं कल्पवृक्षाय स्वाहा)।
46. ॐ धं धर्माय स्वाहा।
47. ॐ ज्ञां ज्ञानाय स्वाहा।
48. ॐ वैं वैराग्याय स्वाहा।
49. ॐ ऐं ऐश्वर्याय स्वाहा।
50. ॐ अं अधर्माय स्वाहा।
51. ॐ अं अज्ञानाय स्वाहा।
52. ॐ अं अवैराग्याय स्वाहा।
53. ॐ अं अनैश्वर्याय स्वाहा।

54. ॐ आं ब्रह्मणे स्वाहा।
55. ॐ अनन्ताय स्वाहा।
56. ॐ वां वास्तुपुरुषाय स्वाहा।
57. ॐ सं सत्त्वाय स्वाहा।
58. ॐ प्रं प्रबोधात्मने स्वाहा।
59. ॐ रं रजसे स्वाहा।
60. ॐ प्रं प्रकृत्यात्मने स्वाहा।
61. ॐ तं तमसे स्वाहा।
62. ॐ मं मोहात्मने स्वाहा।
63. ॐ मं मायातत्त्वाय स्वाहा।
64. ॐ विं विद्यातत्त्वाय स्वाहा।
65. ॐ शं शिवतत्त्वाय स्वाहा।
66. ॐ ब्रं ब्रह्मणे स्वाहा।
67. ॐ मं महेश्वराय स्वाहा।
68. ॐ नं नीलाय स्वाहा।
69. ॐ पं पद्माय स्वाहा।
70. ॐ मं महापद्माय स्वाहा।
71. ॐ रं रत्नेभ्यो स्वाहा।
72. ॐ उड्याणपीठेश्वरसहितायै उड्याणपीठेश्वर्यम्बायै स्वाहा।
73. ॐ मातृकापीठेश्वरसहितायै मातृकापीठेश्वर्यम्बायै स्वाहा।
74. ॐ जालन्धरपीठेश्वरसहितायै जालन्धरपीठेश्वर्यम्बायै स्वाहा।
75. ॐ कोल्हागिरिपीठेश्वरसहितायै कोल्हागिरिपीठेश्वर्यम्बायै स्वाहा।
76. ॐ पूर्णागिरिपीठेश्वरसहितायै पूर्णागिरिपीठेश्वर्यम्बायै स्वाहा।
77. ॐ संहारगिरिपीठेश्वरसहितायै संहारगिरिपीठेश्वर्यम्बायै स्वाहा।
78. ॐ कोल्हापुरपीठेश्वरसहितायै कोल्हापुरपीठेश्वर्यम्बायै स्वाहा।
79. ॐ कामरूपपीठेश्वरसहितायै कामरूपपीठेश्वर्यम्बायै स्वाहा।
80. ॐ गं गणेशाय स्वाहा।
81. ॐ क्षं क्षेत्रपालाय स्वाहा।

82. ॐ पां पादुकाभ्यो स्वाहा।
83. ॐ वं वटुकेभ्यो स्वाहा।
84. ॐ जं जयायै स्वाहा।
85. ॐ विं विजयायै स्वाहा।
86. ॐ जं जयन्त्यै स्वाहा।
87. ॐ अं अपराजितायै स्वाहा।
88. ॐ अग्निमुखवेतालाय स्वाहा।
89. ॐ प्रेतवाहनवेतालाय स्वाहा।
90. ॐ ज्वालामुखवेतालाय स्वाहा।
91. ॐ धूम्राक्षवेतालाय स्वाहा।
92. ॐ आनन्दकन्दाय स्वाहा।
93. ॐ संविन्नालाय स्वाहा।
94. ॐ दलेभ्यो स्वाहा।
95. ॐ केसरेभ्यो स्वाहा।
96. ॐ कर्णिकायै स्वाहा।
97. ॐ अं सूर्यमण्डलाय स्वाहा।
98. ॐ उं सोममण्डलाय स्वाहा।
99. ॐ मं वह्निमण्डलाय स्वाहा।
100. ॐ आं आत्मने स्वाहा।
101. ॐ अं अन्तरात्मने स्वाहा।
102. ॐ पं परमात्मने स्वाहा।
103. ॐ ज्ञां ज्ञानात्मने स्वाहा।
104. ॐ विं विष्णुमायायै स्वाहा।
105. ॐ नं नन्दायै स्वाहा।
106. ॐ भं भगवत्यै स्वाहा।
107. ॐ रं रक्तदन्तिकायै स्वाहा।
108. ॐ शां शाकम्बर्यै स्वाहा।
109. ॐ दुं दुर्गायै स्वाहा।

110. ॐ भीं भीमायै स्वाहा।
111. ॐ कां कालिकायै स्वाहा।
112. ॐ शिं शिवदूत्यै स्वाहा।
113. ॐ चें चेतनायै स्वाहा।
114. ॐ बुं बुद्ध्यै स्वाहा।
115. ॐ निं निद्रायै स्वाहा।
116. ॐ क्षुं क्षुधायै स्वाहा।
117. ॐ छां छायायै स्वाहा।
118. ॐ शं शक्त्यै स्वाहा।
119. ॐ तृं तृष्णायै स्वाहा।
120. ॐ क्षां क्षान्त्यै स्वाहा।
121. ॐ जां जात्यै स्वाहा।
122. ॐ लं ललितायै स्वाहा।
123. ॐ शां शान्त्यै स्वाहा।
124. ॐ श्रं श्रद्धायै स्वाहा।
125. ॐ कां कान्त्यै स्वाहा।
126. ॐ लं लक्ष्म्यै स्वाहा।
127. ॐ धृ धृत्यै स्वाहा।
128. ॐ वृं वृद्ध्यै स्वाहा।
129. ॐ स्मृं स्मृत्यै स्वाहा।
130. ॐ दं दयायै स्वाहा।
131. ॐ तुं तुष्ट्यै स्वाहा।
132. ॐ पुं पुष्ट्यै स्वाहा।
133. ॐ मां मातृकायै स्वाहा।
134. ॐ भ्रां भ्रान्त्यै स्वाहा।
135. ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय स्वाहा।
136. ॐ सर्वात्मसंसर्गयोगपीठात्मने स्वाहा।
137. ॐ शक्तिसहितपीठस्थदेवताभ्यो स्वाहा।

अनेन होमेन पीठस्थदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।

2.9 आवरणदेवतानां होमः

1. प्रथमावरणदेवतामन्त्राः –

ॐ गुरवे स्वाहा। ॐ परमगुरवे स्वाहा। ॐ परात्परगुरवे स्वाहा। ॐ परमेष्ठिगुरवे स्वाहा।
ॐ ऐं हृदयाय स्वाहा। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा स्वाहा। ॐ क्लीं शिखायै वषट् स्वाहा।
ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम् स्वाहा। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ अं स्वरया सह विधात्रे स्वाहा।
ॐ इं श्रिया सह विष्णवे स्वाहा। ॐ उं उमया सह शिवाय स्वाहा। ॐ क्षुं/सिं सिंहाय स्वाहा।
ॐ हुं/मं महिषाय स्वाहा। अथवा
ॐ सरस्वतीब्रह्मभ्यां स्वाहा। ॐ गौरीरुद्राभ्यां स्वाहा। ॐ लक्ष्मीहृषीकेशाभ्यां स्वाहा।
ॐ अष्टादशभुजायै स्वाहा। ॐ दशाननायै स्वाहा। ॐ अष्टभुजायै स्वाहा।

2. द्वितीयावरणदेवतामन्त्राः –

ॐ नं नन्दजायै स्वाहा। ॐ रं रक्तदन्तिकायै स्वाहा। ॐ शां शाकम्बर्यै स्वाहा।
ॐ दुं दुर्गायै स्वाहा। ॐ भीं भीमायै स्वाहा। ॐ भ्रां भ्रामर्यै स्वाहा।

3. तृतीयावरणदेवतामन्त्राः -

ॐ जं जयायै स्वाहा। ॐ विं विजयायै स्वाहा। ॐ जं जयन्त्यै स्वाहा। ॐ अं अपराजितायै स्वाहा।

4. चतुर्थावरणदेवतामन्त्राः -

ॐ ब्रां ब्राह्म्यै स्वाहा। ॐ मां माहेश्वर्यै स्वाहा। ॐ कौं कौमार्यै स्वाहा। ॐ वैं वैष्णव्यै स्वाहा।
ॐ वां वाराह्यै स्वाहा। ॐ नां नारसिंह्यै स्वाहा। ॐ ऐं ऐन्द्र्यै स्वाहा। ॐ चां चामुण्डायै स्वाहा।
ॐ शिं शिवदूत्यै स्वाहा। (अथवा - ॐ श्रीं लक्ष्म्यै स्वाहा।)

5. पंचमावरणदेवतामन्त्राः -

ॐ अं असितांगभैरवाय स्वाहा। ॐ रुं रुरुभैरवाय स्वाहा।
ॐ चं चण्डभैरवाय स्वाहा। ॐ क्रों क्रोधभैरवाय स्वाहा।
ॐ उं उन्मत्तभैरवाय स्वाहा। ॐ कं कपालभैरवाय स्वाहा।
ॐ भीं भीषणभैरवाय स्वाहा। ॐ सं संहरभैरवाय स्वाहा।

6. षष्ठावरणदेवतामन्त्राः -

ॐ विं विष्णुमायायै स्वाहा। ॐ चें चेतनायै स्वाहा। ॐ बुं बुद्ध्यै स्वाहा। ॐ निं निद्रायै स्वाहा।
ॐ क्षुं क्षुधायै स्वाहा। ॐ छां छायायै स्वाहा। ॐ शं शक्त्यै स्वाहा। ॐ तृं तृष्णायै स्वाहा।

ॐ क्षां क्षान्त्यै स्वाहा। ॐ जां जात्यै स्वाहा। ॐ लं लज्जायै स्वाहा। ॐ शां शान्त्यै स्वाहा।
ॐ श्रं श्रद्धायै स्वाहा। ॐ कां कान्त्यै स्वाहा। ॐ लं लक्ष्म्यै स्वाहा। ॐ धृं धृत्यै स्वाहा।
ॐ वृं वृत्त्यै स्वाहा। ॐ स्मृं स्मृत्यै स्वाहा। ॐ दं दयायै स्वाहा। ॐ तुं तृष्ट्यै स्वाहा।
ॐ पुं पुष्ट्यै स्वाहा। ॐ मां मात्रे स्वाहा। ॐ भ्रां भ्रान्त्यै स्वाहा। ॐ चिं चित्त्यै स्वाहा।

7. सप्तमावरणदेवतामन्त्राः -

ॐ लं इन्द्राय स्वाहा। ॐ रं अग्नये स्वाहा।
ॐ मं यमाय स्वाहा। ॐ क्षां निर्ऋतये स्वाहा।
ॐ वं वरुणाय स्वाहा। ॐ यं वायवे स्वाहा।
ॐ सं सोमाय स्वाहा। ॐ हं रुद्राय स्वाहा। (ॐ ईं ईशानाय स्वाहा)
ॐ ब्रं (अं) ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ ह्रीं शेषाय स्वाहा।(अनन्ताय स्वाहा।)

८. अथ अष्टमावरणदेवतामन्त्राः -

ॐ वं वज्राय स्वाहा। ॐ शं शक्त्यै स्वाहा। ॐ दं दण्डाय स्वाहा। ॐ खं खड्गाय स्वाहा।
ॐ पां पाशाय स्वाहा। ॐ अं अंकुशाय स्वाहा। ॐ गं गदायै स्वाहा। ॐ त्रिं त्रिशूलाय स्वाहा।
ॐ पं पद्माय स्वाहा। ॐ चं चक्राय स्वाहा।

देवी के अन्य अस्त्रों के नाममन्त्रों से भी हवन करें –

ॐ अं अक्षमालाय स्वाहा। ॐ सुं सुराभाजनाय स्वाहा। (ॐ कुं कुण्डिकाय स्वाहा।)

ॐ शं शंखाय स्वाहा। ॐ पं परशवे स्वाहा। ॐ धं धनुषे स्वाहा। ॐ चं चर्माय स्वाहा।

ॐ घं घण्टायै स्वाहा। ॐ सां सायकाय स्वाहा।

9. नवमावरणदेवतामन्त्राः –

ॐ गं गणपतये स्वाहा। ॐ क्षें क्षेत्रपालाय स्वाहा। ॐ वं वटुकाय स्वाहा।

ॐ यों योगिन्यै स्वाहा। ॐ दुं दुर्गायै स्वाहा। ॐ विं विष्णवे स्वाहा। ॐ शिं शिवाय स्वाहा।

ॐ सूं सूर्याय स्वाहा। ॐ गं गणेशाय स्वाहा। अथवा **ॐ वज्रहस्तायै गजारूढायै कादम्बरीदेव्यै स्वाहा।**

ॐ शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै महिषारूढायै करालीदेव्यै स्वाहा।

ॐ खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षीदेव्यै स्वाहा।

ॐ पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षीदेव्यै स्वाहा। ॐ अंकुशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षीदेव्यै स्वाहा।

ॐ गदाहस्तायै सिंहारूढायै यक्षिणीदेव्यै स्वाहा। ॐ शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै स्वाहा।

ॐ पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै स्वाहा। ॐ चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै स्वाहा।

ॐ यन्त्रस्थावाहितेभ्यो आवरणदेवताभ्यो स्वाहा। ॐ कालाय स्वाहा। ॐ रुद्राय स्वाहा।

ॐ मृत्यवे स्वाहा।　　　　ॐ विनायकाय स्वाहा।

अनेन होमेन आवरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम।

2.10 अष्टोत्तरशतनामावलि (108) होममन्त्राः

(यदि समय व सामर्थ्य है तो सहस्रनामावली (1000) से ही हवन करना चाहिये। उस केलिये श्रीदुर्गापूजापद्धतिप्रकाशः के पृष्ठ संख्या 318 में दिये गये नामावली में '**नमः**' को हटाकर '**स्वाहा**' जोड़ लें।)

01. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा।
02. ॐ महादेव्यै स्वाहा।
03. ॐ जयन्त्यै स्वाहा।
04. ॐ सर्वमंगलायै स्वाहा।
05. ॐ लज्जायै स्वाहा।
06. ॐ भगवत्यै स्वाहा।
07. ॐ वन्द्यायै स्वाहा।
08. ॐ भवान्यै स्वाहा।
09. ॐ पापनाशिन्यै स्वाहा।
10. ॐ चण्डिकायै स्वाहा।
11. ॐ कालरात्र्यै स्वाहा।
12. ॐ भद्रकाल्यै स्वाहा।
13. ॐ अपराजितायै स्वाहा।
14. ॐ महाविद्यायै स्वाहा।
15. ॐ महामेधायै स्वाहा।
16. ॐ महामायायै स्वाहा।

17. ॐ महाबलायै स्वाहा।
18. ॐ कात्यायन्यै स्वाहा।
19. ॐ जयायै स्वाहा।
20. ॐ दुर्गायै स्वाहा।
21. ॐ मन्दारवनवासिन्यै स्वाहा।
22. ॐ आर्यायै स्वाहा।
23. ॐ गिरिसुतायै स्वाहा।
24. ॐ धात्र्यै स्वाहा।
25. ॐ महिषासुरघातिन्यै स्वाहा।
26. ॐ सिद्धिदायै स्वाहा।
27. ॐ बुद्धिदायै स्वाहा।
28. ॐ नित्यायै स्वाहा।
29. ॐ वरदायै स्वाहा।
30. ॐ वरवर्णिन्यै स्वाहा।
31. ॐ अम्बिकायै स्वाहा।
32. ॐ सुखदायै स्वाहा।
33. ॐ सौम्यायै स्वाहा।
34. ॐ जगन्मात्रे स्वाहा।
35. ॐ शिवप्रियायै स्वाहा।
36. ॐ भक्तसंतापहर्त्र्यै स्वाहा।
37. ॐ सर्वकामपरिपूरिण्यै स्वाहा।
38. ॐ जगत्कर्त्र्यै स्वाहा।
39. ॐ जगत्पालनतत्परायै स्वाहा।
40. ॐ अव्यक्तायै स्वाहा।
41. ॐ व्यक्तरूपायै स्वाहा।
42. ॐ भीमायै स्वाहा।
43. ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।
44. ॐ अपर्णायै स्वाहा।

45. ॐ ललितायै स्वाहा।
46. ॐ वेद्यायै स्वाहा।
47. ॐ पूर्णचन्द्रनिभाननायै स्वाहा।
48. ॐ चामुण्डायै स्वाहा।
49. ॐ चतुरायै स्वाहा।
50. ॐ चन्द्रायै स्वाहा।
51. ॐ गुणत्रयविभाविन्यै स्वाहा।
52. ॐ हेरम्बजनन्यै स्वाहा।
53. ॐ काल्यै स्वाहा।
54. ॐ त्रिगुणायै स्वाहा।
55. ॐ यशोधारिण्यै स्वाहा।
56. ॐ उमायै स्वाहा।
57. ॐ कलशहस्तायै स्वाहा।
58. ॐ दैत्यदर्पनिषूदिन्यै स्वाहा।
59. ॐ बुद्ध्यै स्वाहा।
60. ॐ कान्त्यै स्वाहा।
61. ॐ क्षमायै स्वाहा।
62. ॐ शान्त्यै स्वाहा।
63. ॐ पुष्ट्यै स्वाहा।
64. ॐ तृष्ट्यै स्वाहा।
65. ॐ धृत्यै स्वाहा।
66. ॐ मत्यै स्वाहा।
67. ॐ वरायुधधरायै स्वाहा।
68. ॐ धीरायै स्वाहा।
69. ॐ गौर्यै स्वाहा।
70. ॐ शाकम्भर्यै स्वाहा।
71. ॐ शिवायै स्वाहा।
72. ॐ अष्टसिद्धिप्रदायै स्वाहा।

73. ॐ वामायै स्वाहा।
74. ॐ शिववामांगवासिन्यै स्वाहा।
75. ॐ धर्मदायै स्वाहा।
76. ॐ धनदायै स्वाहा।
77. ॐ श्रीदायै स्वाहा।
78. ॐ कामदायै स्वाहा।
79. ॐ मोक्षदायै स्वाहा।
80. ॐ अपरायै स्वाहा।
81. ॐ चित्स्वरूपायै स्वाहा।
82. ॐ निदानन्दायै स्वाहा।
83. ॐ जयश्रियै स्वाहा।
84. ॐ जयदायिन्यै स्वाहा
85. ॐ सर्वमंगलमांगल्यायै स्वाहा।
86. ॐ जगत्त्रयहितैषिण्यै स्वाहा।
87. ॐ शर्वाण्यै स्वाहा।
88. ॐ पार्वत्यै स्वाहा।
89. ॐ धन्यायै स्वाहा।
90. ॐ स्कन्दमात्रे स्वाहा।
91. ॐ अखिलेश्वर्यै स्वाहा।
92. ॐ प्रपन्नार्तिहरायै स्वाहा।
93. ॐ देव्यै स्वाहा।
94. ॐ सुभगायै स्वाहा।
95. ॐ कामरूपिण्यै स्वाहा।
96. ॐ निराकारायै स्वाहा।
97. ॐ साकारायै स्वाहा।
98. ॐ महाकाल्यै स्वाहा।
99. ॐ सुरेश्वर्यै स्वाहा।
100. ॐ शर्वायै स्वाहा।

101. ॐ श्रद्धायै स्वाहा।
102. ॐ ध्रुवायै स्वाहा।
103. ॐ कृत्यायै स्वाहा।
104. ॐ मृडान्यै स्वाहा।
105. ॐ भक्तवत्सलायै स्वाहा।
107. ॐ शरण्यायै स्वाहा।
106. ॐ सर्वशक्तिसमायुक्तायै स्वाहा।
108. ॐ सर्वकामदायै स्वाहा।।

अनेन होमेन अष्टोत्तरशतदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम।

2.11 **तर्पणं**- बड़े बर्तन (परात) में दूध अथवा जल अथवा दूध मिश्रित जल ग्रहण कर कुशा अथवा दर्भों से न्यूनतम 108 बार तर्पण करें - '**ॐ दुर्गां तर्पयामि**'।

2.12 **मार्जनं** - उसी सामग्री (दूध/जल/दूध मिश्रित जल) से मार्जन करें - '**ॐ दुर्गां मार्जयामि**'। हाथ धोकर आचमन व प्राणायाम करें।

2.13 वास्तुदेवतानाम् होम मन्त्राः

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवो भवानः। यत्त्वेमहे प्रतितन्नौ जुषस्व शन्नौ भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

ॐ नमो भगवते वास्तुपुरुषाय महाबलपराक्रमाय सर्वाधिवासाश्रितशरीराय ब्रह्मपुत्राय सकलब्रह्माण्डधारिणे भूभारार्पितमस्तकाय पुरपत्तनप्रासादगृहवापिसरकूपादेः सन्निवेशसान्निध्यकराय सर्वसिद्धिप्रदाय प्रसन्नवदनाय विश्वम्भराय परमपुरुषाय शक्रवरदाय वास्तोष्पते नमस्ते ।

01. ॐ भूर्भुवःस्वः शिखिने स्वाहा ।
02. ॐ भूर्भुवःस्वः पर्जन्याय स्वाहा ।
03. ॐ भूर्भुवःस्वः जयन्ताय स्वाहा ।
04. ॐ भूर्भुवःस्वः कुलिशायुधाय स्वाहा ।
05. ॐ भूर्भुवःस्वः सूर्याय स्वाहा ।
06. ॐ भूर्भुवःस्वः सत्याय स्वाहा ।
07. ॐ भूर्भुवःस्वः भृशाय स्वाहा ।
08. ॐ भूर्भुवःस्वः आकाशाय स्वाहा ।
09. ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे स्वाहा ।
10. ॐ भूर्भुवःस्वः पूष्णे स्वाहा ।
11. ॐ भूर्भुवःस्वः वितथाय स्वाहा ।
12. ॐ भूर्भुवःस्वः गृहक्षताय स्वाहा ।
13. ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय स्वाहा ।
14. ॐ भूर्भुवःस्वः गन्धर्वाय स्वाहा ।
15. ॐ भूर्भुवःस्वः भृंगराजाय स्वाहा ।
16. ॐ भूर्भुवःस्वः मृगाय स्वाहा ।
17. ॐ भूर्भुवःस्वः पितृभ्यो स्वाहा ।
18. ॐ भूर्भुवःस्वः दौवारिकाय स्वाहा ।
19. ॐ भूर्भुवःस्वः सुग्रीवाय स्वाहा ।
20. ॐ भूर्भुवःस्वः पुष्पदन्ताय स्वाहा ।
21. ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाय स्वाहा ।
22. ॐ भूर्भुवःस्वः असुराय स्वाहा ।

23. ॐ भूर्भुवःस्वः शेषाय स्वाहा ।
24. ॐ भूर्भुवःस्वः पापाय स्वाहा ।
25. ॐ भूर्भुवःस्वः रोगाय स्वाहा ।
26. ॐ भूर्भुवःस्वः अहिर्बुध्न्याय स्वाहा ।
27. ॐ भूर्भुवःस्वः मुख्याय स्वाहा ।
28. ॐ भूर्भुवःस्वः भल्लाटाय स्वाहा ।
29. ॐ भूर्भुवःस्वः सोमाय स्वाहा ।
30. ॐ भूर्भुवःस्वः सर्पाय स्वाहा ।
31. ॐ भूर्भुवःस्वः अदितये स्वाहा ।
32. ॐ भूर्भुवःस्वः दितये स्वाहा ।
33. ॐ भूर्भुवःस्वः आपाय स्वाहा ।
34. ॐ भूर्भुवःस्वः सावित्राय स्वाहा ।
35. ॐ भूर्भुवःस्वः जयाय स्वाहा ।
36. ॐ भूर्भुवःस्वः रुद्राय स्वाहा ।
37. ॐ भूर्भुवःस्वः अर्यम्णे स्वाहा ।
38. ॐ भूर्भुवःस्वः सवित्रे स्वाहा ।
39. ॐ भूर्भुवःस्वः विवस्वते स्वाहा ।
40. ॐ भूर्भुवःस्वः विवुधाधिपाय स्वाहा ।
41. ॐ भूर्भुवःस्वः मित्राय स्वाहा ।
42. ॐ भूर्भुवःस्वः राजयक्ष्मणे स्वाहा ।
43. ॐ भूर्भुवःस्वः पृथ्वीधराय स्वाहा ।
44. ॐ भूर्भुवःस्वः आपवत्साय स्वाहा ।
45. ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे स्वाहा ।
46. ॐ भूर्भुवःस्वः चरक्यै स्वाहा ।
47. ॐ भूर्भुवःस्वः विदार्य्यै स्वाहा ।
48. ॐ भूर्भुवःस्वः पूतनायै स्वाहा ।
49. ॐ भूर्भुवःस्वः पापराक्षस्यै स्वाहा ।
50. ॐभूर्भुवःस्वः स्कन्दाय स्वाहा ।

51. ॐ भूर्भुवःस्वः अर्यम्णो स्वाहा ।
52. ॐ भूर्भुवःस्वः जृम्भकाय स्वाहा ।
53. ॐ भूर्भुवःस्वः पिलिपिच्छाय स्वाहा ।
54. ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राय स्वाहा ।
55. ॐ भूर्भुवःस्वः अग्नये स्वाहा ।
56. ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय स्वाहा ।
57. ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतये स्वाहा ।
58. ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाय स्वाहा ।
59. ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे स्वाहा ।
60. ॐ भूर्भुवःस्वः कुबेराय स्वाहा ।
61. ॐ भूर्भुवःस्वः ईश्वराय स्वाहा ।
62. ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे स्वाहा ।
63. ॐ भूर्भुवःस्वः अनन्ताय स्वाहा ।
64. ॐ भूर्भुवःस्वः उग्रसेनाय स्वाहा ।
65. ॐ भूर्भुवःस्वः डामराय स्वाहा ।
66. ॐ भूर्भुवःस्वः महाकालाय स्वाहा ।
67. ॐ भूर्भुवःस्वः पिलिपिच्छाय स्वाहा ।
68. ॐ भूर्भुवःस्वः हेतुकाय स्वाहा ।
69. ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिपुरान्तकाय स्वाहा ।
70. ॐ भूर्भुवःस्वः अग्निवैतालाय स्वाहा ।
71. ॐ भूर्भुवःस्वः असिवैतालाय स्वाहा ।
72. ॐ भूर्भुवःस्वः कालाय स्वाहा ।
73. ॐ भूर्भुवःस्वः करालाय स्वाहा ।
74. ॐ भूर्भुवःस्वः एकपादाय स्वाहा ।
75. ॐ भूर्भुवःस्वः भीमरुपाय स्वाहा ।
76. ॐ भूर्भुवःस्वः खेचराय स्वाहा ।
77. ॐ भूर्भुवःस्वः तलवासिने स्वाहा ।

अनेन होमेन शिखिन्यादिसप्तसप्ततिवास्तुदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम।

2.14 अथ चतुःषष्टिः योगिनी होम मन्त्राः

01. ॐ भूर्भुवःस्वः दिव्ययोगिन्यै स्वाहा ।
02. ॐ भूर्भुवःस्वः महायोगिन्यै स्वाहा ।
03. ॐ भूर्भुवःस्वः सिद्धयोगिन्यै स्वाहा ।
04. ॐ भूर्भुवःस्वः गणेश्वर्य्यै स्वाहा ।
05. ॐ भूर्भुवःस्वः प्रेताक्ष्यै स्वाहा ।
06. ॐ भूर्भुवःस्वः डाकिन्यै स्वाहा ।
07. ॐ भूर्भुवःस्वः काल्यै स्वाहा ।
08. ॐ भूर्भुवःस्वः कालरात्र्यै स्वाहा ।
09. ॐ भूर्भुवःस्वः निशाचर्य्यै स्वाहा ।
10. ॐ भूर्भुवःस्वः कंकार्य्यै स्वाहा ।
11. ॐ भूर्भुवःस्वः रौद्रवैताल्यै स्वाहा ।
12. ॐ भूर्भुवःस्वः भूतल्यै स्वाहा ।
13. ॐ भूर्भुवःस्वः भूतडामर्य्यै स्वाहा ।
14. ॐ भूर्भुवःस्वः ऊर्ध्वकेश्यै स्वाहा ।
15. ॐ भूर्भुवःस्वः विरुपाक्ष्यै स्वाहा ।
16. ॐ भूर्भुवःस्वः शुष्काङ्ग्यै स्वाहा ।
17. ॐ भूर्भुवःस्वः नरभोजिन्यै स्वाहा ।
18. ॐ भूर्भुवःस्वः भट्टार्य्यै स्वाहा ।
19. ॐ भूर्भुवःस्वः वीरभद्रायै स्वाहा ।
20. ॐ भूर्भुवःस्वः धूम्राक्ष्यै स्वाहा ।
21. ॐ भूर्भुवःस्वः कलिप्रियायै स्वाहा ।
22. ॐ भूर्भुवःस्वः राक्षस्यै स्वाहा ।

23. ॐ भूर्भुवःस्वः घोररक्ताक्ष्यै स्वाहा।
24. ॐ भूर्भुवःस्वः विरुपाक्ष्यै स्वाहा।
25. ॐ भूर्भुवःस्वः भयङ्कर्यै स्वाहा।
26. ॐ भूर्भुवःस्वः चण्डिकायै स्वाहा।
27. ॐ भूर्भुवःस्वः वीरकौमार्य्यै स्वाहा।
28. ॐ भूर्भुवःस्वः वाराह्यै स्वाहा।
29. ॐ भूर्भुवःस्वः मुण्डधारिण्यै स्वाहा।
30. ॐ भूर्भुवःस्वः सासुर्य्यै स्वाहा।
31. ॐ भूर्भुवःस्वः रौद्रझंकारभाषिण्यै स्वाहा।
32. ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिपुरान्तकायै स्वाहा।
33. ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवध्वंसिन्यै स्वाहा।
34. ॐ भूर्भुवःस्वः क्रोध दुर्मुख्यै स्वाहा।
35. ॐ भूर्भुवःस्वः प्रेतवाहिन्यै स्वाहा।
36. ॐ भूर्भुवःस्वः खट्वाङ्ग्यै स्वाहा।
37. ॐ भूर्भुवःस्वः दीर्घलम्बोष्ठ्यै स्वाहा।
38. ॐ भूर्भुवःस्वः मालिन्यै स्वाहा।
39. ॐ भूर्भुवःस्वः मन्त्रयोगिन्यै स्वाहा।
40. ॐ भूर्भुवःस्वः तवहस्तायै स्वाहा।
41. ॐ भूर्भुवःस्वः चक्र्यै स्वाहा।
42. ॐ भूर्भुवःस्वः कंकाल्यै स्वाहा।
43. ॐ भूर्भुवःस्वः भुवनैश्वर्य्यै स्वाहा।
44. ॐ भूर्भुवःस्वः कटक्यै स्वाहा।
45. ॐ भूर्भुवःस्वः कटिन्यै स्वाहा।
46. ॐ भूर्भुवःस्वः रौद्र्यै स्वाहा।
47. ॐ भूर्भुवःस्वः यम दूत्यै स्वाहा।
48. ॐ भूर्भुवःस्वः करालिन्यै स्वाहा।
49. ॐ भूर्भुवःस्वः घोराक्ष्यै स्वाहा।
50. ॐ भूर्भुवःस्वः कार्मुक्यै स्वाहा।

51. ॐ भूर्भुवःस्वः काकदृष्ट्यै स्वाहा ।
52. ॐ भूर्भुवःस्वः अधोमुख्यै स्वाहा ।
53. ॐ भूर्भुवःस्वः मुण्डाग्रधारिण्यै स्वाहा ।
54. ॐ भूर्भुवःस्वः व्याघ्र्यै स्वाहा ।
55. ॐ भूर्भुवःस्वः किंकिण्यै स्वाहा ।
56. ॐ भूर्भुवःस्वः प्रेतभक्षिण्यै स्वाहा ।
57. ॐ भूर्भुवःस्वः कालरुपायै स्वाहा ।
58. ॐ भूर्भुवःस्वः कामाख्यायै स्वाहा ।
59. ॐ भूर्भुवःस्वः उष्ट्रिण्यै स्वाहा ।
60. ॐ भूर्भुवःस्वः योगपीठायै स्वाहा ।
61. ॐ भूर्भुवःस्वः महालक्ष्म्यै स्वाहा ।
62. ॐ भूर्भुवःस्वः एकवीरायै स्वाहा ।
63. ॐ भूर्भुवःस्वः कालरात्र्यै स्वाहा ।
64. ॐ भूर्भुवःस्वः पीठीकायै स्वाहा ।

अनेन होमेन दिव्ययोगिन्यादिचतुष्षष्ठियोगिन्यः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।

2-15 क्षेत्रपाल होम मन्त्राः।।

01. ॐ भूर्भुवःस्वः अजराय स्वाहा ।
02. ॐ भूर्भुवःस्वः आपकुम्भाय स्वाहा ।
03. ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रस्तुत्य स्वाहा ।
04. ॐ भूर्भुवःस्वः इडाचाराय स्वाहा ।
05. ॐ भूर्भुवःस्वः उक्तसंज्ञाय स्वाहा ।
06. ॐ भूर्भुवःस्वः कूष्माण्डाय स्वाहा ।
07. ॐ भूर्भुवःस्वः ऋषिसूदनाय स्वाहा ।
08. ॐ भूर्भुवःस्वः ऋमुक्ताय स्वाहा ।

09. ॐ भूर्भुवःस्वः क्लृप्तकेशाय स्वाहा ।
10. ॐ भूर्भुवःस्वः लृपकाय स्वाहा ।
11. ॐ भूर्भुवःस्वः एकदंष्ट्राय स्वाहा ।
12. ॐ भूर्भुवःस्वः ऐरावताय स्वाहा ।
13. ॐ भूर्भुवःस्वः ओघवन्धवे स्वाहा ।
14. ॐ भूर्भुवःस्वः औषधीशाय स्वाहा ।
15. ॐ भूर्भुवःस्वः अंजनाय स्वाहा ।
16. ॐ भूर्भुवःस्वः अस्त्रवाराय स्वाहा ।
17. ॐ भूर्भुवःस्वः कवलाय स्वाहा ।
18. ॐ भूर्भुवःस्वः खरुखानलाय स्वाहा ।
19. ॐ भूर्भुवःस्वः गोमुख्याय स्वाहा ।
20. ॐ भूर्भुवःस्वः घण्टादाय स्वाहा ।
21. ॐ भूर्भुवःस्वः ङ्मनसे स्वाहा ।
22. ॐ भूर्भुवःस्वः चण्डिवारणाय स्वाहा ।
23. ॐ भूर्भुवःस्वः छटाटोपाय स्वाहा ।
24. ॐ भूर्भुवःस्वः जटालाय स्वाहा ।
25. ॐ भूर्भुवःस्वः झंगीवाय स्वाहा ।
26. ॐ भूर्भुवःस्वः जडश्चराय स्वाहा ।
27. ॐ भूर्भुवःस्वः टंकपाणये स्वाहा ।
28. ॐ भूर्भुवःस्वः ठानबन्धवे स्वाहा ।
29. ॐ भूर्भुवःस्वःडामराय स्वाहा ।
30. ॐ भूर्भुवःस्वः ढ़क्कारावाय स्वाहा ।
31. ॐ भूर्भुवःस्वः णवार्णवाय स्वाहा ।
32. ॐ भूर्भुवःस्वः तडिद्देहाय स्वाहा ।
33. ॐ भूर्भुवःस्वः थिराय स्वाहा ।
34. ॐ भूर्भुवःस्वः दन्तुराय स्वाहा ।
35. ॐ भूर्भुवःस्वः धनदाय स्वाहा ।
36. ॐ भूर्भुवःस्वः नक्तितांताय स्वाहा ।

37. ॐ भूर्भुवः स्वः प्रचण्डकाय स्वाहा ।
38. ॐ भूर्भुवः स्वः फट्काराय स्वाहा ।
39. ॐ भूर्भुवः स्वः वीरसंघाय स्वाहा ।
40. ॐ भूर्भुवः स्वः भृंगाय स्वाहा ।
41. ॐ भूर्भुवः स्वः मेघभासुराय स्वाहा ।
42. ॐ भूर्भुवः स्वः युगान्ताय स्वाहा ।
43. ॐ भूर्भुवः स्वः एह्यवाय स्वाहा ।
44. ॐ भूर्भुवः स्वः लम्बोष्ठाय स्वाहा ।
45. ॐ भूर्भुवः स्वः बासवाय स्वाहा ।
46. ॐ भूर्भुवः स्वः शूकनन्दाय स्वाहा ।
47. ॐ भूर्भुवः स्वः षडालाय स्वाहा ।
48. ॐ भूर्भुवः स्वः सुनाम्ने स्वाहा ।
49. ॐ भूर्भुवः स्वः हंब्रुकाय स्वाहा ।

अनेन होमेन अजराद्येकोनपन्चाशद् क्षेत्रपालाः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।

2.16-1 सर्वतोभद्र मण्डपस्थ देवतानां होम मन्त्राः

01. ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे स्वाहा ।
02. ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय स्वाहा ।
03. ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय स्वाहा ।
04. ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय स्वाहा ।
05. ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये स्वाहा ।
06. ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय स्वाहा ।
07. ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये स्वाहा ।
08. ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय स्वाहा ।

09. ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे स्वाहा ।
10. ॐ भूर्भुवःस्वः अष्टवसुभ्यो स्वाहा ।
11. ॐ भूर्भुवःस्वः एकादश रुद्रेभ्यो स्वाहा ।
12. ॐ भूर्भुवःस्वः द्वादशादित्येभ्यो स्वाहा ।
13. ॐ भूर्भुवःस्वः अश्विभ्यां स्वाहा ।
14. ॐ भूर्भुवःस्वः सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो स्वाहा ।
15. ॐ भूर्भुवःस्वः सप्तयक्षेभ्यो स्वाहा ।
16. ॐ भूर्भुवःस्वः भूतनागेभ्यो स्वाहा ।
17. ॐ भूर्भुवःस्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो स्वाहा ।
18. ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्दाय स्वाहा ।
19. ॐ भूर्भुवःस्वः नन्दीश्वराय स्वाहा ।
20. ॐ भूर्भुवःस्वः शूलाय स्वाहा ।
21. ॐ भूर्भुवःस्वः महाकालाय स्वाहा ।
22. ॐ भूर्भुवःस्वः दक्षादिसप्तगणेभ्यो स्वाहा ।
23. ॐ भूर्भुवःस्वः दुर्गायै स्वाहा ।
24. ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णवे स्वाहा ।
25. ॐ भूर्भुवःस्वः स्वधायै (पितृभ्यो) स्वाहा ।
26. ॐ भूर्भुवःस्वः मृत्युरोगेभ्यो स्वाहा ।
27. ॐ भूर्भुवःस्वः गणपतये स्वाहा ।
28. ॐ भूर्भुवःस्वः अद्भ्यो स्वाहा ।
29. ॐ भूर्भुवःस्वः मरुद्भ्यो स्वाहा ।
30. ॐ भूर्भुवःस्वः पृथिव्यै स्वाहा ।
31. ॐ भूर्भुवःस्वः गंगादिसप्तसरिद्भ्यो स्वाहा ।
32. ॐ भूर्भुवःस्वः सप्तसागरेभ्यो स्वाहा ।
33. ॐ भूर्भुवःस्वः मेरवे स्वाहा ।
34. ॐ भूर्भुवःस्वः गदायै स्वाहा ।
35. ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिशूलाय स्वाहा ।
36. ॐ भूर्भुवःस्वः वज्राय स्वाहा ।

37. ॐ भूर्भुवःस्वः शक्तये स्वाहा ।
38. ॐ भूर्भुवःस्वः दण्डाय स्वाहा ।
39. ॐ भूर्भुवःस्वः खड्गाय स्वाहा ।
40. ॐ भूर्भुवःस्वः पाशाय स्वाहा ।
41. ॐ भूर्भुवःस्वः अंकुशाय स्वाहा ।
42. ॐ भूर्भुवःस्वः गौतमाय स्वाहा ।
43. ॐ भूर्भुवःस्वः भरद्वाजाय स्वाहा ।
44. ॐ भूर्भुवःस्वः विश्वामित्राय स्वाहा ।
45. ॐ भूर्भुवःस्वः कश्यपाय स्वाहा ।
46. ॐ भूर्भुवःस्वः जमदग्नये स्वाहा ।
47. ॐ भूर्भुवःस्वः वसिष्ठये स्वाहा ।
48. ॐ भूर्भुवःस्वः अत्रये स्वाहा ।
49. ॐ भूर्भुवःस्वः अरुन्धत्यै स्वाहा ।
50. ॐ भूर्भुवःस्वः ऐन्द्र्यै स्वाहा ।
51. ॐ भूर्भुवःस्वः कौमार्यै स्वाहा ।
52. ॐ भूर्भुवःस्वः ब्राह्म्यै स्वाहा ।
53. ॐ भूर्भुवःस्वः वाराह्यै स्वाहा ।
54. ॐभूर्भुवःस्वः चामुण्डायै स्वाहा ।
55. ॐ भूर्भुवःस्वः वैष्णव्यै स्वाहा ।
56. ॐ भूर्भुवःस्वः माहेश्वर्यै स्वाहा ।
57. ॐ भूर्भुवःस्वः वैनायक्यै स्वाहा ॥

अनेन होमेन सर्वतोभद्रमण्डपस्थब्रह्मादिसप्तपञ्चाशत्देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।

2.16-2 अथवा एकलिंगतोभद्रदेवतानां होममन्त्राः

01. ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वानां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिनऽआव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमः।। ॐ भूर्भुवःस्वः असिताङ्गभैरवाय स्वाहा।।

02. ॐ शिवत्रऽआदित्यानामुष्ट्रो घृणीवान् वार्ध्रीनसस्ते मत्याऽअरण्याय सृमरो रुरू रौद्रः क्वयिः कुटरुर्दात्यौहस्ते वाजिनां कामाय पिकः।। ॐ भूर्भुवःस्वः रुरुभैरवाय स्वाहा ।।

03. ॐ उग्रँल्लोहितेन मित्रꣳसौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यꣳरुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्।। ॐ भूर्भुवःस्वः चण्डभैरवाय स्वाहा ।।

04. ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यन्दिशाञ्जत्रवोऽअदित्यै भसज्जीमूता हृदयौपशेनान्तरिक्ष पुरीतता नभऽउदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यान्दिवं वृकाभ्याङ्गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीहान् वल्मीकान् क्लोमभिग्लौभिर्गुल्मान् हिराभिः स्रवन्नतीर्ह्रदान् कुक्षिभ्याꣳसमुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना।। ॐ भूर्भुवःस्वः क्रोधभैरवाय स्वाहा।।

05. ॐ उन्नतऽऋषभो वामनस्तऽऐन्द्रावैष्णवाऽउन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठास्तऽऐन्द्राबार्हस्पत्याः शुकरूपा वाजिनाः कल्माषाऽआग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः।। ॐ भूर्भुवःस्वः उन्मत्तभैरवाय स्वाहा ।।

06. ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽउन्नयामि। समापोऽअद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधीः।।
ॐ भूर्भुवःस्वः कपालभैरवाय स्वाहा।।

07. ॐ उग्रश्च भीमश्च द्ध्वान्तश्च धुनिश्च। सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा।। ॐ भूर्भुवःस्वः भीषणभैरवाय स्वाहा।।

08. ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः। शिवाय च शिवतराय च।। ॐ भूर्भुवःस्वः संहारभैरवाय स्वाहा।।

09. ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरान्निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः।। ॐ भूर्भुवःस्वः अनन्ताय स्वाहा।।

10. ॐ देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे। निहारञ्च हराणि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा।। ॐ भूर्भुवःस्वः वासुकये स्वाहा।।

11. ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः।। ॐ भूर्भुवःस्वः तक्षकाय स्वाहा।।

12. ॐ पुरुषमृगश्चन्द्रमसोद गोधा कालका दार्वाघाटस्ते वनस्पतीनां कृकवाकुः सावित्रो हꣳसो वातस्य नाक्रो मकरः कुलीपयस्तेऽकूपारस्य ह्रियै शल्ल्यकः।। ॐ भूर्भुवः स्वः कुलिशाय स्वाहा।।

13. ॐ सोमाय कुलङ्गऽआरण्योऽजो नकुलः शका ते पौष्णाः क्रोष्टा मायोरिन्द्रस्य गौरमृगः पिद्वो न्यङ्कुः कुक्कुटस्तेऽनुमस्यै प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः।। ॐ भूर्भुवःस्वः कर्कोटकाय स्वाहा।।

14. ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पांचजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम्। उपयाम गृहीतोऽस्यग्नये त्वा वर्चसऽएष ते योनिरग्नये त्वा वर्चसे।। ॐ भूर्भुवः स्वः शंखपालाय स्वाहा।।

15. ॐ सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिणऽऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति। अश्विना यज्ञꣳसविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणोऽभिषज्यन्।। ॐ भूर्भुवःस्वः कम्बलाय स्वाहा।।

16. ॐ अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीवऽआग्नेयो रराटे पुरस्तात्सारस्वती मेष्यधस्ताद् धन्वोराश्विनावधोरामौ बाह्वोः सौमापौष्णः श्यामो नाभ्याꣳसौर्यामौ श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थ्यौ सक्थ्योर्वायव्यः श्वेतः पुच्छऽइन्द्राय स्वपस्याय वेहद्वैष्णवो वामनः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः अश्वतराय स्वाहा।।

17. ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शिति कण्ठाय च।। ॐ भूर्भुवःस्वः शूलिने स्वाहा।।

18. ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

ॐ भूर्भुवःस्वः चन्द्रमौलिने स्वाहा।।

19. ॐ आशुः शिशानो वृषभोन भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनो निमिषऽएकवीरः शतꣳ सेनाऽजयत्साकमिन्द्रः।। ॐ भूर्भुवःस्वः वृषभध्वजाय स्वाहा।।

20. ॐ सुगावो देवाः सदनाऽअकर्मयऽआजग्मेदꣳसवनं जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवीꣳष्यस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा।। ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिलोचनाय स्वाहा।।

21. ॐ रुद्राः सꣳसृज्य पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे। तेषां भानुरजस्रऽइच्छुक्रो देवेषु रोचते।।

ॐ भूर्भुवःस्वः शक्तिधराय स्वाहा।।

22. ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः महेश्वराय स्वाहा।।

23. ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः शूलपाणये स्वाहा।।23।।

24. ॐ चन्द्रमाऽप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि। रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहꣳहरिरेति कनिक्रदत्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः महादेवाय स्वाहा।।

25. ॐ भूर्भुवःस्वः परिधये स्वाहा।।

26. ॐ भूर्भुवःस्वः चतुष्पुरिभ्यो स्वाहा।।

27. ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः ऋग्वेदाय स्वाहा।।

28. ॐ इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्थयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागम्प्रजावतीर-नमीवाऽयक्ष्मामावस्तेन ईशत माघ सꣳसोद्ध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौ स्यात् बह्वीर्यजमानस्य पशून्याहि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः यजुर्वेदाय स्वाहा।।

29. ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्य दातये। निहोता सत्सि बर्हिषि।। ॐ भूर्भुवःस्वः सामवेदाय स्वाहा।।

30. ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः। ॐ भूर्भुवः स्वः अथर्ववेदाय स्वाहा।।

31. ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च। ॐ भूर्भुवःस्वः भवसहितभवान्यै स्वाहा।।

32. ॐ अग्निꣳहृदयेनाशनिꣳहृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं यक्ना। शर्वं मतस्नभ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्रं देवं वनिष्टुना वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम्। ॐ भूर्भुवःस्वः शर्वसहितशर्वाण्यै स्वाहा।।

33. ॐ उग्रँल्लोहितेन मित्रꣳसौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यꣳ- रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्।। ॐ भूर्भुवः स्वः पशुपतिसहितपाशुपत्यै स्वाहा।।

34. ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियश्न्विमसे हूमहे वयम्।पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये।। ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानसहितेशान्यै स्वाहा।।

35. ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च। सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा।। ॐ भूर्भुवःस्वः उग्रसहितोग्रायै स्वाहा।।

36. ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो तऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः रुद्रसहितरुद्राण्यै स्वाहा।।

37. ॐ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णन्तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।। ॐ भूर्भुवःस्वः भीमसहितभीमायै स्वाहा।।

38. ॐ मानो महान्तमुत मानोऽअर्भकं मानऽउक्षन्तमुत मानऽउक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः। ॐ भूर्भुवःस्वः महत्सहितमहत्यै स्वाहा।।

अनेन होमेन एकलिंगतोभद्रमण्डलस्थासितांगभैरवाद्यष्टत्रिंशद्देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम।

2.17-1 **फलादीनां होमः** (फलीकरणहोमः) -हाथ में जल लेकर -

'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य..........शुभपुण्यतिथौ मया प्रारब्धस्य सग्रहमखदुर्गापूजनांगभूत सप्तशती होमाख्यकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थमाचारात्फलहोमं करिष्ये' जल छोड़ें।

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ द्राक्षा धारणकर सूर्य का ध्यान करें -

1. **ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।**

ॐ भूर्भुवःस्वः सूर्याय स्वाहा।

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ गन्ना धारण कर चन्द्रमा का ध्यान करें -

2. **ॐ इमं देवा असपत्नꣳसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳराजा।**

ॐ भूर्भुवःस्वः सोमाय स्वाहा।

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ सुपारी धारण कर मंगल का ध्यान करें -

3. ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पतिःपृथिव्या अयम्। अपाꣳरेताꣳसिजिन्वति।
ॐ भूर्भुवःस्वः भौमाय स्वाहा।

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ सन्तरा धारण कर बुध का ध्यान करें -

4. ॐ उदुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सꣳसृजेथामयं च। अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत। ॐ भूर्भुवःस्वः बुधाय स्वाहा।

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ नींबू धारण कर बृहस्पति का ध्यान करें -

5. ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद् द्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतः प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ बिजौरा नींबू धारण कर शुक्र का ध्यान करें -

6. ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ॐ भूर्भुवःस्वः शुक्राय स्वाहा।

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ उत्तति धारण कर शनि का ध्यान करें -

7. ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शय्योरभि स्रवन्तु नः। ॐ भूर्भुवःस्वः शनैश्चराय स्वाहा।

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ नारियल धारण कर राहु का ध्यान करें -

8. **ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठयावृत्ता । ॐ भूर्भुवःस्वः राहवे स्वाहा।**

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ अनार धारण कर केतु का ध्यान करें -

9. **ॐ केतु कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः । ॐ भूर्भुवःस्वः केतवे स्वाहा।**

10. गुग्गुलहोमः - हाथ में जल लेकर - '**अद्य** ' इत्यादि उच्चार्य '**मम गृहे भूतादिसमग्रदोषपरिहारार्थं त्र्यम्बकमिति मन्त्रेण गुग्गुलहोमहं करिष्ये**' जल छोड़ें और गुग्गुल से हवन करें-

'**ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। स्वाहा।**

11. सर्षपहोमः - हाथ में जल लेकर - '**अद्य** ' इत्यादि उच्चार्य

'**मम सर्वारिष्टशान्त्यर्थं शत्रुक्षयार्थं च जातवेदसे इत्यादि मन्त्रेण सर्षपहोमहं करिष्ये**'

जल छोड़ें और सरसों से हवन करें -

'**ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुन्दुरितात्यग्निः।।**

ॐ सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि। एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्। स्वाहा।

12. लक्ष्मीहोमः - हाथ में जल लेकर - '**अद्य .**' इत्यादि उच्चार्य '**मम गृहेऽअलक्ष्मीविनाशनार्थं दशविधलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं**

च लक्ष्मीहोमहं करिष्ये' जल छोड़ें और एक पात्र में धारित सीताफल, केला, अनार, दूध, घी, शहद, चीनी, दूर्वा, शमी, चावल और पान के पत्ता से हवन करें (ध्यान दें - बीच - बीच में स्वाहा शब्द सुनाई देने पर सामग्री को अग्नि में न ड़ालें, किन्तु अन्त में एक साथ एक बार में ही डालें) -

'ॐ सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिम्मे धामयाषिष्ठस्वाहा।।

याम्मेधान्देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।

मेधाम्मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा।।

इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम्। मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमान्तस्ये ते स्वाहा।।

मम गृहे लक्ष्मीः स्थिरा भवतु स्वाहा।।'

2.17-2 स्थापितदेवतानामुत्तरपूजनम् - हाथ में जल लेकर

'मया आरब्धस्य दुर्गापूजनसहितहवनाख्यकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं स्थापितादेवतानामुत्तरपूजामहं करिष्ये। जल छोड़ें ।

आग्नेयकोण में-

1. गणपति पूजन -

'ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसोमम।
आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणपतये नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।।

2. सर्वमातृका पूजन –

'ॐ समख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा। मामऽआयुः प्रमोषीर्मोऽअहन्तव वीरं विदेय तव देवि सन्दृशि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सगणेशगौर्याद्यावाहितसकलमातृकाभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।।

3. घृतमातृका पूजन –

'ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्क्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिघृतमातृकाभ्यो (वसोर्धारादेवताभ्यो) नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।।

नैर्ऋत्यकोण में वास्तुपुरुषपूजन –

'ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽनमीवो भवानः। यत्त्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मादिवास्तुमण्डलस्थदेवतासहिताय वास्तुपुरुषाय नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पुनः आग्नेयकोण में गौर्यादिमातृकाओं के दक्षिणभाग में योगिनी पूजन –

'ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे। सखायऽइन्द्रमूतये।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीमकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीसहिताभ्यो गजाननादिचतुःषष्टियोगिनीभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

वायव्यकोण में–

1. क्षेत्रपालपूजन –

'ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः क्षेत्रपालसहितेभ्योऽअजराद्येकोनपंचाशत्क्षेत्रपालदेवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

2. अग्नि पूजन – **'ॐ अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।**

युयोध्यस्माज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।

ॐ भूर्भुवःस्वः अग्नये नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

3. ब्रह्म पूजन –

'ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुद्ध्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः। ॐ भूर्भुवःस्वः कर्मसाक्षिणे ब्रह्मणे नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ईशानकोण में नवग्रह पूजन –

'ॐ ग्रहाऽऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्रापमतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वोहमिषमूर्जंᳯसमभागमुपयाम गृहीतोसीन्द्राय त्त्वा जुष्टं गृहाणाम्येष ते योनिरिन्द्रय त्त्वा जुष्टतमम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सूर्यादिनवग्रहमण्डलदेवेभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

मध्य में –

'ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुद्ध्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्चं योनिमसतश्च विवः।। ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डल/एकलिंगतोभद्रमण्डलस्थदेवतासमन्विताय सांगाय सपरिवाराय दुर्गादेव्यै नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणपत्यादिस्थापितदेवताभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणपत्यादिस्थापितदेवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणपत्यादिस्थापितदेवताभ्यो नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणपत्यादिस्थापितदेवताभ्यो नमः, गुखवासार्थे पूगीफलं तूम्बूलं च समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणपत्यादिस्थापितदेवताभ्यो नमः, यथाशक्ति प्रत्येकं महादक्षिणां समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणपत्यादिस्थापितदेवताभ्यो नमः, कर्पूरारार्तिक्यं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणपत्यादिस्थापितदेवताभ्यो नमः, मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणपत्यादिस्थापितदेवताभ्यो नमः, सफलं विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणपत्यादिस्थापितदेवाः प्रीयन्ताम् न मम।

2.18-1 अथ सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकवारुणहोमः

1. ॐ त्वन्नोऽग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः।
यजिष्ठोवह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।
इदमग्निवरुणाभ्याम् न मम।

2. ॐ सत्वन्नो अग्ने वमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसौ व्युष्ठौ।
अवयक्ष्वनो वरुणꣳरराणो वीहि मृडीकꣳसुहवो न एधि स्वाहा।
इदमग्निवरुणाभ्याम् न मम।

3. ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्च सत्त्वमित्त्वमया असि।
अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषजꣳस्वाहा।
इदमग्नये अयसे न मम।

4. ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशाः वितताः महान्तः।

तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ।
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।

5. ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मद् वाधमं विमध्यमꣳश्रथाय ।
अथा वयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ।
इदं वरुणाय न मम।

6. ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। (मनसा)

।। इति प्रायश्चित्त संज्ञकः होमः ।।

2.18-2 व्याहृतिहोमः

ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम।
ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।।
ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।

2.18-3 अथ (ब्रह्मणः) प्रायश्चित्त आहुतिः -

ब्रह्मा (अभाव में अन्य ऋत्विक्) हाथ में जल लेकर संकल्प करें - '**ॐ अस्मिन्दुर्गापूजनसहितग्रहमाखयुक्तकर्मणि प्रारम्भतः आसमाप्तिर्देशतः कालतः तन्त्रतो मन्त्रतश्च ज्ञानतोऽज्ञानतश्च तत्तत्कर्मणि प्रधानांगदेवतानां च विहित-**

समिधादिहवनीयद्रव्याणां न्यूनाधिकान्यथाकरणजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं होमद्रव्येषु कृमिकीटादिसम्भव जनितप्रत्यवाय परिहारार्थं बहिःसंचरतां कृमिकीटादीनामग्नौ पतनजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं होमप्रदानसमयेऽग्नौ स्वाहाकारोत्तराव्यवहिताहुतिप्रक्षेपाभावजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं प्रणीताग्न्योर्मध्ये गमनजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं कदाचित्परिस्तरणादीनां दाहजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं होमप्रदाने हवनीयद्रव्याणां कुण्डाद् बहिः पतनजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं होम प्रदाने तत्तद्देवतामन्त्राणामुच्चारणे ह्रस्वदीर्घप्लुतस्वरितोदात्तानुदात्तादीनां व्यत्ययोच्चारणजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं कृतस्य कर्मणः साद्गुण्यार्थं प्रायश्चित्तं होष्ये।'

जल छोड़ें, फिर जुहू में घी लेकर-

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

2.19 बलिदानम्

बलिदान कब करें?

देवीपुराण में कहा गया है - **'बलिदाने कृतेऽष्टम्यां पुत्रभंगो भवेन्नृप।'**

और कालिकापुराण में भी कहा है - **'अष्टम्यां बलिदानेन पुत्रनाशो भवेद् ध्रुवम्।'**

अर्थात् हे राजन्! अष्टमी तिथि में बलिदान करने पर निश्चित ही पुत्र का नाश होता है।

अतः कालिका पुराण के अनुसार -

'नवम्यां बलिदानं तु कर्तव्यं वै यथाविधि। जपं होमं च विधिवत् कुर्यात्तत्र विभूतये।।
नवम्यामपराह्णेन बलिदानं प्रशस्यते। दशमीं वर्जयेत्तत्र नात्र कार्या विचारणा।।'

अर्थात् ऐश्वर्य की प्राप्ति केलिये जप और पाठ का समापन कर नवमी तिथि को ही हवन करके यथाविधि बलिदान करना चाहिये। नवमी तिथि में भी दोपहर 12 बजे के बाद बलिदान करना श्रेष्ठ है। दशमी तिथि को तो बलिदान नहीं करना चाहिये, इस विषय में विचार करना ही नहीं चाहिये।

बलिदान में प्रतिनिधि द्रव्य – कालिका पुराण में बलिदान द्रव्य के विषय में कहा है –

'कूष्माण्डमिक्षुदण्डश्च मद्यं सारद्यमेव च। एते बलिसमाः प्रोक्तास्तृप्तौ छागसमाः सदा।।
अवश्यं विहितं यत्र मद्यं तत्र द्विजः पुनः। नारिकेलजलं कांस्ये ताम्रे वा विसृजेन्मधु।।'

तथा कुलचूडामणितन्त्र में भी कहा है –

'यत्रावश्यं विनिर्दिष्टं मदिरापानपूजनम्। ब्राह्मणाः ताम्रपात्रे च मधु मद्यं प्रकल्पयेत्।।'

अर्थात् कूष्माण्ड, गन्ना, शहद और जिमीकन्द–ये सब बकरे की बलि के समान कहे गये हैं और इनसे ही सभी देवी–देवताओं की तृप्ति कही गयी है तथा जिस कर्म में मदिरा दान करना आवश्यक कहा गया है वहां कांसे के पात्र में नारियल के पानी को अथवा तांबे के पात्र में शहद को समर्पित करे एवं इसी बात को कुलचूडामणितन्त्र में भी कहा है – जहां पूजन में मदिरा पान को अवश्य कहा गया है वहां ब्राह्मण ताम्र पात्र में शहद को डालकर अर्पित करें।

विधिः – यजमान हाथ में जल लेकर – '**मया प्रारब्धस्य सग्रहमखदुर्गापूजनाख्यकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं दशदिक्पालदेवतानां तथा चान्येषां स्थापितदेवतादीनां पूजनपूर्वकबलिदानं करिष्ये।**'

जल छोड़ें। दशदिक्पालदेवतानां बलिदानम् –

1. पूर्व में – '**ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवे हवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳस वोऽस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। इन्द्र सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। इन्द्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो इन्द्र दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम् न मम।।**

2. आग्नेय में – '**ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्।। अग्निं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। अग्नये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो अग्ने दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन अग्निः प्रीयताम् न मम।।**

3. दक्षिण में – '**ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।। यमं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। यमाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं**

सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो यम दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन यमः प्रीयताम् न मम।।

4. नैर्ऋत्य में – 'ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनाऽस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमसमादिच्छसातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।। निर्ऋतिं सांगां सपरिवारां सायुधां सशक्तिकाम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। निर्ऋतये सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो निर्ऋते दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्त्री क्षेमकर्त्री शान्तिकर्त्री पुष्टिकर्त्री तुष्टिकर्त्री निर्विघ्नकर्त्री कल्याणकर्त्री वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम् न मम।।

5. पश्चिम में– 'ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुशꣳस मानऽआयुः प्रमोषीः।। वरुणं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। वरुणाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो वरुण दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन वरुणः प्रीयताम् न मम।।

6. वायव्य में– 'ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायोऽअस्मिन्त्वसवने मादयस्व

यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। वायुं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। वायवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो वायो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन वायुः प्रीयताम् न मम।।

7. उत्तर में– 'ॐ वयꣳसोमवते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तं सचेमहि।। सोमं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। सोमाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो सोम दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन सोमः प्रीयताम् न मम।।

8. ईशान में– 'ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ईश्वरं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। ईश्वराय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो ईश्वर दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन ईश्वरः प्रीयताम् न मम।।

9. पूर्व और ईशान के मध्य में- '**ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्येभर हूतौ सजोषाः। यः शंसते स्तुवते धायिपज्रऽ इन्द्रज्येष्ठाऽअस्माँ2ऽअवन्तु देवाः।। ब्रह्माणं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। ब्रह्मणे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो ब्रह्मन् दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन ब्रह्मा प्रीयताम् न मम।।**

10. पश्चिम और निर्ऋति के मध्य में- '**ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरान्निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः।। अनन्तं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। अनन्ताय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो अनन्त दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन अनन्तः प्रीयताम् न मम।।**

अथवा दशदिक्पालदेवताओं केलिये एकतन्त्र से बलि दे सकते है -

'**ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे**

स्वाहा।। ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रादिदशदिक्पालान्सांगान्सपरिवारान्सायुधान्सशक्तिकान् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्य इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो इन्द्रादिदशदिक्पालाः दिशं रक्षत इमं बलिं गृह्णीत। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरुत। आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः कल्याणकर्तारः वरदा भवत। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन इन्द्रादिदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम् न मम।।'

स्थापितदेवतानां बलिदानम् -

1. आग्नेय में गणपति केलिये बलि – **'ॐ गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिं हवामहे निधीनान्त्वा निधि पतिं हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः गणपतिं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। गणपतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो गणपते दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन गणपतिः प्रीयताम् न मम।।**

2. उसके दक्षिण भाग में गणेशगौर्यादिषोडशमातृकाओं केलिये बलि –
'ॐ समख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा। मामऽआयुः प्रमोषीर्मोऽअहन्तव वीरं विदेय तव देवि सन्दृशि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशगौर्यादिमातृः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। गणेशगौर्यादिमातृभ्यः सांगाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो गणेशगौर्यादिमातरः दिशं रक्षता इमं बलिं गृह्णीत। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः निर्विघ्नकर्त्र्यः कल्याणकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन गणेशगौर्यादिमातरः प्रीयन्ताम् न मम।।

3. सप्मस्थलमातृकासहितश्र्यादिसप्तघृतमातृकाओं केलिये बलि –

'ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।। ॐ भूर्भुवःस्वः सप्तस्थलमातृकासहिताश्र्यादिसप्तघृतमातृकाः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। सप्तस्थलमातृकासहिताश्र्यादिसप्तघृतमातृकाभ्यः सांगाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो सप्तस्थलमातृकासहिता–श्र्यादिसप्तघृतमातृकाः दिशं रक्षत इमं बलिं गृह्णीत। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः निर्विघ्नकर्त्र्यः कल्याणकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन सप्तस्थलमातृकासहितश्र्यादि सप्तघृतमातृकाः प्रीयन्ताम् न मम।।

4 नैर्ऋत्य में वास्तोष्पति केलिये बलि –

'ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मादिवास्तुमण्डलदेवतासहितं वास्तुपुरुषं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। ब्रह्मादिवास्तुमण्डलदेवतासहिताय वास्तुपुरुषाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो ब्रह्मादिवास्तुमण्डलदेवतासहितवास्तुपुरुष दिशं रक्ष इमं बलिं गृहाण। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन ब्रह्मादिवास्तुमण्डलदेवतासहितः वास्तुपुरुषः प्रीयताम् न मम।।

5. आग्नेय में योगिनियों केलिये बलि –

'ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे। सखायऽइन्द्रमूतये।। ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहा-सरस्वतीसहिता गजाननादिचतुःषष्टियोगिनीः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीसहिताभ्यो गजाननादिचतुःषष्टियोगिनीभ्यः सांगाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो श्रीमहाकालीमहा-लक्ष्मीमहासरस्वतीसहिता गजाननादिचतुःषष्टियोगिन्यः दिशं रक्षत इमं बलिं गृह्णीत। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरुत। आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः निर्विघ्नकर्त्र्यः

कल्याणकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीसहिता गजाननादिचतुःषष्टियोगिन्यः प्रीयन्ताम् न मम।।

6. ईशान्य में नवग्रहों केलिये बलि (प्रत्येक के लिये अलग-अलग बलि दें)-

6-1. ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्। ॐ भूर्भुवःस्वः ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितसूर्यं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितसूर्याय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितसूर्य दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितसूर्यः प्रीयताम् न मम।।

6-2. ॐ इमं देवा असपत्नꣳसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳराजा। ॐ भूर्भुवःस्वः उमाग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितचन्द्रं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। उमाग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितचन्द्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं

समर्पयामि। भो उमाग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितचन्द्र दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन उमाग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितचन्द्रः प्रीयताम् न मम।।

6-3. ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पतिःपृथिव्या अयम् । अपाꣳरेताꣳसिजिन्वति । ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्दापरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितमंगलं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। स्कन्दापरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितमंगलाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो स्कन्दापरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितमंगल दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन स्कन्दापरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहितमंगलः प्रीयताम् न मम।।

6-4. ॐ उद्दुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्व मिष्टापूर्त्ते सꣳसृजेथा मयं च । अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत । ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णुपृथिवीरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितबुधं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। विष्णुपृथिवीरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितबुधाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो विष्णुपृथिवीरूपा-

धिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितबुध दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन विष्णुपृथिवीरूपाधि देवताप्रत्यधिदेवतासहितबुधः प्रीयताम् न मम।।

6-5. ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद् द्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतः प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितबृहस्पतिं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि।ब्रह्मविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितबृहस्पतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो ब्रह्माविष्णुरूपाधिदेवता प्रत्यधिदेवतासहितबृहस्पते दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन ब्रह्माविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितबृहस्पतिः प्रीयताम् न मम।।

6-6. ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रेन्द्राणीरूपाधिदेवताप्रत्यधि देवतासहितशुक्रं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। इन्द्रेन्द्राणीरूपाधि-देवताप्रत्यधि देवतासहितशुक्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो इन्द्रेन्द्राणीरूपाधि देवताप्रत्यधिदेवतासहितशुक्र दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता

वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन इन्द्रेन्द्राणी रूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितशुक्रः प्रीयताम् न मम।।

6-7. ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शय्योरभिस्रूवन्तु नः। ॐ भूर्भुवःस्वः यमप्रजापतिरूपाधिदेवता प्रत्यधिदेवतासहितशनिं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। यमप्रजा-पतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितशनये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितशने दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन यमप्रजापति रूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितशनिः प्रीयताम् न मम।।

6-8. ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठयावृता। ॐ भूर्भुवःस्वः कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधि देवतासहितराहुं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। कालसर्परूपाधि-देवताप्रत्यधि देवतासहितराहवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो कालसर्परूपाधि देवताप्रत्यधिदेवतासहितराहो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन यमसर्परूपाधि देवताप्रत्यधि देवतासहितराहुः प्रीयताम् न मम।।

6-9. ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः। ॐ भूर्भुवःस्वः चित्रगुप्तब्रह्मारूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितकेतुं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। चित्रगुप्तब्रह्मारूपाधिदेवताप्रत्यधि देवतासहितकेतवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो चित्रगुप्तब्रह्मारूपाधि देवताप्रत्यधिदेवतासहितकेतो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन चित्रगुप्तब्रह्मारूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितकेतुः प्रीयताम् न मम।। अथवा एकतन्त्र से नवग्रहों केलिये बलि – 'ॐ ग्रहाऽऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वोहमिषमूर्जंꣳसमग्रभमुपयाम गृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः सूर्यादिनवग्रहमण्डलस्थदेवतान् सांगान्सपरिवारान्सायुधान्सशक्तिकान् एभिर्गन्धाद्युपचारैर्युष्मानहं पूजयामि। सूर्यादिनवग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो सूर्यादिनवग्रहमण्डलस्थदेवाः दिशं रक्षत इमं बलिं गृह्णीत। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः कल्याणकर्तारः वरदा भवत। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन सूर्यादिनवग्रहमण्डलस्थदेवाः प्रीयन्ताम् न मम।।

7. पंचलोकपालों केलिये बलि –

1. ॐ गणानांत्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳहवामहे । वसोमम आहम जानि गर्मधमात्वम जासि गर्भधम्। ॐ भूर्भुवःस्वः गणपतिं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। गणपतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो गणपते दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन गणपतिः प्रीयताम् न मम।।

2. ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्। ॐ भूर्भुवःस्वः दुर्गां सांगां सपरिवारां सायुधां सशक्तिकाम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। दुर्गायै सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो दुर्गे दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्त्री क्षेमकर्त्री शान्तिकर्त्री पुष्टिकर्त्री तुष्टिकर्त्री निर्विघ्नकर्त्री कल्याणकर्त्री वरदा भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन दुर्गा प्रीयताम् न मम।।

3. ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पातः स्वस्तिभिः सदा नः। ॐ भूर्भुवःस्वः वायुं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं

पूजयामि। वायवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो वायो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन वायुः प्रीयताम् न मम।।

4. ॐ घृतं घृतपावानः पिवतवसाम्बसा पावानः पिवतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिशः आदिशो विदिशः उ-शो दिग्भ्यः स्वाहा । ॐ भूर्भुवःस्वः आकाशं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। आकाशाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो आकाश दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन आकाशः प्रीयताम् न मम।।

5. ॐ यावाङ्कशा मधुमत्यश्विना सुनृतावती । तया यज्ञम्मिमिक्षतम् । ॐ भूर्भुवःस्वः अश्विनौ सांगौ सपरिवारौ सायुधौ सशक्तिकौ एभिर्गन्धाद्युपचारैर्युवामहं पूजयामि। अश्विभ्यां सांगाभ्यां सपरिवाराभ्यां सायुधाभ्यां सशक्तिकाभ्यां इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो अश्विनौ दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्तारौ क्षेमकर्तारौ शान्तिकर्तारौ पुष्टिकर्तारौ

तुष्टिकर्तारौ निर्विघ्नकर्तारौ कल्याणकर्तारौ वरदौ भवतः। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन अश्विनौ प्रीयेताम् न मम।।

8. असंख्यातरुद्रों केलिये बलि– 'नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः।। ॐ भूर्भुवःस्वः रुद्रान् सांगान् सपरिवारान् सायुधान् सशक्तिकान् एभिर्गन्धाद्युपचारैर्युष्मानहं पूजयामि। रुद्रेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारायेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो रुद्राः दिशं रक्षध्वम् बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः कल्याणकर्तारः वरदा भवत। अनेन पूजनपूर्वककृत बलिदानेन रुद्राः प्रीयन्ताम् न मम।।

9. विष्णु केलिये बलि– 'इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा।। ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णुं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। विष्णवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो विष्णो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन विष्णुः प्रीयताम् न मम।।

10. वायव्य में क्षेत्रपाल केलिये बलि – 'ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्ने:। एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवा:।। ॐ भूर्भुवःस्वः क्षेत्रपालसहितानजराद्येकपंचाशत्क्षेत्रपालदेवतान्सांगान्सपरिवारान्सायुधान्सशक्तिकान् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। क्षेत्रपालसहितेभ्योऽजराद्येकपंचाशत्क्षेत्रपालदेवताभ्यो सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो क्षेत्रपालसहिता अजराद्येकोनपंचाशत्क्षेत्रपाल देवता दिशं रक्षत इमं बलिं गृह्णीत। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः कल्याणकर्तारः वरदा भवत। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन क्षेत्रपालसहिताऽअजराद्येकपंचाशत्क्षेत्रपालदेवताः प्रीयन्ताम् न मम।।

11. सपरिवार मध्यपीठस्थप्रधानदेवता केलिये बलि – 'ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सुबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मादिसर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवतासमन्वितां / गौरीतिलकमण्डलस्थदेवतासमन्वितां पीठयन्त्रावरणदेवतासहितां दुर्गां सांगां सपरिवारां सायुधां सशक्तिकाम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। ब्रह्मादिसर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवतासमन्वितायै / गौरीतिलकमण्डलस्थदेवतासमन्वितायै पीठयन्त्रावरणदेवतासहितायै दुर्गायै सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै नमः इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो ब्रह्मादिसर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवतासमन्विते/

गौरीतिलकमण्डलस्थदेवतासमन्विते पीठयन्त्रावरणदेवतासहिते दुर्गे दिशं रक्ष इमं बलिं गृहाण। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्त्री क्षेमकर्त्री शान्तिकर्त्री पुष्टिकर्त्री तुष्टिकर्त्री निर्विघ्नकर्त्री कल्याणकर्त्री वरदा भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन ब्रह्मादिसर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवतासमन्विता / गौरीतिलकमण्डलस्थदेवतासमन्विता पीठयन्त्रावरणदेवतासहिता दुर्गा प्रीयताम् न मम।।

12. महाक्षेत्रपाल केलिये बलि (एक बांस की टोकरे में यथाशक्ति संपूर्ण बलि को रखके मध्य में चार मुंहवाला एक बड़ा दीपक प्रज्वलित कर मण्डप के बाहर बलि दें, पहले हाथ में जल लेकर) -

'ॐ मया प्रारब्धस्य सग्रहमखदुर्गापूजनाख्यकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं भूतप्रेतपिशाचडाकिनीसमन्वितस्य सपरिवारस्य क्षेत्रपालस्य बलिदानं करिष्ये। जल छोड़ें, गन्धाक्षपुष्पादि से बलिपात्र में ही पूजन करें–

'ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भूतप्रेतपिशाचडाकिन्यादिसमन्वितं महाक्षेत्रपालं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। भूतप्रेतपिशाचडाकिन्यादिसमन्विताय महाक्षेत्रपालाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो महाक्षेत्रपाल दिशं रक्ष इमं बलिं गृहाण। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव।'

प्रार्थना करें –

'नमामि क्षेत्रपाल त्वां भूतप्रेतगणावृत। पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा।।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि त्वं सर्वदा मम। मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः।।

सर्वदा सर्वकार्येषु क्षेत्रपालसमन्विताः। सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः।।'

पुनः हाथ में जल लेकर **'अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन भूतप्रेतपिशाचडाकिन्यादिसमन्वितः महाक्षेत्रपालः प्रीयताम् न मम।।'** जल छोड़े। तत्पश्चात् बिना पीछे मुड़कर देखे चलने का निर्देश देकर दुर्ब्राह्मण/नाई/किसी अन्य शूद्र पुरुष द्वारा चौराहे पर रखवायें। ले जाते उस पुरुष के पीछे अपने द्वार पर्यन्त जल छिड़कते जायें व अन्त में यजमान पर भी छिड़कें–

'ॐ हिंकाराय स्वाहा हिंकृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहावक्रन्दाय स्वहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमानाय स्वाहा विवृत्ताय स्वाहा सᳬहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा।।'

मयाकारितस्य सग्रहमखदुर्गापूजनाख्यकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं मानसोत्कल्पितदक्षिणां आचार्यप्रभृतिसर्वेषां ब्राह्मणानां नानागोत्रकाणां यथा यथा विभज्य दातुमहं उत्सृजे।

सपत्नीक यजमान हाथ पैर धोकर पुनः मण्डप / यज्ञस्थल लौटें, आचमन प्राणायाम करें।

2.20-1 पूर्णाहुति मन्त्राः - हाथ में जल लेकर - '**ॐ मया प्रारब्धस्य सग्रहमखदुर्गापूजनाख्यकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं वसोर्धारासमन्वितं पूर्णाहुतिहोमं करिष्ये।**' जल छोड़ें । आचार्य / विप्र उठकर आज्यस्थाली में शेष घी को भरें और आज्यस्थाली को अग्नि पर (अधिश्रयणं) गरम करें। उसके बाद एकसाथ स्रुक् और स्रुवा को ग्रहण कर पहले जैसे अधोमुख कर तपायें व सम्मार्जन कुशाओं से पूर्ववत् संस्कार कर पश्चिम दिशा में रखें। तदनन्तर आज्यस्थाली को उठाकर पवित्रियों / हथेली से उत्पवन करके आज्य आवेक्षण करें। अपद्रव्य को हटायें यदि है तो। प्रणीता पात्र में पवित्री को रखें। उसके बाद स्रुचि के मध्य में स्रुवा से चार बार घी डालें व उसके ऊपर मौली बांधें हुये नारियल को रखें तथा गन्धाक्षतपुष्पादि से उसकी पूजाकर हल्दी, कुंकुम, पुष्पमाला आदि से अलंकृत करें। अब उसके ऊपर स्रुवा को अधोमुख कर धारण करें और सपत्नीक यजमान बैठकर अथवा खड़े होकर -

'ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ2ऽउदारदुपाꣳशुना सममृतत्त्वमानट्।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवासनाममृतस्य नाभिः।।1।।
वयन्नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः।
उप ब्रह्मा श्रृणवच्छस्यमानं चतुः श्रृंगोऽअवमीद् गौरऽएतत्।।2।।
चत्वारि श्रृंगा त्रयोऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽअस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ2ऽआविवेश।।3।।

त्रिधा हितं पणिभिर्गृह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन्।
इन्द्रऽएकꣳसूर्यऽएकं जजान वेनादेकꣳस्वधया निष्टृतक्षुः।।4।।
एताऽअर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे।
घृतस्य धाराऽअभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्यऽआसीत्।।5।।
समरूक् स्रवन्ति सरितो न धेनाऽअन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः।
एतेऽअर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगाऽइव क्षिपणोरीषमाणाः।।6।।
सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धाराऽअरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानाः।।7।।
अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्य : स्मयमानासोऽअग्निम्।
घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्षति जातवेदाः।।8।।
कन्याऽइव वहतुमेतवाऽअंज्यंजानाऽअभिचाकशीमि।
यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धाराऽअभि तत्पवन्ते।।9।।
अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त।
इमं यज्ञन्नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते।।10।।

धामन्ते विश्वं भवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि।
अपामनीके समिथे यऽआभृतस्तमश्याम मधुमन्तन्तऽऊर्मिम्।।11।।
पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः।
घृतेन त्वन्तन्वं वर्द्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।12।।
मूर्द्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआजातमग्निम्।
कविꣳसम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवा।।13।।
पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्रा वसव समिन्धतां पुनर्वब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञै।
वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्ज्जꣳशतक्रतो स्वाहा।।14।।

ॐ अग्निश्च पृथिवी च सन्नते ते मे सन्नमतामदोवायुश्चान्तरिक्षञ्च सन्नते ते मे सन्नमतामदऽआदित्यश्च द्यौश्च सन्नते ते मे सन्नमतामदऽआपश्च्च वरुणश्च सन्नते ते मे सन्नमतामदः। सप्तसꣳसदोऽअष्टमीभूत साधनी। सकामाँ2ऽअध्वनस्क्कुरुसंज्ञानमस्तुमेमुना स्वाहा।।15।।

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नयेऽद्भ्यश्च न मम।। इति यजमानस्त्यजेत्।

2.20-2 वसोर्धारा होममन्त्राः - (प्रथम पक्ष के मन्त्रसमूह में 9 मन्त्र हैं)

'ॐ समास्त्वाग्नऽऋतवो वर्धयन्तु संवत्सराऽऋषयो यानि सत्या।
सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वाऽआभाहि प्रदिशश्चतस्रः।।1।।
सं चेध्यस्वाग्ने प्र च बोधयैनमुच्च तिष्ठ महते सौभगाय।
मा च रिषदुपसत्ता तेऽअग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये।।2।।
त्वामग्ने वृणुते ब्राह्मणाऽइमे शिवोऽअग्ने संवरणे भवानः।
सपत्नहा नोऽअभिमातिजिच्च स्वे गये जागृह्य प्रयच्छन्।।3।।
इहैवाग्रेऽअधि धारया रयिं मा त्वा निक्रन् पूर्वचितो निकारिणः।
क्षत्रमग्रे सुयममस्तु तुभ्यमुपसत्ता वर्धतां तेऽअनिष्टतः।।4।।
क्षत्रेणाग्रे स्वायुः सꣳरभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व।
सजातानां मध्यमस्थाऽएधि राज्ञामग्रे विहव्यो दीदिहीह।।5।।
अति निहोऽतिस्रिधोऽअत्यचितिमत्यरातिमग्ने।
विश्वा ह्यग्ने दुरिता सहस्वाथाऽस्मभ्यꣳसह वीराꣳरयिं दाः।।6।।

अनाधृष्यो जातवेदाऽअनिष्टतो विराडग्रे क्षत्रभृद् दीदिहीह।
विश्वाऽआशाः प्रमुंचन्मानुषीभिर्यः शिवेभिरद्य परिपाहि नो वृधे।।7।।
बृहस्पते सवितर्बोधयैनꣳसꣳशितं चित्सन्तराꣳसꣳशिशाधि।।
वर्धयैनं महते सौभगाय विश्वऽएनमनुमदन्तु देवाः।। 8।।
अमुत्र भूयादध वद्यमानस्य बृहस्पतेऽअभिशस्तेरमुंचः।
प्रत्यैहि तामश्विना मृत्युमस्माद् देवानामग्रे भिषजा शचीभिः।।9।।
अथवा (द्वितीय पक्ष के मन्त्रसमूह में 8 मन्त्र हैं)
'ॐ विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजाꣳसि।
योऽअस्कभायदुत्तरꣳसधस्थंविचक्रमाणस्त्रेधोरुगायोविष्णवे त्वा।।1।।
दिवो वा विष्णऽउत वा पृथिव्या महो वा विष्णऽउरोरन्तरिक्षात्।
उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वाप्रपच्छ दक्षिणादेत सव्याद्विष्णवे त्वा।।2।।
प्र तद्विष्णुस्तव ते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियनित भुवनानि विश्वा।।3।।
विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।4।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददे नार्यसीदमहꣳरक्षसाङ्ग्रीवाऽपि कृन्तामि। वहन्नसि बृहद्रवा बृहतीमिन्द्राय वाचं वद।।5।। आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे।।6।। सन्ते पयाꣳसि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः। आप्यायमानोऽअमृताय सोम दिवि श्रवाꣳस्युत्तमानि धिष्व।।7।। आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिरꣳशुभिः। भवां नः सप्रथस्तमः सखां वृधे।।8।।'

अथवा (तृतीय पक्ष के मन्त्रसमूह में 10 मन्त्र हैं)

'ॐ सप्त तेऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्तऽऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वाघृतेन स्वाहा।।1।। शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिमाँ2श्च। शुक्रश्चऽऋतपाश्चात्यꣳहाः।।2।। ईदृङ्चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिदृङ् च। मितश्च सम्मितश्च सभराः।।3।। ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च। धर्ता च विधर्ता च विधारयः।।4।। ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च। अन्तिमित्रश्च दूरेऽअमित्रश्च गणः।।5।। ईदृक्षासऽएतादृक्षासऽऊषुणः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षासऽएतन। मितासश्च सम्मितासो नोऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञेऽअस्मिन्।।6।। स्तवाँश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च। क्रीडी च शाकी चोज्जेषी।।7।। इन्द्रन्दैववीर्विशो मरुतोऽअभवन्यथेन्द्रन्दैवीर्विशो मरुतोऽअनुवर्त्मानोऽअभवन्। एवमिमं यजमानन्दैवीश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मनो भवन्तु।।8।। इमꣳस्तनमूर्जस्वन्तं घयापां प्रपीनमग्रे सरीरस्य मध्ये। उत्सं जुषस्व मधुमनतमर्वन्त्समुद्रियꣳसदनमाविशस्व।।9।। घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्बस्यधाम।

अनुष्वधामावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।।10।। (तीनों ही पक्ष के अन्त में कुछ विद्वानों के मत में रुद्री का चमक अध्याय, अग्निसूक्त, विष्णुसूक्त, शतरुद्री और इन्द्रसूक्त का पाठ किया जाता है।) किन्तु सभी के मत में इस मन्त्र का पाठ अन्त में अवश्य करना है –

'वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्य त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः। स्वाहा।। इदमग्नये वैश्वानराय न मम।।'

2.20–3 पूर्णपात्रदानं –

ब्रह्मा को पूर्णपात्र का दान करने प्रणीतोदक को हाथ में लेकर संकल्प करें –

'मया कृतस्य सग्रहमखदुर्गापूजनाख्यकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं ब्रह्मन् इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणकं तुभ्यमहं संप्रददे'

संकल्पजल, सदक्षिणा पूर्णपात्र को ग्रहण करने केलिये निवेदन कर उन्हें दें – **'प्रतिगृह्यताम्'**,

ब्रह्मा ग्रहण करते हुये कहें – **'प्रतिगृह्णामि, द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु'**। तदनन्तर ब्रह्मग्रन्थि को खोलें।

2.21–1 भस्म धारणम् –

हवनकुण्ड / स्थण्डिल के ईशान कोण से स्रुवा से भस्म को लेकर प्रथम अपने शरीर में फिर यजमान के शरीर के अंगों पर क्रमशः भस्म लेपन करें। ललाट पर – **'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः'**, गले में– **'कश्यपस्य त्र्यायुषम्'**, दाहिने बाहुमूल में–**'यद् देवेषु त्र्यायुषम्'**, हृदय पर – **'तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्'**, **'श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्। तेज आयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन।।**

2.21-2 संस्रवप्राशनादिकम् -

संस्रव प्राशन कर कुशपवित्रों से मार्जन करें। तदनन्तर अग्नि में पवित्रों का प्रक्षेप कर पवित्रप्रतिपत्ति कर्म करें।

2.21-3 प्रणीताविमोकादिः -

विप्र अग्नि के पश्चिम भाग में जाकर प्रणीता का विमोक करें और उपयमन कुशाओं से यजमान पर मार्जन करें-

'ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्'।

तत्पश्चात् उन उपयमनकुशाओं को अग्नि में प्रक्षेप करें।

2.22-1 अग्नेः प्रदक्षिणा -

'ॐ अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।1।।
यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।2।।

2.22-2 गोदानादिकम् -

आचार्य केलिये गोदान और प्रधानपीठादि का दान दें; ब्रह्मा केलिये बछड़ा, घोड़ा, रथ/पालकी का दान दें तथा अन्य ब्राह्मणों केलिये छायापात्र सहित यथाशक्ति वस्त्रादि सहित दक्षिणा दान दें।

2.23-1 श्रेयःसम्पादनम् -

अब वरण किये गये समस्त ब्राह्मणों सहित आचार्य उत्तराभिमुख बैठकर दाहिने हाथ में जल लेकर यजमान केलिये

श्रेय:संपादन का संकल्प करें –'**कृतस्य सग्रहमखदुर्गापूजनाख्यकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं तत्संपूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये**' और यजमान के दाहिने हाथ में जल दें – '**ॐ शिवाः आपः सन्तु**'। पुष्पादि को क्रमशः दें। सर्वप्रथम पुष्प – '**ॐ सौमनस्यमस्तु**', गन्ध – '**ॐ गन्धाः पान्तु**', अक्षत – '**ॐ अक्षताः पान्तु**'।
आचार्य यजमान के हाथ पर तीन बार जल घुमाकर जमीन पर छोड़ें –'**ॐ यत्पापंरोमशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु**'।

पुनः आचार्य अपने हाथ में जल गन्धाक्षतपुष्पफल ग्रहण कर –

'**भवन्नियोगेन मया एभिर्ब्राह्मणैः सह दुर्गापूजनाख्यकर्मणि यत्कृतमाचार्यत्वं यत्कृतं ब्रह्मत्वं गाणपत्यं सादस्यं तथा च एभिर्ब्राह्मणैः सह यः कृतो जपः पाठः होमश्च तत्तत्कर्मभ्यो यदुत्पन्नं श्रेयोः तत्तुभ्यं सम्प्रददे। तेन श्रेयसा त्वं श्रेयसी भव**'। कर्मारम्भ काल में वरणी के साथ दिये गये अक्षत और सुपारी सहित जलादि को आचार्य सहित सभी ब्राह्मण यजमान के हाथ में दें। यजमान स्वीकार करते हुये कहे –'**भवामि**'। जल पीकर शेष को रख लें।

2.23–2 अथ अभिषेकः –

विप्र एक पात्र में प्रधानकलश एवं अन्यकलशों के जल को मिलाकर दूर्वा, कुशा व पंचपल्लवों से सपरिवार यजमान को पूर्वाभिमुख बिठाकर निम्न मन्त्रों से अभिषेक करें – (सर्वप्रथम नवग्रह के मन्त्रों से –)

ॐ आकृष्णेन (सत्येन – कृष्णयजुर्वेद) **रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च।**
हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।। (– सूर्य)

ॐ आप्यायस्व स मे तु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यं। भवा वाजस्यसंगथे।।' (- चन्द्र)

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति।। (- मंगल)

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टा पूर्वे संसृजेथा मयञ्च।
अस्मिन्सधास्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।। (- शुक्लयजुर्वेद) अथवा (ऋग्वेद -)

ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रतिजागृह्य नमिष्ठा पूर्तेसंसृजे धाम यं च।
पुनः कृण्वंस्त्वा पितरं युवानमन्वातांसि त्वसि नत्नु मे तम्।। (- बुध)

ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हान्द्युमद्विभाति क्रतु मज्जनेषु।
यद्दीदयच्छ वस ऋत प्रजात तदस्मा सुद्रविणं धेहि चित्रम्।। (- गुरु)

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धसऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽअमृतम्मधु।।-(शुक्लयजुर्वेद) अथवा
(ऋग्वेद-) शुक्रन्तेऽअन्यद्यजतन्तेऽअन्यद्विषु रूपेऽहनि द्यौरिवासि।
विश्वा हि मायाऽवसि स्वधा वो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु। (- शुक्र)

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।। - (शुक्लयजुर्वेद) अथवा (ऋग्वेद) -

ॐ शमग्निरग्निभिस्करच्छन्नस्तपतु सूर्यः। शं वातो वा त्वरपा अपस्स्रिधः।। (- शनि)

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूति सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।। (- राहु)

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।। (-केतु)। (अब निम्न 13 वैदिक मन्त्रों से-)

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽअश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ।।1।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽअश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ।।2।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽअश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
अश्विनौ भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिंचामि सरस्वत्यै भेषज्येन
वीर्यायान्नाद्यायाभिषिंचामीन्द्रस्योन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽअभिषिंचामि।।3।।

शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि। राजा मे प्राणोऽअमृतꣳसम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम्।।4।।

जिह्वा मे भद्रं वाङ् महो मनो मन्युः स्वराड् भामः। मोदाः प्रमोदाऽअंगुलीरंगानि मित्रं मे सहः।।5।।

बाहू मे बलमिन्द्रियꣳहस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम।।6।।

पृष्ठीर्मे राष्ट्रमुदरमꣳसौ ग्रीवाश्च श्रोणी। ऊरूऽअरत्नी जानुनी विशो मेऽअंगानि सर्वतः।।7।।

नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽअपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः।

जंघाभ्यां घर्म्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः।।8।।

प्रति क्षत्रे प्रति तिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रति तिष्ठामि गोषु।

प्रत्यंगेषु प्रति तिष्ठाम्यात्मन् प्रति प्राणेषु प्रति तिष्ठामि पृष्ठे प्रति द्यावापृथिव्योः प्रति तिष्ठामि यज्ञे।।9।।

त्रयो देवाऽएकादश त्रयस्त्रिꣳशाः सुराधसः। बृहस्पति पुरोहिता देवस्य सवितुः सवे। देवा देवैरवन्तु मा।।10।।

प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीयाः सत्येन सत्यं यज्ञेन यज्ञो यजुर्भिर्यजूꣳषि सामभिः सामान्यृग्भिर्ऋचः पुरोऽनुवाक्याभिः पुरोऽअनुवाक्या याज्याभिर्याज्या वषट्कारैर्वषट्काराऽआहुतिभिराहुतयो मे कामान्समर्धयन्तु।।11।।

धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे।।12।।

त्वं यविष्ठ दाशुषो नृंःपाहि श्रृणुधीः गिरः। रक्षा तोकमुत्मना।।13।। (तदनन्तर वैदिक मार्जन मन्त्रों से -)

'ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवः।1। ॐ ता न ऊर्जे दधातन।2। ॐ महेरणाय चक्षसे।3। ॐ यो वः शिवतमो रसः।4। ॐ तस्य भ्राजयते हनः।5। ॐ उशतीरिव मातरः।6। ॐ तस्मा अरंगमाम वः।7। ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ।8। ॐ आपो जनयथा च नः।9।' (तत्पश्चात् वैदिक शान्त्यादि मन्त्रों से -)

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।

वनस्पतयः शातिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।1।।

यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।2।।

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।3।।
आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे।।4।।
पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽअभवत्सरित्।।5।।
विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्नऽआसुव।।6।। (पौराणिक मार्जनमन्त्रों से –)
सुरास्त्वामभिसिंचन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः। वासुदेवो जगन्नाथः तथा संकर्षणो विभुः।1।
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते। अखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा।2।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः। ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा।3।
कीर्तिलक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः। बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः।4।
एतास्त्वामभिसिंचन्तु देवपत्न्यैः समागताः। आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः।5।
ग्रहास्त्वामभिसिंचन्तु राहुकेतुश्च पूजिताः। देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः।6।
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च। देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्यश्चाप्सरसां गणाः।7।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च। सरितः सागराः शैलाः तीर्थानि जलदा नदाः।8।
एते त्वामभिसिंचन्तु सर्वकामार्थसिद्धये। सिद्धिर्भवतु ते देव यशो वीर्यं च सर्वदा।9।
अमृताभिषेकोऽस्तु। ॐ शन्तिः शान्तिः शान्तिः।।'

2.24-1 अवभृथस्नानं -

आचार्यादि ब्राह्मणों सहित यजमान नदी, तालाब आदि अथवा स्वगृह में यथासंभव प्रधान कलश के जल को बाल्टी आदि में गृहीत सामान्य जल में मिश्रण कर स्नान करे।

2.24-2 क्षमाप्रार्थना -

'पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसंभवः। त्राहि मां देवि चण्डेशि सर्वपापहरा भव।।1।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि।।2।।
यत्पूजितं मया देवि भक्तिश्रद्धाविवर्जितम्। तत्सर्वं प्रतिगृह्णन्तु दुर्गाद्याः सर्वदेवताः।।3।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि। यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।।4।।
जपच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं यज्ञकर्मणि। सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः।।5।।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम। तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वरि।।6।।
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मे मत्त्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।7।।

2.24-3 देवादिसहितदेवीविसजर्नम् -

'ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उप प्रयन्तु मरुतः सुदानवऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा।।1।।
यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा। एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा।।2।।

समुद्रं गच्छ स्वाहा अन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देवꣳसवितारं गच्छ स्वाहा मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाऽअहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दाꣳसि गच्छ स्वाहा द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाऽअग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा मनो मे हार्दि गच्छ स्वाहा दिवं ते धूमो गच्छतु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा।।3।।'

उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च। कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह।।1।।
दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते। यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।।2।।
पूजामिमां मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम्। रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तमम्।।3।।
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम्। इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।4।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वरि। यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन।।5।।
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।6।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।7।।
ॐ विष्णवे नमः।। ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः।'

2.24-4 यजमान के तिलक, रक्षाबन्धन व आशीर्वादः

अथ तिलकः –

'आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः। तिलकं ते प्रयच्छन्तु कामधर्मार्थसिद्धये।।

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते। धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।'

तिलक पर अक्षत लगायें –

'येऽक्षताः क्षतहन्तारो हन्तारोऽखिलवैरिणाम्। तांस्ते मूर्ध्नि प्रयच्छामि तेन ते शं सदा भवेत्।।'

अथ रक्षाबन्धनम् –

'ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳशतानीकाय सुमनस्य मानाः।
तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्।।'

अथ आशीर्वादः –

'ॐ पुनस्त्वा दित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः।
घृतेन त्वं तन्वं वर्द्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।1।।
दीर्घायुस्तऽओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्। अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्।।2।।
विवस्वन्नादित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिन्मत्स्व। श्रद्धस्मै नरो वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती वामश्नुतः।
पुमान्पुत्रो जायते विन्दते वस्वधा विश्वाहारपऽएधते गृहे।।3।।
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वास्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।4।।

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।5।।
शान्तिरस्तु शिवं चास्तु शुभं चास्तु धनं तथा।
ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु ब्राह्मणानां प्रसादतः।।6।।
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्।।7।।
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।8।।
आयुष्कामो यशस्कामो पुत्रपौत्रस्तथैव च। आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु ते।।9।।

2.24-5 यजमानपत्नी का रक्षाबन्धन व आशीर्वादः -

अथ रक्षाबन्धनम् -

'ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः।
नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।।'

अथ आशीर्वादः -

'ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्यऽआयुर्मे दाः पुत्रवती दक्षिणतऽइन्द्रस्याधिपत्ये प्रजां मे दाः सुषदा पश्चाद्

देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्मे दाऽआश्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्ये रायस्पोषं मे दाः।
विधृतिरुपरिष्टाद् बृहस्पतेराधिपत्यऽओजो मे दा विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्वासि।।1।।
यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे।
तावन्तमिन्द्र ते ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षितिं मयि गृह्णाम्यक्षितिम्।।2।।
श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकं मऽइषाण।।3।।'

2.25 ब्राह्मणभोजनम्।

।। इति होम विधिः।।

3. स्तुति प्रकरणम्

।। 3.1 गणेश जी की आरती ।।



जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।
लडुवन को भोग लगे, सन्त करें सेवा।। जय।।
एक दन्त दयावन्त, चार भुजाधारी।
माथे सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।। जय।।
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया।।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।। जय।।
पान चढ़ें, फूल चढ़े और चढ़ें मेवा।।
सूरश्याम शरण आये सुफल कीजे सेवा।। जय।।
दीनन की लाज राखो शम्भु-सुत वारी।।
कामना को पूरा करो जग बलिहारी।। जय।।

।। 3.2 देवी की आरती ।।

जगजननी जय! जय!! (मा! जगजननी जय! जय!!)

भयहारिणि, भवतारिणि भवभामिनि जय! जय!! जग.

तू ही सत्-चित् सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा । सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा ।। 1 ।। जग.

आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी । अमल अनन्त अगोचर अज आनन्दराशी ।।2 ।। जग.

अविकारी अघहारी, अकल, कलाधारी । कर्त्ता विधि, भर्त्ता हरि हर संहारकारी ।। 3 ।। जग.

तू विधिवधू, रमा तू, तू उमा, महामाया । मूलप्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया ।। 4 ।। जग.

राम, कृष्ण तू, सीता, व्रजरानी राधा । तू वांछा-कल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा ।। 5 ।। जग.

दश विद्या, नवदुर्गा, नाना शस्त्रकरा । अष्टमातृका, योगिनि, नव-नव रूप धरा ।। 6 ।। जग.

तू परमधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू । तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू ।। 7 ।। जग.

सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाऽऽधारा । विवसन विकट-स्वरुपा, प्रलयमयी धारा ।। 8 ।। जग.

तू ही स्नेहसुधामयि, तू अति गरलमना । रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना ।। 9 ।। जग.

मूलाधार-निवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे । कालातीता काली, कमला तू वरदे ।। 10 ।। जग.

शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी । भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदयत्री ।। 11 ।। जग.

हम अति दीनदुखी मा! विपत-जाल घेरे । हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे ।। 12 ।। जग.

निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै ।करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण दीजै ।। 13 ।। जग.

जगजननी जय! जय!! (मा! जगजननी जय! जय!)

भयहारिणि, भवतारिणि भवभामिनि जय! जय!! जग!!.

।। 3.3 अम्बे माँ की आरती ।।

ॐ जय अम्बे गौरी मैय्या जय श्यामागौरी मैय्या जय मंगलमूरति मैय्या जय आनंदकरणी मैय्या जय शत्रुदलनी मैय्या जय दुष्टनदलनी मैय्या जय संकटहरणी मैय्या जय ऋद्धिसिद्धि करनी।

ॐ जय अम्बे गौरी ।।

तुमको निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवजी ।।

माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमद को। मैय्या टीको मृगमद को

ॐ जय अम्बे गौरी ।।

उज्ज्वल से दोऊ नैना निर्मल से दोउ नैना चंद्रवदन नीकौ ।।

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै मैय्या रक्ताम्बर राजै ।

ॐ जय अम्बे गौरी ।।

रक्तपुष्प गलमाला कण्ठन पर साजै ।।

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ।

ॐ जय अम्बे गौरी ।।

सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःख हारी ।।

कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती मैय्या नासाग्रे मोती ।

ॐ जय अम्बे गौरी ।।

कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति ।।

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुरघाती मैय्या महिषासुर घाती।
धूम्रविलोचन नैना, निशिदिन मदमाती ।। ॐ जय अम्बे गौरी ।।
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे ।
मधु कैटभ दोऊ मारे, सुर भय हीन करे ।। ॐ जय अम्बे गौरी ।।
ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी
आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी ।। ॐ जय अम्बे गौरी ।।
चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरुँ ।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरु ।। ॐ जय अम्बे गौरी ।।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तन की दुःख हरता सुख सम्पति करता ।। ॐ जय अम्बे गौरी ।।
भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी ।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी ।। ॐ जय अम्बे गौरी ।।

कंचन थाल विराजत अगर कपूर वाती ।
श्रीमालकेतु में राजत धवलागढ़ में विराजत कोटिरतन ज्योति ।। ॐ जय अम्बे गौरी ।।
या अम्बे जी की आरती जो कोई जन गावे मैय्या प्रेम सहित गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी कहत हरिहर स्वामी मन वाच्छित फल पावे । ॐ जय अम्बे गौरी ।।
मैय्या जय श्यामागौरी मैय्या जय मंगलमूर्त्ति मैय्या जय आनंदकरणी
मैय्या जय शत्रुनदलनी मैय्या जय दुष्टनदलनी मैय्या जय संकटहरणी
मैय्या जय ऋद्धिसिद्धि करनी। ॐ जय अम्बे गौरी ।।

।। 3.4 लक्ष्मी जी की आरती।।

ॐ जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता । तुमको निशिदिन सेवत हर-विष्णु धाता ।। 1 ।। टेक

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता । सूर्य, चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।। 2 ।। टेक

दुर्गारुप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति-दाता । जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता ।। 3 ।। टेक

तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभ-दाता । कर्म-प्रभाव-प्रकासिनि, भवनिधि की त्राता ।। 4 ।। टेक

जिस घर तुम रहतीं, तहँ सब सद्गुण आता । सब संभव हो जाता, मन नहिं घबड़ाता ।। 5 ।। टेक

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता । खान-पान का वैभव सब तुमसे आता ।। 6 ।। टेक

शुभगुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता । रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ।। 7 ।। टेक

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई गाता । उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ।। 8 ।। टेक

।। 3.5 गंगा जी की आरती ।।

ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता ।
जो नर तुमको ध्याता, जो नर तुमको ध्याता । मनवांच्छित फल पाता, ॐ जय गंगे माता ।। 1 ।।
चन्द्र-सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता । शरण पड़े जो तेरी,
शरण पड़े जो तेरी । सो नर तर जाता, ॐ जय गंगे माता ।। 2 ।।
भवसागर से तारे, सब जग को ज्ञाता । करुणा दृष्टि तुम्हारी,
करुणा दृष्टि तुम्हारी । त्रिभुवन सुख-दाता, ॐ जय गंगे माता ।। 3 ।।
एक बार भी जो नर, तेरी शरणागत पाता । यम की त्रास मिटाकर,
यम की त्रास मिटाकर । परम सुगति पाता, ॐ जय गंगे माता ।। 4 ।।
आरती मातु तुम्हारी, जो जन नित गाता । जगत-जलधि का वही पार उतर पाता ।। 5 ।।

।। 3.6 शिव जी की आरती।।

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा । ब्रह्मा-विष्णु सदाशिव अर्द्धङ्गी धारा ।। 1 ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

एकानन चतुरानन पंचानन राजै । हंसासन गरुड़ासन बृषवाहन साजै ।। 2 ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै । तीनों रुप निरखते त्रिभुवन-जन मोहै ।। 3 ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

अक्षमाला बनमाला रुंडमाला धारी ।त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी ।। 4 ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे । सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे ।। 5 ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

कर मध्ये सुकमण्डल चक्र त्रिशूलधरता । जगकरता जगहरता जगपालन करता ।। 6 ।।ॐ हर हर हर महादेव ।।

ब्रह्मा-विष्णु सदाशिव जानत अविवेका । प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका ।। 7 ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

काशी में विश्वनाथ विराजै नन्दा बह्मचारी ।
नित उठ भोग लगावै नित उठ दर्शन पावै महिमा अति भारी ।। 8 ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

त्रिगुण स्वामि जी की आरती जो कोई गावै ।
कहत शिवानन्द स्वामी कहत हरिहर स्वामी। मन वांच्छित फल पावै ।। 9।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

।। 3.7-1 देव्यपराध-क्षमापन-स्तोत्रम् - 1।।

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो, न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुति-कथाः ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं, परं जाने मातस्त्वदनुशरणं क्लेशहरणम् ।। 1 ।।
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणाऽलसतया, विधेयाऽशक्यत्वात् तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।। 2 ।।
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः, परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।। 3 ।।
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता, न वा दत्तं देवि! द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथाऽपि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत् प्रकुरुषे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।। 4 ।।
परित्यक्ता देवा विविधविधि सेवाकुलतया, मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नाऽपि भविता, निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ।। 5 ।।
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा, निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटि-कनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं, जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ।। 6 ।।

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो, जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।
कपाली-भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं, भवानि त्वत्पाणि-ग्रहण-परिपाटी-फलमिदम् ।। 7 ।।
न मोक्षस्याऽऽकांक्षा भवविभववाञ्छाऽपि च न मे, न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छाऽपि न पुनः
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै, मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ।। 8 ।।
नाऽऽराधिताऽसि विधिना विविधोपचारैः, किं रुक्ष-चिन्तन-परैर्न कृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे, धत्से कृपामुचितमम्ब! परं तवैव ।। 9 ।।

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधा-तृषार्ता जननीं स्मरन्ति ।। 10 ।।
जगदम्ब! विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणाऽस्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम् ।। 11 ।।

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि । एवं ज्ञात्वा महादेवि! यथायोग्यं तथा कुरु ।। 12 ।।

।। इति देव्यपराध-क्षमापन-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

।। 3.7-2 देव्यपराधक्षमापनम् -2 ।।

अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया । दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि! ।। 1 ।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि! ।। 2 ।।
य-त्तं भक्तिमात्रेण पत्रं पुष्पं फलं जलम् । निवेदितं च नैवेद्यं तद् गृहाणाऽनुकम्पया ।। 3 ।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि। यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ।। 4 ।।
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् । यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ।। 5 ।।
अज्ञानाद् विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् । तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ।। 6 ।।
कामेश्वरि! जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे । गृहाण त्वं स्तुतिमिमां प्रसीद परमेश्वरि ।। 7 ।।
गतं पापं गत दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च । आगता सुखसम्पत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ।। 8 ।।
यदत्र पाठे जगदम्बिके मया विसर्गबिन्द्वक्षरहीनमीरितम्।
तदस्तु सम्पूर्णतमं प्रसादतः सङ्कल्प सिद्धिश्च सदैव जायताम् ।। 9 ।।
मोहादज्ञानतो वा पठितमपठितं साम्प्रतं ते स्तवेऽस्मिन् ।
तत्सर्वं साङ्गमास्तां भगवति वरदे287287 त्वत्प्रसादात् प्रसीद ।। 10 ।।
यस्याऽर्थं पठितं स्तोत्रं तवेदं शङ्करप्रिये । तस्य देहस्य गेहस्य शान्तिर्भवतु सर्वदा ।। 11 ।।

।। इति देव्यपराधक्षमापनं समाप्तम् ।।

।। 3.8 श्री शिवताण्डव स्तोत्रम् ।।

जटाटवीगलज्ज्वल प्रवाहपावितस्थले गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ।।
जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी विलोलवीचिवल्लरी विराजमानमूर्द्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ।।1।।
धराधरेन्द्रनन्दिनी विलासबन्धुबन्धुर स्फुरर्-गन्तसन्तति प्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणी निरुद्धदुर्धरापदि क्वचिर्-गम्बरे मनोविनोदमेतु वस्तुनि ।।
जटाभुजङ्गपिङ्गल स्फुरत्फणामणिप्रभा-कदम्बकुङ्कुमद्रव प्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनोविनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ।।2।।
सहस्त्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ।।
ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः ।।3।।

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल द्धनञ्जयाहुतीकृत प्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ।।
नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुर त्कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः ।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ।।4।।
प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ।।
अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ।।5।।
जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।
धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवःशिवः ।।
दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ।।6।।
कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन् विभुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन् ।

विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ।।
इमं हि नित्यमेवव्मुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम् ।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम् ।।7।।
पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ।।8।।

।। इति श्रीरावणकृतं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

सभी याग व हवन में प्रयुक्त सामान्य सामग्री सूची :-

क्र. सं.	यज्ञसामग्री	क्र. सं.	यज्ञसामग्री	क्र. सं.	यज्ञसामग्री
01	तिल	13	पेठा	25	आज्यस्थाली
02	चावल	14	कांसे या तांबे की थाली	26	चरुस्थाली
03	जौ	15	आंक	27	संड़ासी
04	शक्कर	16	ढ़ाक	28	करछी
05	घी	17	खैर	29	पूर्णपात्र
06	पंचमेवा	18	अपामार्ग	30	सरसों तेल
07	हवनसामग्री	19	पीपल	31	रुई
08	ईंट	20	गूलर	32	दोने
09	रेत	21	शमी	33	मौली
10	चौकी	22	दूर्वा	34	गिलोय
11	चौकी की कपड़ा	23	कुशा	35	बिल्वफल
12	नारियल केलिए लालवस्त्र	24	समिधायें	36	बिल्वपत्र

क्र. सं.	यज्ञसामग्री	क्र. सं.	यज्ञसामग्री	क्र. सं.	यज्ञसामग्री
37	सिन्दूर	42	फूल	47	गुलाल
38	उड़द	43	फूलमाला	48	कपूर
39	दही	44	नारियल	49	गोला
40	दूध	45	आटा	50	माचिस
41	छोटे दीपक	46	हल्दी		

श्रीदुर्गासप्तशतीहोम में प्रयुक्त विशेष सामग्री सूची :-

क्र. सं.	यज्ञसामग्री	क्र. सं.	यज्ञसामग्री	क्र. सं.	यज्ञसामग्री
01	तिल	07	अगर	13	हवन सामग्री
02	जौं	08	तगर	14	बेलगिरी
03	चावल	09	कमल गट्टे	15	लौंग
04	बूरा	10	पीली सरसों	16	इलायची छोटी
05	गुग्गूल	11	राई	17	कपूर
06	जटामांसी	12	काली मिर्च	18	देशी घी

क्र. सं.	यज्ञसामग्री	क्र. सं.	यज्ञसामग्री	क्र. सं.	यज्ञसामग्री
19	केशर	33	पुष्प	47	हरताल
20	भाँग के पत्ते	34	जायफल	48	दर्भ
21	शहद	35	अपामार्ग	49	कटहल
22	श्वेत चन्दन चूरा	36	कुशा	50	कागजी नींबू
23	लाल चन्दन चूरा	37	दूर्वा	51	बिजौरा नींबू
24	पेठा साबुत	38	पीपलपत्ता	52	खिरनी (फैन्नी)
25	अभ्रक	39	लाल कनेर	53	काली करौंजी
26	आम की लकड़ी	40	कमलफूल	54	आभूषण
27	ईटें	41	सहदेवी	55	सुगन्धीद्रव्य
28	रेत	42	आंवला	56	ब्राह्मी
29	चौकी 2x2	43	विष्णुक्रान्ता	57	कद्दू
30	समुद्री झाग	44	केला	58	दारुहल्दी
31	लाजा (खील)	45	नीमगिलोय	59	कालीहल्दी
32	अर्क (आंक)	46	जटामांसी	60	गुलाबजल

क्र. सं.	यज्ञसामग्री	क्र. सं.	यज्ञसामग्री	क्र. सं.	यज्ञसामग्री
61	दालचीनी	75	अशोक पंचांग	89	आम का पत्ता
62	हिंगुल	76	चीनी	90	हरताल
63	सुरमा	77	इलायची बड़ी	91	दही
64	वज्रदन्ती	78	सालमपंजा	92	सिंघाड़ा
65	पापड़	79	मिश्री	93	गुलाल
66	धनुष बाण	80	उड़द	94	सुपारी
67	वट का पत्ता	81	कमलफूल	95	जावित्री
68	अंजीर	82	सिराली	96	शमी
69	मेहन्दी	83	लालगुंजा	97	वच=बच
70	गुडुची	84	कालागुंजा	98	काली मूसली
71	पलाश (ढ़ाक)	85	सफेदगुंजा	99	सफेद मूसली
72	नागकेसर	86	मक्खन	100	खदिर (खैर)
73	सर्वौषधी	87	विष्णुक्रान्ता	101	शिलाजित
74	अनार के छिलके	88	आमफल	102	गोरोचन

क्र. सं.	यज्ञसामग्री	क्र. सं.	यज्ञसामग्री	क्र. सं.	यज्ञसामग्री
103	मैनशिल	118	गुलकन्द	133	आकाशबेल
104	हल्दी गांठ	119	भोजपत्र	134	मालकांगनी
105	लालकनेर	120	शतावरी	135	छोटे शंख
106	गोखरू	121	सोंठ गांठ	136	शिवलिंगी
107	शंखपुष्पी	122	ठण्डाई	137	बहेड़ा
108	लौकी	123	अभ्रक	138	अमरबेल
109	जिमिकन्द	124	खस	139	धूप
110	सिंघाड़ा	125	पानपत्ता	140	मंजीठा
111	पालक	126	इन्द्रजौं	141	पपीता
112	सोया	127	मसूर	142	सेबफल
113	गन्ना	128	माचिस	143	अनानास
114	हलुवा	129	मैनाफल	144	अनार पंचांग
115	मालपुए	130	सरला	145	सन्तरा
116	खीर	131	काली सरसों	146	सरीफा
117	पंचमेवा	132	मोरपंख	147	मावा

क्षेत्रपाल बलि हेतु सामान्य सामग्री सूची :-

क्र. सं.	बली हेतु सामग्री	क्र. सं.	बली हेतु सामग्री
1	बाँस की टोकरी	8	लोहे की कीलें
2	हनुमानी सिंदूर	9	नींबू
3	चाँदी के वर्क	10	चावल
4	चमेली का तेल	11	उडद साबुत
5	चौमुखा दीपक एक	12	इत्र
6	पापड़	13	उड़द खिचड़ी
7	मिठाई	14	फूलमाला

क्र.सं.	स्वा. शान्तिधर्मानन्द सरस्वतीजी के डी वि डी	मूल्य
1.	लघुसिद्धान्तकौमुदी, अर्थसंग्रह, सांख्यकारिका, तर्कसंग्रह।	25
2.	वेदान्तपरिभाषा, योगसूत्र, मानमेयोदय, मानमनोहर, तर्कभाषा, शिवसूत्र।	25
3.	ब्रह्मसूत्रं, 1 भगवद्गीता 1-8।	25
4.	1 भगवद्गीता 9-10, 1 ईश से छान्दोग्य 1-5।	25
5.	1 छान्दोग्य 6-8 व बृहदारण्यक, 2 भगवद्गीता 1-6।	25
6.	2 भगवद्गीता 7-18, 2 ईश से मुण्डक तक।	25
7.	2 माण्डूक्य से ऐतरेय तक व अंग्रेजी में छान्दोग्य व बृहदारण्यक 1-5 तक।	25

क्र.सं.	स्वा. शान्तिधर्मानन्द सरस्वतीजी के डी वि डी	मूल्य
8.	श्रीमद्भागवतम् 1-23।	25
9.	श्रीमद्भागवतम् 24-34, भागवतकथा- शान्तिधर्मानन्दजी, ठाकुरजी, काशिकानन्दजी, रामानंदजी व विश्वात्मानंदजी।	25
10.	भागवतकथा-पराशरजी, पंचदशी, सिद्धान्तबिन्दु व शिवदृष्टिः 1-7।	25
11.	शिवदृष्टिः- 8, प्रवचनसंग्रहः, उपदेशसाहस्री, त्रिपुरोपनिषद्, षड्दर्शनसूत्रपाठः, सिद्धान्तकौमुदी 1-4।	25
12.	सिद्धान्तकौमुदी 5-10, चित्सुखी 1-6, न्यायसिद्धान्तमुक्तावली 1-2, व्याकरण महाभाष्यं 1-6	25

क्र.सं.	स्वा. शान्तिधर्मानन्द सरस्वतीजी के डी वि डी	मूल्य
1.	लघुसिद्धान्तकौमुदी, अर्थसंग्रह, सांख्यकारिका, तर्कसंग्रह।	25
2.	वेदान्तपरिभाषा, योगसूत्र, मानमेयोदय, मानमनोहर, तर्कभाषा, शिवसूत्र।	25
3.	ब्रह्मसूत्रं, 1 भगवद्गीता 1-8।	25
4.	1 भगवद्गीता 9-10, 1 ईश से छान्दोग्य 1-5।	25
5.	1 छान्दोग्य 6-8 व बृहदारण्यक, 2 भगवद्गीता 1-6।	25
6.	2 भगवद्गीता 7-18, 2 ईश से मुण्डक तक।	25
7.	2 माण्डूक्य से ऐतरेय तक व अंग्रेजी में छान्दोग्य व बृहदारण्यक 1-5 तक।	25

क्र.सं.	स्वा. शान्तिधर्मानन्द सरस्वतीजी के डी वि डी	मूल्य
8.	श्रीमद्भागवतम् 1-23।	25
9.	श्रीमद्भागवतम् 24-34, भागवतकथा- शान्तिधर्मानन्दजी, ठाकुरजी, काशिकानन्दजी, रामानंदजी व विश्वात्मानंदजी।	25
10.	भागवतकथा-पराशरजी, पंचदशी, सिद्धान्तबिन्दु व शिवदृष्टि: 1-7।	25
11.	शिवदृष्टि:- 8, प्रवचनसंग्रह:, उपदेशसाहस्री, त्रिपुरोपनिषद्, षड्दर्शनसूत्रपाठ:, सिद्धान्तकौमुदी 1-4।	25
12.	सिद्धान्तकौमुदी 5-10, चित्सुखी 1-6, न्यायसिद्धान्तमुक्तावली 1-2, व्याकरण महाभाष्यं 1-6	25





सत्यं साधना कुटीर,
कैलासगेट, पो0 कैलास गेट, मुनि की रेती, तह: ऋषीकेश, जिला: टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड. 249137
चलदूरभाष् : 9557130251, ई पत्र : swdsr@gmail.com, बेवासाइड : www.satyamsadhana.org